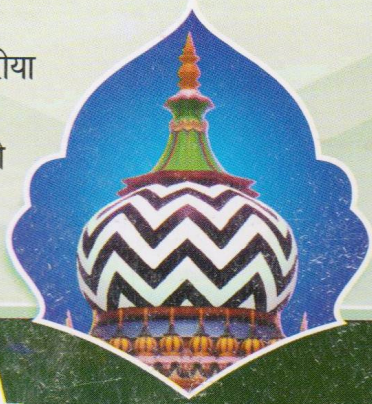


रुकीहे स्लाम, जानशेने मुफ्ती आजम हिन्द ताजुशरीया
हजरत अल्लामा अल्हाज अल्शाह
मुफ्ती मोहम्मद अख्तर रज़ा खां कादरी
अज़हरी के हालाते ज़िंदगी पर मुशतमिल



ला जवाब किताब

हयाते ताजुशरीया

जदीद
इज़ाफ़ा

मुसन्नीफ़

मौलाना मोहम्मद रहबुद्दीन रज़वी

प्रकाशक

स्लामिक रिसर्च सेन्टर

58, कसगिरान, सौदागिरान, बरेली शरीफ यू०पी०

तकसीमुकार: **ग़रीब नवाज़ अक़ेडमी**, आनंद विहार, देहली रोड, बरेली शरीफ

Mobile: 9927506409, 9837207863, 9868436228

हालाते ज़िन्दगी जानशीन-ए-हुजूर मुफ्ती आजम
ताजुशरीआ हजरत अल्लामा
मुफ्ती अख्तर रजा खॉ अजहरी
दामत बरकातोहुमुलआलिया

हायात ताजुशरीआ

मुसन्निफ
मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

کتاب کی تصنیف و تالیف

ناشر

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर

58-कसगरान,सौदागरान बरेली शरीफ

जुमला हुकूक बहक्के नाशिर महफूज हैं

नाम किताब : हयात ताजुशरीआ (अल्लाम अखतर रज़ा ख़ाँ अज़हरी)

मुसन्निफ : मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दी रजवी

तर्जमा व कोम्पोज़िंग : मौलाना मुहम्मद शफीकुल हक रजवी

मुबाइल न.9997662550

तहरीक : मौलाना आलहाज मुहम्मद सईद नूरी, रज़ा एकेडमी मुम्बई

बएहतिमाम : हाफिज़ गुलाम मुहयुद्दीन रजवी हश्मती

साले इशाअत : अक्वल फरवरी 2008 / सफरुलमुजफ्फर 1429 हिजरी

इशाअत दोम : दिसम्बर 2013 सफरुलमुजफ्फर 1434 हिजरी

नाशिर : अब्दुल इफ़ीज़ नूरी, हाफिज़ आमिर रज़ा कादरी

सफ़हात 232

कीमत : 130 / रुपये

मिलने का पता

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर

58-कसगरान, सौदाशिन बरेली शरीफ यूपी

E-mail: mrazvi.razvi@gmail.com

www.alahazratbooks.com

Mob: 09897385339, 08923721109

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर्फ़ आगाज़

काम वह ले लीजिये तुम को जो राजी करे

ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोड़ो दुरुद

राकिमुस्सुतूर को पीरे तरीकत मुरशिदे बर हक

आरिफ बिल्लाहि ताजुशरीआ फकीह-ए-इस्लाम

जानशीन-ए-हुज़ूर मुपती-ए-आज़म काजियुक्कुज़ात

फिलहिन्द नबीरा-ए-आला हज़रत अल्लामा मौलाना

अलहाज अश्शाह मुपती कारी मुहम्मद इस्माईल रज़ा उर्फ़

मुहम्मद अखरत रज़ा ख़ाँ कादरी अज़हरी दामत बरकातोहुमुल

आलिया की सब से पहले ज़ियारत का शर्फ़ उर्स रजवी

25 / सफरुलमुजफ्फर 1402 हिजरी 1981 ई. के मौका पर

हासिल हुआ। मैं अम्मे मोहतरम मौलाना हाफिज़ बशारत

अली रजवी इमाम व खतीब जामेअ मस्जिद चन्दरपुर के

हमराह बरेली शरीफ हाज़िर हुआ था। उसी मौके पर मुझे

हज़रत से बैत व इरादत का शर्फ़ भी हासिल हो गया।

हज़रत ने शजरा मुबारका पर अपने दस्ते मुकद्दस से तीन

जगह नाम तहरीर फरमा कर अता फरमाया था।

हज़रत किवला की शख्सियत कोई मोहताजे तआरुफ़

व बयान नहीं, अल्लाह तआला ने आप की जाते बा बरकत

को बैनलअक़वामी सतह पर मरज-ए-खलाइक बना दिया

है, तिशानिगाने उलूम व मअरफत आप से आ कर इकितसादे

फैज़ हासिल करते हैं। आप की जाते गिरामी उन नुफूसे

कुदसिया में से है जिन की इलमी शौकत व जलालत अजमत व बुजुर्गी, तकवा व तहारत, मुसलिमुस्सुबूत के दर्जा पर फाइज है। आप के फजाइल व कमालात, उलूम व फुनून खिदमात व कारनामे और जोहद व तकवा का डंका शश जिहालते आलम में बज रहा है।

अलहम्दु लिल्लाह मेरी जिन्दगी के इन्तिहाई मुबारक व मसऊद अय्याम हैं कि उस हकीर को अपने मुरशिदे गिरामी की मुईत में सफर व हजर और शब व रोज रहना नसीब हुआ है। और बहुत करीब से आप के मामूलात व मशगूलात देखने और इरशादात सुनने का मौका हर रोज मिलता है। बिला शुबह आप की पूरी जिन्दगी शरीअत व तरीकत और सुन्नत नबविया (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के सांचे में ढली हुई है। मैंने अपनी 35/साला जिन्दगी में जिन अस्ताफ की जियारत की और उनके साथ कुछ लमहात गुजारने का मौका मिला, और जिन की विलायत व बुजुर्गी, तकवा व परहेजगारी की कसम खाई जा सकती है। इस मुबारक जमाअत औलिया, उलमा व मशाइख के सरखील व सरदार ताजुशरीआ अल्लामा मुप्ती मुहम्मद अखतर रजा कादरी अजहरी बरेलवी हैं। मैंने हजरत से सूरए फातिहा की तफसीर, अलकयूबी, अलअशबाह वन्नाजाइर, दलाइलुलखैरात शरीफ, कसीदा बुर्दा शरीफ, और बुखारी शरीफ वगैरा कुतुब भी पढ़ी हैं। मेरे लिए काबिले फख की बात यह है कि मेरे साथ हजरत किक्ला और हुजूर पीरानी अम्मा साहिबा की वेकरीं शफकत व मोहब्बत और उलफत

व मुरव्वत रहती है। हजरत के साहबजादे गिरामी मेरे हमदर्स रफीक और पीर जादे हजरत मौलाना अस्जद रजा खॉ कादरी और आप की शरीके हयात मोहतमी राशिदा नूरी साहिबा (भाबी जान साहिबा) की सरपरस्ती व दुआयें हमारे वक्त मुझे हासिल हैं। जो कुछ भी मैं दीन-ए-इस्लाम की खिदमत अन्जाम दे रहा हूँ यह सब इन हजरात बाबरकात की दुआये सहरगाही और सरपरस्ती का नतीजा है। अल्लाह तआला इस खानवादे को हजारों हज़ार साल सलामत रखे, और मुआनिदीन व हासिदीन से महफूज व मामून रखे (अमीन) जिन्होंने आज के तरक्की याफता दौर में खुर्दनवाजी की एक बेहतरीन मिसाल काइम की है।

राकिमुस्सुतूर ने 1989 ई. में हजरत किबला से वक्तन फौकतन हालात दरयाफत किए थे, वह इस वक्त तरतीब दे कर अपनी किताब 'मुप्ती-ए-आजम और उन के खुलफ' जिल्द अख्ल (मतवूआ रजा एकेडली मुम्बई 1990ई.) में शामिल कर दिए थे। मगर चन्द सालों से अकसर यह दिल में उमंग उठती थी कि हजरत के तफसीली हालात मुरत्तब करूँ, मगर कौमी व मिल्ली मसरूफियात और जिम्मादारियाँ की वजह से वक्त नहीं निकाल पाता था। अल्लाह भला करे आली जनाब अल हाज अब्दुर्रहमान ताबानी व जनाब अब्दुल्लतीफ रजवी (ओहदेदारान आलइन्डिया जमाअत-ए-रजा-ए मुस्तफा शाख मालीगॉ जिला नासिक) का, उन्होंने फौन पर फौन कर

के मुझे लिखने पर मजबूर कर दिया। अलहम्दु लिल्लाह यह जेरे नजर किताब सिर्फ एक हफ्ता की मेहनत में तैयार हो कर आप के हाथों में है। अब कारनामे और खुलफा व तलामिजा पर मबसूत अन्दाज़ में लिखूंगा। कारेईन से दुआ की दरखास्त है।

आखिर में उस्ताज़ गिरामी मुहविक अज़ हज़रत अल्लामा मुफ्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी मददजुल्लाहुल आली(काज़ि-ए-शरअ व मुफ्ती शहर रामपुर)का ममनून हूँ कि आप ने नजरे सानी के साथ बहुत जगह इस्लाह फरमाकर हौसला अफजाई फरमाई। हमदर्द कौम व मिल्लत हज़रत मौलाना अलहाज़ मुहम्मद सईद नूरी का भी मशकूर हूँ, और मौलाना अमीनुलकादरी कि उन्होंने तस्हीह की जिम्मेदारी बखुबी निभाई। अल्लाह तआला सभी को खिदमते दीन-ए-इस्लाम और मसलक अहले सुन्नत की मज़ीद तौफीक अता फरमाये और बारगाहे मुरशिद में यह हकीर सा नज़राना अकीदत व मोहब्बत कबूलियत से सरफराज़ हो जाये। (आमीन)

सगे आस्ताना-ए-रज़विया

मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

(14/शअबानुल मुअज़्ज़म 1428 हिजरी/28अगस्त2007ई.)

डाइरेक्टर इस्लामिक रीसर्च सेन्टर

कौमी जन्ल सिक्रेट्री

अलइन्डिया जमाअत-ए-रज़ा-ए-मुस्तफा

तकदीम

अज़: मुहविक अज़ हज़रत अल्लामा मुफ्ती सय्यद शाहिद अली हसनी रज़वी मुहदिदस रामपुरी

मर्कज़ी इल्म व इरफान बरेली शरीफ और खानवादा

—ए-रज़विया तैरहवी सदी हिजरी में मुजाहिद जंग आजादी इमामुलउलमा मुफ्ती मुहम्मद रज़ा अली खाँ नवशबन्दी बरेलवी (1286 हिजरी)उनके फरज़न्द सईद इमामुल मुतकल्लिमीन मुफ्ती मुहम्मद नकी अली खाँ कादरी बरेलवी(1297हिजरी)चौदहवी सदी हिजरी में इमामुलउलमा के पोते और इमामुलमुतकल्लिमीन के नूरे नज़र लखते जिगर, फरज़न्द सईद,इस्लाम के बतले जलील,हुज्जतुल अख़, फरीदुदहर,यगाना-ए-अज़,आशिके रसूल,चौदहवी सदी हिजरी के मुजदिददे आज़म, आला हज़रत,इमाम अहमद रज़ा खाँ कादरी बरेलवी कुददुस सिर्रुहुम(1921ई/1340)की इल्मी,दीनी,इशकी और फिक्री अबकरियत,तजदीदी कारनामों और लाज़वाल खिदमत मकबूला के सबब पूरे आलम-ए-इस्लाम में मशहूर व मअरुफ है। गैर मुन्कसिम हिन्दुस्तान में अपनी इल्मी व रुहानी खिदमत,दीनी कियादत और मुतावातिर फिक्री वरासत की हिफाज़त और तब्लीगी व इशाअती लिहाज से देहली के मशहूर खानदान वलियुल्लाह से भी ज्यादा नुमायाँ और महबूब व मकबूल खानवादा है। इन दोनों खानवादों की खिदमत जलीला बरें सगीर की इस्लामी तारीख का निहायत अहम लाइक कद व मन्ज़िलत

और शान्दार व ताबनाक हिस्सा हैं। दोनों खान्दानों ने बरें सगीर ही नहीं बल्कि पूरी इस्लामी दुनिया के मुसलमानों और अहले ईमान को मुतास्सिर किया है। दोनों खान्दानों में कई नसलों और पुशतों पर मुहीत इल्मी व दीनी खिदमात का एक ऐसा तसलासुल मौजूद है जो दूसरे खानवादों में बहुत कम पाया जाता है।

खान्दाने वलियुल्लाह जिस के खियालात व नजरियात को "फिक्र वलियुल्लाही" के नाम से याद किया जाता है। यह खान्दान इमाम आजम अबूहनीफा का मुकल्लिद था, तसव्वुफ का इल्मबरदार था, अस्लाफे किराम की इकदार व रिवायात का वारिस व अमीन था। इस खान्दान के साहबजादगान, नवीरगान उनके सच्चे वारिस थे जो सब के सब सवादे आजम अहले सुन्नत के अकाबिर उलमा व मशाइख और सुफिया किराम की उसी रोश पुर काइम व दाइम रहे जो उन्हें वतौर वरासत मिली थी। सिवा-ए-मौलवी इस्माईल देहलवी के कि यह खान्दान वलियुल्लाह का बदनाम जमाना एक फर्द था। हजरत शाह वलियुल्लाह मुहदिदस देहलवी (1172 हिजरी 1762 ई) के नाफरमान व नालाइक पोते शाह मुहम्मद इस्माईल देहलवी (1246 हिजरी 1831 ई) फिक्री व ऐतिकादी या जमहूरे उम्मत के मुतवारिसात व राइज इस्लामी अकाइद से मुतासादिम बहुत से अफकार व खियालात के सबब इस खान्दान के इल्मी व दीनी वकार और मकबूलियत को बड़ा नुकसान पहुँचा और इस नंगे खान्दान शरख्स ने अपने ही

बुजुर्गों से खुली बगावत कर दी, जिस से इस खान्दान की इज्जत व अजमत दागदार हो गई। फिर इस्माईल देहलवी के मानने वालों ने यह सितम भी किया कि हजरत शाह वलियुल्लाह मुहदिदस देहलवी उन के साहबजादगान और नवीरगान की तसानीफ व तालीफात में तहरीफ कर के उन के असल अकाइद व नजरियात और मामूलात को मसख कर दिया। और अपने नये नजरियात के मुताबिक बनाने की कोशिश की और "फिक्रे वलियुल्लाह" को "फिक्र इब्ने तैमीया" से जोड़ दिया फिर उस खान्दान में कोई ऐसा नुमाया आलिमे दीन भी पैदा न हुआ जो तहरीफात को असल अकाइद व नजरियात और मामूलात से अलग कर के "फिक्र वलियुल्लाह" को मुमताज और ताबनाक करता और असल "फिक्र वलियुल्लाह" को आगे बढ़ाता। लिहाजा रोज बरोज खान्दाने वलियुल्लाह की मकबूलियत और इन्फिरादियत गहनाती चली गई। और उस ने एक अलाहीदा रुख तै कर लिया।

जबकि खानवादा-ए-रजविया में इमामुलउलमा के विसाल के बाद उन के फर्जन्द गिरामी इमामुलमुतकलिमीन मौलाना नकी अली खॉ कादरी बरेलवी और मौलाना हादी अली खॉ कादरी बरेलवी और उन के पोते आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी कुददुस सिर्रहु, दूसरे पोते उस्ताजे जमन अल्लामा हसन रजा खॉ कादरी बरेलवी और तीसरे पोते माहिर इल्म मीरास अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद रजा खॉ कादरी बरेलवी अलैहिमुर्रिजवान ने इस सिलसिला

को काइम रखा और उस में आला हजरत फाजिले बरेलवी ने मजीद वुस्अत अता कर के शोहरा-ए-आफाक और आलमगीर बनाया। आला हजरत के विसाल के बाद भी यह सिलसिला तसलसुल के साथ विला इन्किताअ नुमाया इल्मी व दीनी शख्सियात का एक ऐसा आदूट जरी सिलसिला है जो ता हाल वसीअ तर देराज है। उन शख्सियतों में (1) हुज्जतुल इस्लाम मौलाना मुफती मुहम्मद हामिद रजा खों कादरी बरेलवी(शहजादा-ए-अकबर आला हजरत, 1362 हिजरी 1943 ई।) (2) मुफती आजम मौलाना मुहम्मद मुस्तफा रजा खों कादरी बरेलवी(शहजादा-ए-असगर आला हजरत 1402 हिजरी 1981 ई।) (3) मुफस्सिर आजम अल्लामा इब्राहीम रजा कादरी खों कादरी बरेलवी(पोते आला हजरत 1385 हिजरी 1965 ई।) (4) अल्लामा हम्माद रजा खों रजवी बरेलवी(पर पोता आला हजरत म. 1375 हिजरी 1965 ई।) (5) रैहाने मिल्लत अल्लामा मुहम्मद रैहान रजा खों कादरी बरेलवी(पर पोता आला हजरत म. 1405 हिजरी 1985 ई।) (6) ताजुशरीआ, फकीहे इस्लाम अल्लामा मुफती मुहम्मद इस्माईल रजा खों अलमअरुफ ब मुफती मुहम्मद अखरत रजा खों कादरी बरेलवी अजहरी मदजुल्लाहुल आली (7) उस्ताजुल उलमा अल्लामा हसनैन रजा खों कादरी बरेलवी(दामाद व भतीजे आला हजरत, 1401 हिजरी 1981 ई।) (8) अमीन शरीअत अल्लामा सिबतैन रजा खों कादरी बरेलवी(पर पोते उस्ताजे जमन मद जुल्लाहुल आली) (9) सदरुल उलमा मुफती मुहम्मद तहसीन रजा खों कादरी

बरेलवी(उस्ताज जमन के पोते म. 1428 हिजरी 2007 ई।) (10) अल्लामा मुफती मुहम्मद तकदुस अली खों कादरी बरेलवी, इब्ने मौलाना सरदार वली खों इब्ने मौलाना हादी अली खों इब्ने मौलाना रजा अली खों नक्शबन्दी बरेलवी(पर पोते इमामुलउलमा म. 1408 हिजरी 1988 ई।) (11) मुफती ऐजाज वली खों रजवी बरेलवी इब्ने मौलाना सरदार वली खों(पर पोते इमामुलउलमा, म. 1393 हिजरी 1973 ई।) अलैहिमुर्हमा वरिजवान नुमाया नजर आते हैं।

फकीहे इस्लाम अल्लामा मुफती मुहम्मद इस्माईल रजा खों मारुफ ब ताजुशरीआ मुफती मुहम्मद अखरत रजा खों अजहरी कादरी बरेलवी इब्ने मुफस्सिर आजम अल्लामा मुहम्मद इब्राहीम रजा खों(हुज्जतुल इस्लाम के पोते, आला हजरत के पर पोते और मुफती आजम के नवासे) दामत बरकातुहुमल कुदसिया वलआलिया, मतउल्लाहुल मुस्लिमीन बतौल बका-इही-खास तौर से मुमताज हैसियत के मालिक हैं। इल्मी व रुहानी दुनिया में मुशारुन इलाहै व मोअतमिद और मुस्तनद मरजा अलमा व फुक्हा और मशाइख व सूफिया हैं। उन मजकूर बाला उलमा व मशाइख किराम ने खानवादा-ए-रजविया की पाकीजा और मुकददस रिवायात अकाइद व नजरियात और अफकार को जिन्दा व ताबन्दा रखा। दर्से रजा, फिक्हे रजा, इशके रेजा फिक्र रजा और अमले रजा से कौम को रोशनास किया और उन सब की तल्लीग व इशाअत में नुमाया किरदार अदा किया और खान्दाने रजा के इल्मी व दीनी पलैट फार्म से अपने अपने

आहेद में कौम व मिल्लत की भरपुर नुमाइन्दगी की और अपनी जर्री खिदमात से और ऐसी गैर मामूली शोहरत व मकबूलियत हासिल की जिस की नजीर आज की दुनिया में नहीं मिलती।

असे हाजिर में आला हजरत के उलूम व फनून के सच्चे वारिस, हुज्जतुलइस्लाम और मुफती-ए-आजम के सही जानशीन, रुहानियत के ताजदार, मसन्द बरकातियत के रमजसनास, रजवियत के अमीन, ताजुशरीआ, फकीहे इस्लाम, काजियुलकुज्जात फिल हिन्द अल्लामा मुफती मुहम्मद अख्दरत रजा खाँ कादरी अजहरी दामतबरकातुहुमुल कुदसिया हैं जो अहले सुन्नत व जमाअत की आलमी सतह पर इल्मी व दीनी, ऐतिकादी व फिक्री कियादत व रहबरी फरमा रहे हैं। जिन के आफतावे शोहरत व इकबाल की किरनें सारे आलम को रोशन व मुनव्वर कर रही हैं। खान्दाने रजा के यह तमाम मुतकदिदमीन व मुताअख्खरीन उलमा व मशाइख तीन औसाफ में इन्तियाजी मकाम रखते हैं। (1) इश्के रिसालत (2) तहफुज व इशाअत इस्लाम व सुन्नियत (3) और फिक्ह व इपता के जरीआ खिदमत। यह तीन ऐसे औसाफ हैं जो खान्दाने रजा के अफाराद में कदे मुश्तरक की हैसियत रखते हैं।

फकीर नूरी के मुरशिद व मुरब्बी शरीअत व तरीकत और उस्ताज गिरामी वकार हजरत ताजुशरीआ मद जुल्लाहुल आली में यह तीनों खान्दानी औसाफ बदर्जा-ए-अतम मौजूद हैं और इस वक्त आप ही इस खान्दान की

इल्मी व रुहानी वरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। सन्ने ईसवी के लिहाज से आप अपनी उम्र मुबारक की (72) बहत्तरवी मन्ज़िल तै कर रहे हैं।

हजरत ताजुशरीआ मद जुल्लाहुलआली ने एक ऐसे इल्मी, रुहानी और मजहबी घराने में आँखें खोलीं कि जिस में कई पुश्तों से इल्म व इरफान और रुशद व हिदायत का सिलसिला काइम व जारी था। उन अस्ताफे किराम के उलूमे नाफिआ और आमाले सालिहा का पाक वर्सा यके बाद दीगरे मुन्तकिल होता रहा जिन की हक गोई, हक शनासी, जुरअत व बेबाकी और इश्के रसूल में सरशारी व जानिसारी, मगरूराने तख्त व ताज और बन्दगाने माल व जाह के मुकाबिले में इस्तिगना व बे नियाजी उन्हें अपने इस्लाफ के वर्सा में मिली थी। आप की विलादत के वक्त पर दादा आला हजरत और जदे अमजद हजरत हुज्जतुलइस्लाम विसाल फरमा चुके थे। वालिद माजिद मुफस्सिरे आजम की उम्र का 36वाँ साल था जिन की दर्स व तदरीस का चढ़ता सूरज पूरे शबाब पर था। दूर-दूर से तिशनिगाने इल्म व फजल परवाना वार हाजिर हो कर दर्स मुफस्सि-ए-आजम में शरीक हो रहे थे।

नाना जान हजरत मुफती आजम जो अपने वक्त के फर्दे फरीद, उलूमे नक्लिया के ताजदार, उलूमे अक्लिया के गव्वास, मैदाने फकाहत के शहसवार और मैदाने सियासत के इल्मबरदार थे, अर्ब व अजम में उनकी धूम थी, सारे जहान में उन का चर्चा था, इल्म व फजल का आफताब रोशन था, यह

इल्म व इरफान के बहर नापैदा किनारे थे, जिन की न जाने कितनी मौजें थीं, वह एक कारखाना थे, जहाँ पुर्जें नहीं ढलते, शरिखसयत साजी होती थी, उस रौशन और शरिखसयत साज माहोल में हजरत ताजुशरीआ का अहदे तिफली शुरू हुआ। हजरत ताजुशरीआ को पीरे मजाज जुबदतुस्सादात अहसनुलउलमा हजरत अल्लामा सैद हैदर हुस्न कादरी बरकाती नूरी (1995 ई) का ईकान और नामूर नाना जान हजरत मुफती आजम का शोहरा आफाक ईमान मयस्सर आया। होश की आँखें खुली तो हर तरफ कुरआन व सुन्नत की हुक्मरानी नजर आई। फिकह हन्फी का सिक्का चलते देखा, दीन मतीन और अजमते रसूल की हिमायत, अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मनों की अदावत में अपने नाना जान और वालिद माजिद को यक्ता-ए-रोजगार पाया।

हजरत ताजुशरीआ ने अपने वालिदैन, दारुलउलूम मन्जर-ए-इस्लाम और जामिआ तुलअजहर काहिरा मिस्र में मुख्तलिफ असातिजा किराम से तालीम व तरबियत पाई और सन्द व दस्तार से सर फराज हुये। जामिआ अजहर में हुसूल इल्म के दौरान ही वालिद माजिद हजरत, मुफत्सिरे आजम का विसाल हो चुका था, तीन साल के बाद जामिआ अजहर मिस्र से वापस हुई। बरेली शरीफ में हजरत मुफती आजम की सर परस्ती में तारीखी इस्तिकवाल हुआ। वापसी के बाद 1967 ई में अपने मादर इल्मी, यादगार रज़ा, मरकज़ इल्म व इरफान, जामिआ रजविया, "मन्जर-ए-इस्लाम" में दर्स व तदरीस का सिलसिला शुरू फरमाया। आज दर्स व

तदरीस का तअल्लुक उन के जिस्म से नहीं बल्कि उन की रूह से है, दर्स तदरीस उन की रूहानी गिज़ा है। ग्यारह साल बाद आप के बरादरे अकबर हजरत रैहाने मिल्लत ने दारुलउलूम "मन्जर-ए-इस्लाम" के सदरुलमुदरिसीन की जिम्मेदारी आप के कांधों पर डाल दी। आप ने इस मन्सब की जिम्मेदारियों को हुस्न व खुबी के साथ निभाते हुये तालीमी व तन्जीमी एतिबार से दारुलउलूम की शोहरत और कबूलियत का पाया बहुत बलन्द फरमा दिया। मसरुफियतों का दाइरा बसीअ तर होता चला गया तो बाज़ाब्ता दर्स व तदरीस का सिलसिला मुम्किन नहीं रह सका। तब आप ने अपने दौलते कदा पर मखसूस ओकात में दर्स कुरआन व हदीस की महफिल सजादी। यहाँ दर्स व तदरीस की इफादियत इतनी बड़ी और मकबूल व मअरुफ व मशहूर हुई कि इस हल्का-ए-दर्स में शर्फ तिलमिज पाने और जानवे तिलमिज तह करने के लिए तीन तीन जामिआत मन्जर इस्लाम, मज़हरे इस्लाम और जामिआ नूरिया के तलबा की बड़ी तादाद जमा हो गई। खत्मे बुखारी शरीफ तदरीस की ऊँची मन्ज़िल है। आप ने यह काम भी बहुत हुस्न व खुबी से अन्जाम दिया। इफितताह बुखारी फिर खत्मे बुखारी शरीफ का सिलसिला अहले सुन्नत के मदारिस में शुरू हुआ तो बढ़ता ही चला गया। मर्कज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत अलजामिअतुलइस्लामिया गंज कदीम रामपुर में सर परस्त आला की हैसियत से 33 साल के अर्से में मुतअदिद बार फकीर नूरी और इन्तिजामिया की दअवत, असातिजा व

तलबा की ख्वाहिश पर जलवा बार होकर इफि तताहे बुखारी और खत्मे बुखारी की महफिलों को रौनक बरखी, उलमा व तलबा और अवांम व खास के बीच इल्मी गोहर लुटाये और फ़ैज व करम की मुसलाधार बारिश से दिलों की सुखी खेती को हरयाली बरखी। ऐसा लगता था कि इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम की महफिलों को जानशीन की हैसियत से संवार रहे हैं। अपने जदे, आला आला हज़रत जदे अमजद हुज्जतुल इस्लाम, वालिद माजिद मुफर्रिसर आजम और नाना जान मुफती आजम, अपने असातिजा हज़रत बहरूलउलूम वगैरहुम की तालीमी व तदरीसी यादों को ताजा कर रहे रहै हैं। जामिआ फारुकिया बनारस में "साहिब बुखारी और बुखारी की आखरी हदीस पर ढाई घन्टा तकरीर फरमाई और दारुलउलूम 'ज़ियाउलइस्लाम' हावड़ा में खत्मे बुखारी के मौके पर अल्लामा अरशदुलकादरी, अल्लामा गुलाम आसी, अबूलउलाई अजीजे मिल्लत मौलाना अब्दुलहफीज अजीजी और दर्जनों उलमा की मौजूदगी में आखिरी हदीस पर सैर हासिनल गुप्तगु की। आप का तअल्लुक जिस अजीम खानवादा-ए-रजविया से है इस खान्दान का मा बिहीलइम्तियाज वसफ फतावा नवैसी है।

खान्दान का मूरोसी जंगी मिजाज उलूम दीनिया की तरफ मोड़ने में इमामुलउलमा मुफती रज़ा अली ख़ाँ नवशबन्दी बरेलवी ने अहम किरदार अदा किया, फन्ने सिपाह गरी के महबूब मशगला को तर्क कर के फतवा नवैसी को इख्तियार करने का सेहरा आप ही के सर बंधता

है। आप के दो फरज़न्द हुये, मुफती नकी अली ख़ाँ और मौलाना तकी अली ख़ाँ। मुफती नकी अली ख़ा ने उलूमे दीनी में कलाम हासिल किया और फतावा नवैसी शुरू की, उसे भी कमाल तक पुचाया। आप के तीन साहब जादे हुये, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी, मौलाना हसन रज़ा ख़ा बरेलवी और मुफती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी ने फ़िक्ह हन्फ़ी को इस्तिहकाम अता करे के साथ साथ उम्मत मुस्लिमा को इन्ने तैमिया के फैलाये हुये जहर से आलूद दिल व दिमाग को सवादे आजम पर गामज़न करने के लिए अपनी पूरी ज़िन्दगी वक़फ कर दी। बरादरे औसत मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी ने ख़िदमत दीन और मन्ज़र-ए-इस्लाम के एहतिमाम के साथ उर्दू नअतिया शाइरी को नई रिफअतों से आशाना किया। फतवा नवैसी को मशगला-ए-रोज व शब बनाकर मुफती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी ने फ़िक्ह व इफता की खान्दानी ख़िदमत को मज़ीद बलन्दियाँ अता कीं। इमाम अहमद रज़ा के फ़र्ज़न्द अकबर हुज्जतुलइस्लाम, मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ बरेलवी ने फतवा नवैसी में अपना कमाल दिखाया। आला हज़रत के फ़र्ज़न्द असगर ने उस कारे ख़ैर का आगाज़ 1910 ई में किया जो उन के विसाल 1981 ई तक जारी रहा। नाना जान के फज़ल व कमाल के सच्चे वारिस, सच्चे जानशीन और परदादा के उलूम व फुनून के सही वारिस हज़रत ताजुशरीआ ने इस मुबारक काम का आगाज़ चौदह साल

की उम्र शरीफ में किया आप ने इस दुशवार गुजार राह की मन्जिल को पाने की खातिर आगाज में नाना जान हुजूर मुफ्ती-ए-आजम और मुफ्ती सय्यद अफज़ल हुसैन मुंगीरी के नुक़्श हाथ कदम की पैरवी की, यानी उन बाकमाल इस्तिग़ाथों की निगाहों से अपने लिखे हुये फतवा गुजारते रहे। पहला फतवा लिखा तो मुफ्ती अफज़ल हुसैन मोंगीरी को दिखाया। उन्होंने देख कर शाबाशी दी, तहसीन की और होसला बढ़ाने के लिए कहा नाना जान की अमीक निगाहों तक उसकी रसाई होनी चाहिए। नाना जान ने देखा तो फर्ते, मुसरत से चेरा-ए-अनवर खिल गया, दादे तहसीन से नवाजा। यह सिलसिला ज़्यादा दिनों तक नहीं चला। जल्दी ही आप के नाना जान हज़रत मुफ्ती आजम ने यह अजीम जिम्मेदारी भी आप को सौंप दी। मुफ्ती-ए-आजम ने अल्फ़ाज़ में वक़ौल मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी: "अख़तर मियाँ अब घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिनकी भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम इस (फतवा नवैसी के) काम को अन्जाम दो मैं (दारुलइफ़्ता) तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ मौजूदा लोगों से मुखातिब हो कर हज़रत मुफ्ती-ए-आजम ने फरमाया :

"अब आप अखातर मियाँ सल्लामहु से रज़ूअ करें, उन्हीं की मेरा काइम मकाम और जानशीन जाने।"

हज़रत ताजुशरीआ अपनी फतवा नवैसी के तअल्लुक से खुद रकम तराज हैं :

"मैं बचपन से ही हज़रत मुफ्ती-ए-आजम से

दाखिले सिलसिला हो गया हूँ जामिअ अज़हर से वापसी के बाद मैंने दिल चस्पी की बिनापर फतवा का काम शुरू किया। शुरू शुरू में मुफ्ती सय्यद अफज़ल हुसैन साहब अलैहिर्रहमा और दूसरे मुफ़्तयाने किराम की निगरानी में यह काम करता रहा और कभी कभी हज़रत मुफ्ती-ए-आजम की खिदमत में हाज़िर हो कर फतवा दिखाया करता था, कुछ दिनों के बाद इस काम में मेरी दिलचस्पी ज़्यादा बढ़ गई और फिर मैं मुस्तक़िल हज़रत की खिदमत में हाज़िर होने लगा, हज़रत की तवज्जों से मुख़्तसर मुदत में इस काम में वह फ़ैज हासिल हुआ जो किसी के पास मुदतों बैठने से भी नहीं होता। मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी के हवाले से हज़रत ताजुशरीआ के अल्फ़ाज़ मुलाहिज़ा फरमाये :

"मैंने दारुलउलूम मन्ज़र-ए-इस्लाम में पढ़ा और पढ़ाया, जामिअ अज़हर में भी पढ़ा, शुरू से ही मुझे मुतालअ का बहुत शौक था। अपनी दर्सी किताबों के एलावा गुरुह व हवाशी और गैर मुतअल्लिक किताबों का रोज़ाना कसरत से मुताला करता और ख़ास ख़ास चीज़ों को डाइरी में नोट कर लिया करता था। इसके एलावा सब से अहम बात यह है कि मुझे जो कुछ भी मिला हुजूर मुफ्ती-ए-आजम खुददुस सिरुहु की सोहबत व इस्तिफ़ादा सालों की मेहनत व मुश्क़त पर भारी पड़ते थे मैं आज हर जगह हुजूर मुफ्ती-ए-आजम का इल्मी व रुहानी फ़ैज़ान पाता हूँ। आज जो मेरी हैसियत है वह उन्हें की सोहबत कीमया

असर का सदका है।

हज़रत मुपती आजम कुददुस सिरुहु की हयात मुकददसा में यह काम चन्द मुपितयाने किराम के तआउन से घर से ही करते रहे। उन के विसाल के बाद 1981 ई में इस बात की शदीद ज़रूरत महसूस की गई कि बाज़ाबता तौर पर दारुलइपता का कियाम अमल लाया जाये लिहाजा उसी ज़रूरत की तक्मील की खातिर मर्कजी दारुलइपता की निशात सानिया के तौर पर कियाम अमल में लाया गया। आप की सर परस्ती में मुपती काजी अब्दुरहीम बस्तवी, मुपती मुहम्मद नाजिम अली कादरी और मुपती हबीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी पर मुश्तमिल काफिला तशकील दिया गया। मुपती अब्दुलवहीद ख़ाँ बरेलवी को नक्ले फ़तावा का काम सोंपना गया, मौलाना अब्दुलवहीद ख़ाँ बरेलवी के इन्तिकाल 2005 ई तक फ़तावा के 80 रजिस्टर तैयार हो चुके थे। मर्कजी दारुलइपता बरेली के यह रजिस्टर तबअ हो कर मन्ज़र आम पर आ जायें तो फ़िवह हन्फी का आलमी सरमाया, होंगे। बकौल मुहदिदसे कबीर मददजुल्ला-हुलआली :

जामेअ अज़हर के दौरे तहसील में जब आप का अरबी कलाम अज़हर के शूयूख़ सुनते तो कलाम की सलासत व निज़ाकत और हुस्ने तरतीब पर शूम् उठते और कहते थे कि यह कलाम किसी ग़ैर अरबी का महसूस ही नहीं होता। अल्लाह तआला ने आप को कई ज़बानों पर मलका—ए—खास अता फरमाया है। उर्दू ज़बान गो आप की

घरेलू ज़बान है और अरबी आप की मज़हबी ज़बान है। इन दोनों ज़बानों में आप को खुसूसी मलका हासिल। जिस पर आप की उर्दू व अरबी नअतिया शाइरी शाहिद आदिल हैं मज़ीद फरमाते हैं :

जंबाबोवे में एक मिस्त्री शैख़ ने एक बार हम्दिया अशआर सुने तो बहुत महज़ूज़ हुये और इस की नक्ल की फरमाईश भी कर डाली।

हज़रत मुहदिदसे कबीर मदजुल्लाहुलआली फरमाते हैं :

हज़रत अल्लामा अज़हरी को मैंने इंगलैन्ड, अमरीका, अफ्रीका, साऊथ अफ्रीका, जम्बाबोवे वगैरा में बार जस्ता अंग्रेजी ज़बान में तकरीर व वअज़ करते देखा है और वहाँ के तालीम याफ़ता लोगों से आप की तअरीफ़ें भी सुनीं। और यह भी उन से सुना कि हज़रत को अंग्रेजी ज़बान के क्लासकी उस्लूब पर उबूर हासिल है।

आप जो कुछ बोलते, लिखते हैं उस में तकलिफ़ात का दख़ल नहीं होता बल्कि आप के मजामीन या तर्जमा निगारी उमूमन बज़रिआ इमला ही जब्त कलम किए जाते हैं। इसलिए आप के इल्मी कारनामे बर जस्तगी से ही मुत्तिसफ़ होते हैं। फिर हर बात दलाइल से मुबरहन, दिक्कते मुआनी से मुश्तमिल जामइयत से लबरेज़ होती है। हज़रत ताजुशरीआ को चालीस उलूम व फनून पर उबूर व मलका हासिल है जिन में से बहुत से उलूम व फनून पर आप की तस्नीफ़ात व तालीफ़ात शाहिद आदिल हैं। इल्मे तफ़सीर, इल्मे हदीस इल्मे फ़िवह व इफ़ता इल्मे कलाम इल्मे

तसव्युफ, इल्मे लोगत, इल्मे बलागत, इल्मे नूह, इल्मे अरबी अदब खास आप के मौजूआत हैं।

हजरत ताजुशरीआ मदजुल्लाहुलआली को जुमला उलूम अरबिया और फुनून अरबिया की तरह उर्दू व अदब पर भी कामिल उर्दूल हासिल है। इस लिए निहायत नफीस, आसान उस्तूब में तर्जमा फरमाने की कोशिश फरमाई है। हमारे मदारिस इस्लामिया के तलबा-ए-किराम बहुत आसानी से समझ सकते हैं और समझेंगे। मतन व हवाशी से खास बल्कि अखस्सुलखास ही मुस्तफीद हो पाते थे मगर बिहम्दिही तआला अब अवांम व ख्वास सभी मुस्तफीज हो सकते हैं।

हजरत ताजुशरीआ इल्म व फजल, जहद व तकवा तवक्कुल व कनाअत, सन्न व इस्तिकामत और तदय्युन व तफक्कह में फरीदुददहर, वहीदुलअस्र और यगाना-ए-रोजगार हैं। अलवलद सरलाबिया के तिहत सय्यदिना आला हजरत, हुज्जतुलइस्लाम, हजरत मुपती आजम के अक्स जमील हैं। चमन रजवियत के ऐसे शुगुफता फुल हैं जिन के इल्म व फजल, तबहर व तफक्कुह, अखलास व लिल्लाहियत, खौफ व खशीब, फिक्ह व इफ्ता शैर व अदब, तसानीफात व तालीफात, जकावत व फतानत और दीनी बसीरत की खुशबूओं की महक से पूरी दुनिया-ए-सुन्नियत मुअत्तर व मुश्क बार है। जबान अरबी में हमा दानी मजहब अहले सुन्नत और मसलके आला हजरत के रौशन मिनारा हैं जिस की ताबिशों और जियाबारियों से पूरी दुनिया-ए-सुन्नियत

रौशन है।

हजरत ताजुशरीआ अल्लामा मुपती मुहम्मद अखतर रजा खॉ कादरी बरेलवी की खिलाफत व इजाजत की तकरीब, एक हसीन और शानदार तकरीब थी। दारुल उलूम मजहर-ए-इस्लाम बरेली के सेह रोजा इजलास 6/7/8 शअवानुल मुअज्जम 1381 हिजरी 13/14/15 जनवरी 1962 ई की सदारत और सर परस्ती ताजदार अहले सुन्नत हुजूर मुपती-ए-आजम कुददुस सिर्रुहु ने फरमाई।

हुजूर मुपती-ए-आजम कुददुस सिर्रुहु ने मौलाना साजिद अली खॉ बरेलवी मोहतमिम दारुलउलूम मजहरे इस्लाम को हुक्म दिया कि 8 शअवानुल मुअज्जम 1381 हिजरी 15 जनवरी 1962 ई को सुबह 8 बजे घर पर महफिल मीलाद शरीफ का इन्शेकाद किया जाये। मीलाद ख्वाँ हजरात उलमा व मशाइख और तलबा मदारिस व फारिगुत्तहसील होने वाले तलबा की दअवत शिरकत दे दी जाये। शदीद सरदी के मोसम में कई हजार लोगों ने मीलाद शरीफ की उस खुसूसी तकरीब में शिरकत की। महफिल मीलाद शरीफ के आखिर में हुजूर मुपती-ए-आजम तशरीफ लाये और ताजुशरीआ अल्लामा मुपती मुहम्मद अखातर रजा खॉ अजहरी को बुलवाया, अपने करीब बिठाया, दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर जमीअ सलासिल आलिया कादरिया, सहरवरदिया, नक्शबन्दिया चिश्तिया और जमीअ सलासिल अहादीस मुसलसल बिलअविलयत की इजाजत व खिलाफत से सफराज फरमाया। तमाम औराद

व वजाइफ, आमाल व अश्गाल, दलाइलुलखैर, हजबुलबहर, तअवीजात वगैरा वगैरा की इजाजत, मरहमत फरमाय?।

मुअरिख बरेली शरीफ, मेरे फर्जन्द रुहानी मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी जन्मल सिक्रेट्री आल इन्डिया जमाअत रज़ा-ए-मुस्तफा, मुअल्लिफ "मुपती-ए-आजम और उन के खुलफा" अपनी तालीफ लतीफ "हयाते ताजुशरीआ" जिस का पहला एडीशन 80 सफ़हात पर मुश्तमिल है। उसे हजफ व इजाफा और नज़रे सानी के बाद 200 दो सौ से जाइद सफ़हात पर दूसरा एडीशन ला रहे हैं। मौसूफ की यह किताब हजरत ताजुशरीआ मदजुल्लाहुलआली की हयात व खिदमात, अफकार व नजरियात और आलमी सतह पर कबूले खास व आम में नक्शे अब्बल और संगे मील की हैसियत रखती है। जिस की इशाआत के बाद हजरत ताजुशरीआ मदजुल्लाहुलआली की सवानेह निगारी की रास्ते हमवार हुये और सीरत निगारी का मवाद फराहम करने के लिए राहें खुली।

मौलाना शहाबुद्दीन रजवी नौ जवान कलमकारों में जौदनवीस, पुख्या कलम और मुतअदिद किताबों के मुसन्निफ व मुअल्लिफ हैं, मर्कज़ इल्म व इरफान बरेली शरीफ के अहवाल व मुआरिफ और उन के मा आखज़ व मराजअ और खान्दान रज़ा के मशहुर, अकाबिरीन की सीरत व सवानेह पर गहरी नज़र रखने वाले रम्ज़शनास शख्सियत के मालिक हैं। हयाते ताजुशरीआ के दूसरे एडीशन में मौसूफ ने जिन खारदार वादियों से गुज़र कर कीमती

मालूमात फराहम की हैं वह लाइक तवज्जोह भी हैं और काबिल सद सताइश भी, इस राह की मुश्कलों और दुशवारियों को वही कुछ जानता है जो इस राह से गुज़रता है। दूसरा इन लज़्ज़तों से वाकिफ नहीं। आज इस बात की शदीद ज़रूरत है कि हम अपने अकाबिर और बुजुर्गों के इल्मी और रुहानी हालात व कैफ़ियात, फजाइल व कमालात, अकाइद व नजरियात, खिदमाते जलीला और जरी कारनामों से अ़वाम व ख़्वास अहले सुन्नत को ज़्यादा से ज़्यादा मुतआरफ करायें। ताकि उन के इल्मी फ़ैजान और रुहानी इक़दार से ज़्यादा से ज़्यादा लोग फ़ैजयाब हो सकें। आदा-ए-दीन और हासिदीन के ज़वान व कलम को काबू में किया जा सके।

हजरत ताजुशरीआ मदजुल्लाहुलआली के दीनी और खान्दानी दुश्मुनों ने जहाँ अपनी दुश्मुनी में कोई कसर नहीं छोड़ी हमेशा सताते और इम्तिहान की वादियों से गुज़ारते रहे। दूसरी तरफ हासिदीन का दाइरा भी रोज़ बरोज़ बढ़ रहा है जहाँ वह रश्क व हसद की आग में खुद जल रहे हैं, भून रहे हैं। वही दुनिया-ए-सुन्नियत को भी रश्क व हसद की आग में झोंक देना चाहते हैं। मिल्लत का शीराज़ बिखेर देना और इत्तिहाद व इत्तिफाक को पारा कर देना चाहते हैं।

आतिशे आग से पत्थर भी नहीं है खाली

जल गया तूर जो मूसा से हुई प्यार की बात

इन हालात के पेशे नज़र हुज़ूर ताजुशरीआ अपने

जददे आला आला हजरत इमाम अहले सुन्नत कुदुस के
इस्तिगासा को सन्न व इस्तिकामत के साथ बजवाने हाल
दोहराते हुये अर्ज गुजार हैं।

इक तरफ आदा-ए-दी एक तरफ है हासिदी

बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करोसें दुरुद

और अपने आका व मौला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु
तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह बे कस पनाह में यूँ
अर्ज करते हैं:

तुझे किया फिक्र है अखतर तेरे यावर है वह यावर

बलाओ को जो तेरी खुद गिरफ्तार बला करदें

खान्दाने-रजा के उमूमन और हजरत ताजुशरीआ
के खुसूसन आदा-ए-और हासिदीन कान खोल कर सुन लें

सब इन से जलने वालों के गुल हो गये किराग

अहमद रजा की शमअ फिरोजा है आज भी

अल्लाह तआला जल्ल मजदहु बे वसीला-ए-
सय्यदिल मुरसलीन ताहा या सीन सल्लल्लाहु तआला
अलैहि वसल्लम व बे तुफैल गौस व ख्वाजा व बरकात व
रजा, हुज्जतुलइस्लाम, मुफती आजम और मुफस्सिरे आजम
तमाम खान्दाने रजा खुसूसन हजरत ताजुशरीआ उन के
अहले खाना खुसूसन हजरत मौलाना अस्जद रजा खों
कादरी जानशीन ताजुशरीआ उनकी आले नस्बी व रुहानी
व जुमला वाबरस्तगाने सिलसिला-ए-आलिया रजविया सब
को दुशमुनों के शर, हासिदों के हसद, जुमला अमराज
जिस्मानी व रुहानी और आसीबे रोजगार से मामून व

महफूज फरमाये और हजरत ताजुशरीआ दामत
बरकातुहुमल कुदसिया वलआलिया व मतअल्लाहुलमुस्लीमीन
बतौल बकाइही के साया आतिफत को ता देर हम सभी के
सरो पर काइम व दाइम रखे और उन के फ्यूजाते
अलमिया व रुहानिया से माला माल फरमाये। अमीन व मा
अलैना इल्ललबलागुलमुबीन.

दुआ गो

फकीर नूरी सय्यद शाहिद अली हस्नी रजवी जमाली
खलीफा-ए-हुजूर मुफती आजम, काजी शरह व मुफती जिला
रामपुर नाजिम आला व शैखुलहदीस मर्कजी दर्सगाह अहले
सुन्नत अलजामिअतुल इस्लामिया, गंजे कदीम, रामपुर।

मुस्तर हालत

ताजुशरीआ अल्लामा मुहम्मद अखतर रजा अजहरी बरेलवी
जानशीन-ए-मुफती-ए-आजम
मसनदे रुशद व हिदायत आस्ताना-ए-आलिया कादरिया
बरकातिया रजविया सौदागिरान, बरेली शरीफ

بين نور الدجى عن نور طلعه كالشمس بنحاب عن اشراقها الظلم
يغضى حياء و يغضى سهاية فاما يكلم الا حين يجمع
سهل الحليقة لا يخفى بواذره بزينة اثنان حسن الخلق و التمس
مشتقة عن رسوله الله بنعمته طالبت عناصره و الحليم و الشيم
كلنا يديه غياث عما نفعها تستو كفا ولا يعود هما الحرم
من معشر حسبه دين و بغضهم كفر و قريبهم منجى و معتصم

1. उनकी पेशानी की चमक से जुलमते दूर होती है जिस तरह तुलूअ आफताब से अंधेरा छुट जाता है।
2. और उन की हैबत से लोगों की आँखें झुक जाती हैं।
3. वह नर्म खु हैं, उनकी खसलतें पौशीदा नहीं हैं, खुश खल्की और खुश मिजाजी ने जीनत बरखी है।
4. उनकी सिफात, सिफाते रसूलुल्लाह कि आइना दार हैं। उनकी आदतें व खसलतें बहुत खुब हैं।
5. दोनों हाथ मुसला धार वारिश की तरह फैजे रसों हैं चाहे माल हो या न हो।
6. वह इस मुकद्दस गिरोह के फर्द फरीद हैं, जिन की

मोहब्बत दीन है और नका कुर्ब निजात देने वाला है।

विलादत :

जानशीन मुफ्ति-ए-आजम अल्लामा मुफ्ती आलहाज
अशशाह मुहम्मद अखतर रजा अजहरी कादरी इब्ने मौलाना
मुहम्मद इब्राहीम रजा जीलानी इब्ने हुज्जतुलइस्लाम मौलाना
मुहम्मद हामिद रजा इब्ने आला हजरत इमाम अहमद रजा
फाजिले बरेलवी 25/फरवरी 1942 ई. को महल्ला
सौदागिरान बरेली शरीफ में पैदा हुये।

खान्दानी पस मन्ज़र:

ताजुशरीआ का खान्दान अफगानिन्सल और
कबील-ए-बढ़ेच से तअल्लुक रखता है। मुरिस आला
शहजादा सईदुल्लाह खाँ कन्दहार हुकूमत अफगानिस्तान के
वली अहद थे, खान्दानी इख्तिलाफ की वजह से कन्दहार को
तर्क वतन कर लाहूर आये। यहाँ पर गवर्नर ने आप शीश
महल में आप के कियाम का इन्तिजाम किया और दरबार
मुहम्मद शाह बादशाह देहली को इत्तिलाअ भेजवाई, दरबार
से शाही मेहमान नवाजी का हुक्म सादिर हुआ। फिर
शहजादा सईदुल्लाह खाँ ने देहली बादशाह मुहम्मद शाह से
जा कर मुलाकात की, आप को बादशह ने फौज का जन्रल
बना दिया और आप के साथियों को भी फौज में अच्छी
जगह मिल गई। रुहैल खन्ड में कुछ बगावत के आसार
नुमाया हुये तो बादशाह ने आप को रुहेलखन्ड की
दारुस्सुलतनत बरेली भेज दिया ताकि वहाँ अमन व अमान
काइम करें। आप के साहबजादे सआदत यारखाँ दरबार

देहली में वजीर-ए-मुस्लिमत थे, उनको कलैदी कलमदान मिला था, उनकी अपनी अलाहिदा महर थी। हाफिज़ काज़िम अली ख़ाँ के आहद में मुगलिया हुकूमत का ज्वाल शुरू हो गया। हर तरफ़ बगावतों का शौर और आजादी व खुद मुख्तारी का जोर था। आप अवध की कमान संभालने पहुँचे। आप के फ़रज़न्द मौलाना शाह रज़ा अली ख़ाँ बरेली जिन्होंने 1857 ई. में अहम किरदार अदा किया। इंग्लैंड ने उनका सर कलम करने के लिए पॉंच हजार के इन्आम का एलान किया था। आप के दो फ़रज़न्द मौलाना मुफ़्ती नकी अली ख़ाँ बरेलवी और दूसरे मौलाना हकीम तकी अली ख़ाँ बरेलवी तवल्लुद हुये, जिन्होंने दरज़नों किताबें लिखे, मौलाना नकी अली ख़ाँ बरेलवी के तीन फ़रज़न्द तवल्लुद हुये। (1) आला हज़रत इनाम अहमद रज़ा ख़ाँ कादरी काज़िल बरेलवी (2) मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी (3) मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी।

तस्मिया ख़ानी :

जानशीन मुफ़्ति-ए-आज़म की उमर शरीफ़ जब चार साल, चार माह, चार दिन की हुई तो वालिद माज़िद मुफ़्ति-सरे आज़म हिन्द मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी ने तकरीब बिस्मिल्लाह ख़ानी मुअकिद की, और उस में दाक़लउलूम मन्ज़रे इस्लाम के जुमला तलबा को दअवत दी। हुज़ूर मुफ़्ति-ए-आज़म कुदिदसा सिर्रहु ने रस्मे बिस्मिल्लाह अदा कराई। और मुहम्मद नाम पर अकीका हुआ। पुकार ने का नाम "मुहम्मद इस्माईल रज़ा" और उर्फ़

मुहम्मद अख़्तर रज़ा तजवीज़ हुआ। हुज़ूर मुफ़्ति-ए-आज़म की साहबज़ादी यानी जानशीने मुफ़्ति-ए-आज़म की वालिदा माज़िदा ने तअलीम का ख़ास ख़्याल रखा। चूँकि नाना जान का सहीह जानशीन इसी नवासे को मुस्तक़बिल में बन्ना था, और सारी तवक्कुआत उन्हीं से वाबस्ता थीं। इसी लिए नाना जान हुज़ूर मुफ़्ति-ए-आज़म की सहर आमूज़ दुआये भी आप ही के हक़ में निकलती रहीं।

अल्काब : जानशीने मुफ़्ति-ए-आज़म ने 1984 ई/1404 हिजरी में सुराष्टर का दौरा फ़रमाया, वीरावल, पुरबन्दर, ज़ामजौधपुर, ईलटिया, धोराजी, और जीतपूर होते हुये 15/ आगस्त 1984 ई. 1404 हिजरी को अमरीली तशरीफ़ ले गये। वहाँ हज़ारों लोग दाखिले सिलसिला हुये। रात 12 बजे से दो बजे तक जानशीन मुफ़्ति-ए-आज़म की तकरीर हुई। और 18 आगस्त को जोनागढ़ में बज़म रज़ा की जानिब से एक जलसा रज़ा मस्जिद में रखा गया। जिस में अमीरे शरीअत हाज़ी नूर मुहम्मद रज़वी मारफ़ानी ने "ताजुल- इस्लाम" का लक़ब दिया। जिसकी ताईद मुफ़्ती गुज़रात मौलाना मुफ़्ती अहमद मियाँ ने आम जलसा में की।

जानशीन मुफ़्ति-ए-आज़म को संदरुलमुफ़्तीन, सनदुल मुफ़्तीन, और फ़कीह-ए-इस्लाम का लक़ब 1984 ई. 1404 हिजरी में रामपुर के मशहूर आलिमे दीन हज़रत मौलाना सय्यद मुफ़्ती शाहिद अली रज़वी शैख़ुल हदीसअलजामियातुल इस्लामिया गंज कदीम रामपुर ने एक आम जलसा में दिया।

फखरे अहले सुन्नत, फकीहे आजम और शैखुल मुहददीसिन का लकब 14/शव्वालुलमुकर्रम 1405 हिजरी 1985 ई. को मौलाना हकीम मुजफ्फर अहमद रजवी बरकाती दातागंज बदायूँ ने दिया। उस के एलावा मसलन ताजुशरीआ मरजउलउलमा वलफुजला वगैरा और बहुत से अलकाब उलमा व मशाइख ने दीए। जिसकी एक तवील फिहरिस्त है जामेअ अजहर मिस्र के शैखुलहदीस ने आप को फख अजहर का खिताब 2010 को काहिरा में मुन्अकिद तकरीब में दिया।

हुसूले उलूम इस्लामिया :

जानशीने मुफित-ए-आजम ने घर पर वालिदा माजिदा से कुरआन करीम नाज़रा खत्म किया। उसी दौरान वालिद माजिद से उर्दू की किताबें पढ़ी। घर पर तअलीम हासिल करने के बाद वालिद बुजुर्गवार ने दारुलउलूम मन्ज़रे इस्लाम में दाखिल करा दिया। नहमीर, मीजान, मुन्शइब वगैरा से हिदाया आखेरैन तक की कितवें दारुलउलूम मन्ज़रे इस्लाम के कुहना मशक असातिजा किराम से पढ़ी। ताजुशरीआ ने फारसी की इब्तिदाई कुतुब पहली फारसी, दूसरी फारसी, गुलजारे दबिस्ता, गुलिस्तों और बुस्तों मन्ज़र-ए-इस्लाम के उस्ताद हाफिज इन्आमुल्लाह खाँ तस्नीम हामिदी बरेलवी से पढ़ी। 1952 ई. में एफ आर इस्लामिया इन्टर कालेज में दाखिला लिया। जहाँ पर हिन्दी और अंग्रेजी की तालीम हासिल की।

मुफरिसरे हिन्द कुददुस सिर्रहु के मुरीद खास जनाव निसार अहमद हामिदी सुलतान पूरी मरहूम की कोशिश से

जामिआ अजहरी काहिरा(मिस्र)से अरबी अदब में महारत हासिल करने के लिए फजीलतुशैख मौलाना अब्दुत्तवाब मिस्री की खिदमात हासिल की गई थीं। शैख साहिब दारुल उलूम मन्ज़रे में दर्स व तदरीस दिया करते थे। उनके खास तलामिजा में आप का शुमार होता था। आप दौराने ताल्ब इल्मी मामूल था कि अलस्सुबह अरबी अखबारात उस्ताद को सुनाते और उर्दू हिन्दी के अखबारात की खबरों व इत्तिलाआत को अरबी ज़बान में तर्जमा कर के सुनाते। आप को शैख साहिब बडी तवज्जोह और इन्हेमाक से पढ़ाते आप की जिहानत व फतानत को देखते हुये जामिआ अजहर में दाखिला का मशवरा मौलाना इब्रहीम रज़ा खं जीललानी को दिया तो वह तैयार हो गये। ताजुशरीआ जानशीन मुफित-ए-आजम 1963 ई. में जामिया अजहर काहिरा मिस्र तशरीफ ले गये। वहाँ आप ने "कुलिया उसुलुद्दीन" (एम-ए-ए) में दाखला लिया मुसलसल तीन साल तक जामिया अजहर मिस्र में फन तफसीर व हदीस के माहिर असातिजा से इक्तिसाब इल्म किया।

ताजुशरीआ बचपन ही से जहानत व फितानत और कुव्वते हाफिजा के मालिक थे। और अरबी अदब के दिलदादा थे। जामिया अजहर मिस्र में दाखिला के बाद जब आप की जामिया के असातिजा और तलबा से गुफ्तगु हुई तो वह आप की बे तकल्फ़ फसीह व बलीग अरबी गुफ्तगु सुन कर महवे हैरत हो जाते थे और कहते थे कि।

एक अजमियुन्नसल हिन्दुस्तानी अरबियुन्नसल अहले इल्म हजरात

से गुप्तगु करने में कोई तकल्लुफ महसूस नहीं करता।
जामिया अजहर मिस्र के शौअबा-ए-कुल्लिया-
उसूलुद्दीन का सालाना इम्तिहान अगर्चे तहरीरी होता था।
मगर मालूमात अम्मा(जनरल नालेज) का इम्तिहान तकरीरी
होता था। चुनौचेह जामिया के सालाना इम्तिहान के मौका
पर जब जानशीन मुफ्ति-ए आजम का इम्तिहान हुआ तो
मुम्तहिन ने आपकी जमाअत से इल्मे कलाम के चन्द
सवालात किए, पूरी जमाअत में से कोई एक भी सवालात
के सहीह जवाब न दे सका। मुम्तहिन ने रुपये सुख्न आप
की तरफ करते हुये सवालात को दोहराया। जानशीन
मुफ्ति-ए-आजम ने उन सवालात का ऐसा शाफी व काफी
जवाब दिया कि मुम्तहिन तअज्जुब की निगाह से देखते हुये
कहने लगा कि। "आप तो हदीस व उसूले हदीस पढ़ते हैं।
तब इल्मे कलाम में कैसे जवाब दिया"। जानशीन
मुफ्ती-ए-आजम ने जवाब में कहा "कि मैंने दारुलउलूम
मन्जरे इस्लाम बरेली में इल्मे कलाम पढ़ा था"।

आप के जवाब से मसरूर हो कर मुम्तहिन जामिया
ने आप को जमाअत में पहला मक़ाम दिया।

जामिया अजहर से फराग़त,एवार्ड,और बरेली आमद :

ताजुशरीआ मुफ्ती मुहम्मद अखतर रज़ा अजहरी
मददजुल्लाहु 1963 ई में जामिया अजहर मिस्र तशरीफ ले
गये,और वहाँ पर तीन साल मुसलसल रह कर हुसूले इल्म
में मशगूल रहे। दूसरे साल के सालाना इम्तिहान में आप ने
शिरकत की, अल्लाह तआला ने अपने फज़ले अमीम से पूरे

जामिया अजहर काहिरा में इम्तिहान में आला काम्याबी अता
फरमाई। उस काम्याबी पर इडीटर माहनामा आला हज़रत
बरेली कवाइफ अस्ताना रज़विया के उनवान से रकमतराज हैं।

नबीर-ए- आला हज़रत हुज्जतुलइस्लाम अलैहिर्रहमा
और हज़रत मुफसिस्रे आजम के फरज़िन्द दिलबन्द मौलाना
अख़तर रज़ा ख़ाँ साहब ने अरबी में बी-ए-की सनद
फराग़त निहायत नुमाया और मुस्ताज हैसियत से हासिल
की,मौलाना अख़तर रज़ा ख़ाँ साहब न सिर्फ जामिया अजहर
में बल्कि पूरे मिस्र में अब्बल नम्बरो से पास हुये। मौला
तआला उन को इस से ज्यादा बेश अज़ वेश काम्याबी अता
फरमाये। और उन्हें ख़िदमात का अहल बनाये, और वह
सहीह मअना में आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत के
जानशीन कहे जायें। अल्लाहुम्मा जिद फज़िद।

ताजुशरीआ1966 ई. जामेअ अजहर काहिरा से
फारिग हुये तो करनल जमाल अब्दुन्नासिर ने आप को
बतौर इन्आम जामे "अजहर ईवार्ड" पेश किया और साथ ही
साथ सनद से भी नवाजे गये।

जब आप जामेअ अजहर से बरेली शरीफ तशरीफ
लाये तो उस की कैफियत शहर के मशहूर बुजुर्ग उमीद
रजवी यूँ तहरीर फरमाते हैं, बउनवान आमदनत बाइस.....

गुलिस्ताने रज़वियत के महकते फूल, चमनिस्ताने
आला हज़रत के गुल ख़ुशरंग, जनाब मौलाना मुहम्मद
अख़तर रज़ा ख़ाँ साहब इन्ने हज़रत मुफसिस्रे आजम हिन्द
रहमतुल्लाहि अलैहि एक असा दराज़ के बाद जामेअ अजहर

से फारिगुत्तहसिल हो कर 17/नवम्बर 1966ई 1386हिजरी की सुबह को बहार अफजाये गुलशन बरेली हुये,बरेली के जंकशन स्टेशन पर मुतअल्लिकीन व मुतवस्सिलीन व अहले खानदान, उलमा-ए-किराम व तल्बा-ए-दारुलउलूम(मन्ज़रे इस्लाम)के एलावा बेशुमार मोअतकदीन हज़रात ने(जिन में बेरुने जात खुसूसन कानपुर के अहबाब भी मौजूद थे) हज़रत मुपती आजम मदज़ुल्लाहु की सर परस्ती में परतिपाक और शान्दार इस्तिकबाल किया, और साहबज़ादा मौसूफ को खुशरंग फूलों के गजरों और हारों की पेशकशी से अपने वालिहाना जज़्बात व खुलूस और अकीदत का इज़हार किया।

इदारा मौलाना अखातर रज़ा खाँ अजहरी और मुतवस्सिलीन को उस कामयाब वापसी पर हदया -ए-तबरिक व तहनियत पेश करता है,और दुआ करता है कि अल्लाह तआला बतुफ़ैल अपने हबीब करीम अलैहिस्सलात वतत्तस्लीम उन के आबा किराम खुसूसन आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत मुजहिदे आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु का सच्चा सही वारिस व जानशीन बनाये। ई दुआ अज मन व अज जुमला जहाँ आमीन बाद।

(मौलाना रेहान रज़ा खाँ मोदीर माहमना आला हज़रत बरेली दिसम्बर 1966 ई 1386 हिजरी)

“हुज़ूर को लेने के लिए हज़रत बज़ाते खुद बनपस नफीस तशरीफ ले गये,और ट्रेन का बे ताबाना इन्तिज़ार फरमाते रहे,जैसे ही ट्रेन पलेट फार्म पर उतरी,सब से पहले हज़रत ने गले लगाया, पेशानी चुमी और बहुत दुआयें दी

और फरमा कि कुछ लोग गये थे मगर बदल कर आये मगर मेरे बच्चे पर जामिआ की तहज़ीब का कुछ असर नहीं हुआ,मा शाअल्लाह।”

अन्दाज़े तर्बियत

हज़रत ताजुशरीआ के वालिद माजिद मुफस्सिर-ए-आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि ने आप की नशू व नुमा बड़े नाज़ व नअम और खुसूसी एहतियाम के साथ की दौराने तालिबइल्मी आप को तकरीर व वअज़ की तरबियत देते थे। एक बार वालिद माजिद ने आप को करीब बुला कर बैठाया और फरमाया कि कल से तलबा(मन्ज़र-ए-इस्लाम)को सैफुलजब्बार(मुसन्नफ़ा सैफुल्ला अलमसलूम अल्लामा शाह फज़ले रसूल उस्मानी बदायूनी)सुनाया करोगे। आप ने अर्ज किया कि अब्बा हुज़ूर अभी मेरी उर्दू भी अच्छी नहीं है,फरमाया कि सब ठीक हो जायेगी,यह काम तुम्हारे जिम्मा किया जाता है। आप ने दूसरे दिन से हम दर्स तलबा को जमा किया और खानकाहे आलिया रज़विया की छत पर बैठ कर “सैफुलजब्बार”का दर्स शुरू करदिया। इस तरह मुतअदिद बार सैफुलजब्बार का दर्स दिया और मुतालअ किया,वालिद माजिद के इस से कई मकासिद पौशीदा थे,एक तो यह कि उर्दू एबारत ख़ानी बेहतर हो जायेगी,दूसरी अकाइद-ए-अहले सुन्नत व जमाअत की खुब जानकारी हासिल होगी,तीसरी वजह यह थी कि तकरीर व खिताबत करने में तकल्लुफ और झिझक ख़त्म हो जायेगी।

दौराने तालीम वालिद माजिद का इन्तिकाल:

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम जब जामेअ अजहर में तालीम व तरबियत हासिल कर रहे थे। उसी दौरान आप के वालिद माजिद मुफस्सिर-ए-आजम हिन्द मौलाना इब्राहीम रजा खॉं जीलानी बरेलवी का 60 साल की उमर में 11/सफरुलमुजाफर 1385 हिजरी 12/जून 1965 ई. को इन्तिकाल हो गया। इन्तिकाल की खबर पहुंचते ही आप के कत्व पर गहरा सदमा पहुँचा। आप के हम दर्स मौलाना शमीम अशरफ अजहरी(मारीशश) ने आप के बरादरे अकबर मौलाना रैहान रजा खॉं रहमानी मियाँ को ताजीयती मकतूब लिखा, और आप की कैफियत तहरीर की है, इस से बखूबी अन्दाज़ा होता है। जानशीन मुफती-ए-आजम ने एक तबील खत बरादरे अकबर के नाम तहरीर किया और वालिद साहब के इन्तिकाल की तफसीलात मालूम की और एक ताजीयती नज़म भी तहरीर फरमाई। यह तमाम चीज़ें राकिमुस्तुतूर के पास महफूज हैं।

किसी के गम में हावे तबया ता है दिल ۞ और कुछ ज्यादा उमडआता है दिल
हाय दिल का आसरा ही चल बसा ۞ दुकडे दुकडे अब हो जाता है दिल
अपने अखतर पर एनायत कीजिए ۞ मेरे मौला किस को बहकाता है दिल

असातिज़ा किराम :

आप के असातिज़ा में काबिल ज़िक्र असातिज़ा किराम यह हैं।

- 1- हुजूर मुफती आजम मौलाना अशशाह मुस्तफा रजा नूरी बरेलवी कुददुस सिरहु
- 2- बहरुलउलूम हज़रत मौलाना मुफती सैयद मुहम्मद

अफज़ल हुसैन रज़वी मोंगरी

- 3 -मुफस्सिर आजम हिन्द हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रजा जीलानी रज़वी बरेलवी
- 4 -फज़ीलतुशशैख मौलाना अल्लामा मुहम्मद समाही शैखुल हदीस वत्तफसीर जामेआ अजहर काहिरा
- 5- हज़रत अल्लामा मौलाना महमूद अब्दुलगफ़फ़ार उस्ताजुलहदीस जामेआ अजहर काहिरा
- 6-उस्ताजुलअसातिज़ा मौलाना मुफती मुहम्मद अहमद उर्फ जहाँनगीर खॉं रज़वी आजमी
- 7 रैहान मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रजा रहमानी रज़वी बरेलवी
- 8 फज़ीलतुशशैख मौलाना अब्दुत्तवाब मिस्री उस्ताद मन्ज़र-ए-इस्लाम बरेली
- 9 मौलाना इफ़िज़ इन्आमुल्लाह खॉं तस्नीम हामिदी बरेलवी।

दर्स व तदरीस : ताजुशरीआ अल्लामा मुफती मुहम्मद अखतर रजा अजहरी को 1967 ई में दारुलउलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली में दर्स देने के लिए पेश कश की गई। आप ने उस दअवत को कबूलियत से सरफराज किया, 1967 ई. से तदरीस के मसन्द पर फाइज़ हो गये। ताजुशरीआ के बरादरे अकबर मौलाना रैहान रजा रहमानी बरेलवी ने 1978 ई. में सदरुलमुदरिरीन के आला ओहदा पर तकरूर किया। और उस ओहदे के साथ "रज़वी दारुलइफ़ता" के सदर मुफती भी रहे। दर्स व तदरीस का सिलसिला मुसलसल

बाराह साल तक चलता रहा।

हिन्दुस्तान गीर तब्लीगी दौरे की वजह से यह सिलसिला कुछ अय्याम के लिए मुन्कतअ हो गया। मगर कुछ ही दिनों बाद अपने दौलत कदे पर दर्स कुरआन व हदीस का सिलसिला शुरू किया। जिस में मन्जरे इस्लाम, मजहरे इस्लाम और जामिआ नूरिया रजविया के तलबा कसरत से शिरकत करते, 1407 हिजरी और 1408 हिजरी को मदरसा अलजामियातुल इस्लामिया गंजकदीम रामपुर में खत्म बुखारी शरीफ कराया। 1408 हिजरी को जामिआ फारुकिया भोजपुर जिला मुरादाबाद में बुखारी शरीफ का इफितताह किया। 1409 हिजरी को दारुलउलूम अमजदिया कराची (पाकिस्तान) में बुखारी शरीफ का इफितताह फरमाया, और जिलहिज्जा 1409 हिजरी को अलजामिअतुल कादरिया रिछा बेहड़ी जिला बरेली शरीफ में शरह वकाया का तवील सबक पढ़ाया। अब तक मुल्क व बैरुने मुमालिक में न जाने कितने मदारिस वजामीआत में दर्स बुखारी दिए हैं। जामिआ फारुकिया बनारस में खत्म बुखारी के मौका पर साहिबे बुखारी और आखिरी हदीस पर डाई घन्टा तकरीर फरमाई।

खान्दान रजा की फतवा नवैसी :

खान्दान इमाम अहमद रजा कादरी फाजिले बरेलवी की मुदत फतवा नवैसी का मन्दर्जा जैल जाइजा ईमान और यकीन को रौशन करता है। हजरत मौलाना रजा अली खाँ की फतवा नवैसी का आगाज 1246 हिजरी 1831 ई अन्जाम

1282 हिजरी 1865 ई. इमाम अहमद रजा की फतवा नवैसी का आगाज 1286 हिजरी / 1869 ई. अन्जाम 1340 हिजरी 1831 ई. हुज्जतुलइस्लाम मुफ्ती मुहम्मद हामिद रजा की फतवा नवैसी का आगाज 1338 हिजरी 1910 ई. अन्जाम 1981 ई. / 1402 है।

बहम्देही तआला यह सिलसिला—ए—जररों जिसकी मुदत 1408 हिजरी 1988 ई. तक 162 साल होती है, अब भी खानकाह आलिया कादरिया बरकातिया रजविया सौदागिरान बरेली से ताजुशरीआ 1967 ई से अन्जाम दे रहे हैं। आप हुजूर मुफ्ती आजम कुदिदसा सिर्रहु और मुफ्ती सेयद मुहम्मद अफजल हुसैन रजवी मोंगीरी की जेरे निगरानी फतवा लिखते रहे। मुफ्ती आजम कुदिदसा सिर्रहु के पास फतवा की कसरत की वजह से कई काम करते। मुफ्ती आजम ने फरमाया :

अखतर मियाँ घर में बैठने का वक्त नहीं। यह लोग जिन की भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम उस काम को अन्जाम दो। मैं तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ।" लोगों से मुखातब हो कर मुफ्ती आजम ने फरमाया :

"आप लोग अब अखतर मियाँ सल्लमहु से रजुअ करें उन्हीं को मेरा काइम मकाम और जानशीन जानें।"

उसी दिन से लोगों का रुजहान ताजुशरीआ की तरफ हो गया। आप खुद अपने फतवा नवैसी की इब्तिदा यूँ तहरीर फरमाते हैं।

फतवा नवैसी का आगाज :

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम अल्लामा मुफती मुहम्मद अखरत रजा खाँ अजहरी दामत बरकातुहुमुल आलिया को अल्लाह तआला ने वदीअत के तौर पर इल्मी व फकही सलाहियतों और जुजयात फिक्हिया पर कामिल दसर्तस, इल्मे कुरआन व हदीस पर मुकम्मल इदराक अता फरमाया। आप ने सब से पहले फतवा 1966ई/1382हिजरी में तहरीर फरमा कर मुफती सैयद अफजल हुसैन मुंगीरी सदर दारुलइफता मन्जर-ए-इस्लाम को दिखाया, आप ने फरमाया कि अब मैंने देख लिया है नाना मोहतर्म को दिखा आइये फिर आप ने अपने नाना ताजदारे अहले सुन्नत हुजूर मुफती-ए-आजम कुददुस सिरुहु की खिदमत में पेश किया। हजरत ने मुलाहिजा फरमा कर आप से मुखातब हो कर दादे तहसीन और हौसला अफजाई फरमाई और हिदायत की दारुलइफता में आ कर फतवा लिखा कर और मुझे दिखाया करो। इस से पहले फतवा में सवालात के शाफि व काफी जवाबात दिये। यह इस्तिफता मरकज इस्लाम मदीनतुल मुनव्वर से आया था। जिस में तलाक, निकाह मीरास से मुतअल्लिक मसाइल शरइया दरयाफत किए गये थे। आप ने तफसील से दलाइल व बराहीन के साथ फतवा को मुजय्यन कर के उस्ताज मोहतर्म और नाना जान से दाद व तहसीन हासिल की।

नबीरा-ए-उस्ताजे जमन हजरत मौलाना मुफती हबीब रजा खाँ बरेलवी कहते हैं कि:

“कभी कभी नागा हो जाता था तो हजरत की

अहलिया मोहतर्मा पीरानी अम्माँ साहिबा अलैहिर्रमा दरयाफत फरमाती कि आज अखतर मियाँ नहीं आये हैं। उन से कहो कि रोजाना आया करे। हजरत इन को बहुत पसन्द फरमाते हैं।”

ताजुशरीआ जब भी फतवा की इस्लाह के लिए हाजिरे खिदमत होते तो हजरत आप को अपने करीब बैठते, फतवा मुलाहिजा फरमाते और ज़रूरत के तेहत कुछ इजाफा या तरमीम व तदलील फरमा कर दस्तखत फरमा देते, यह मामूल बरसों रहा। और हजरत के अय्यामे अलालत दफतरी कामों, दारुलउलूम मजहर इस्लाम और सन्द खिलाफत व इजाजत पर दस्तखत करने और महर की तमाम तर जिम्मा दारियाँ आप के सुपुर्द फरमा दी थीं। जिस को आप ने बहुस्न व खुबी अन्जाम दिया। आप खुद अपने फतवा नवैसी की इब्तिदा यूँ तहरीर फरमाते हैं।

“मैं बचपन से ही हजरत(मुफती आजम)से दाखिले सिलसिला हो गया हूँ, जामिआ अजहर से वापसी के बाद मैंने अपनी दिलचस्पी की बिना पर फतवा का काम शुरू किया। शुरू शुरू में मुफती सैयद अफजल हुसैन साहब अलैहिर्रहमा और दूसरे मुफ्तियाने किराम की निगरानी में मैं यह काम करता रहा। और कभी कभी हजरत की खिदमत में हाजिर हो कर फतवा दिखाया करता था। कुछ दिनों के बाद उस काम में मेरी दिलचस्पी ज़्यादा बढ़ गई और फिर मैं मुस्तकिल हजरत की खिदमत में हाजिर होने लगा। हजरत की तवज्जोह से मुख्तसर मुद्दत में उसकाम में मुझे

वह फैंज हासिल हुआ कि जो किसी के पास मुद्दतों बैठने से भी न होता।"

(माहनामा इस्तिफात कानपुर स.151 रजबुलमुबारक 1403 हिजरी 1983 ई.)

ताजुशरीआ ने राकिमुस्सुलूर के एक सवाल के जवाब में फरमाया कि : मैं ने दारुलउलूम मन्ज़र-ए-इस्लाम में पढ़ा और पढ़ाया,जामिआ अजहर में भी पढ़ा,शुरु से ही मुझे मुतालअ का बहुत शौक था अपनी दरसी किताबों के अलावा शुरुह व हवाशी और गैर मुतअल्लिक किताबों का रोजाना कसरत से मुतालअ करता,और खास खास चीजों को डाइरी पर नोट कर लिया करता था। उसके अलावा सब से अहम बात यह है कि मुझे जो कुछ भी मिला वह हुजूर मुफती-ए-आजम कुददुस सिराहु की सोहबत व इस्तिफादा से हासिल हुआ। उनके एक घन्टा की सोहबत इस्तिफादारात और इस्तिफादा सालों की मेहनत व मुशक्कत पर भारी पड़ते थे। मैं आज हर जगह हुजूर मुफती-ए-आजम का इल्मी व रुहानी फ़ैजान पाता हूँ। आज जो मेरी हैसियत है वह उन्हें की सोहबत किमया असर का सदका है।

तकरीबन चौबीस साल से मुसलसल मुफती आजम कुदिसा सिराहु के उस मनसब को बहुसन व खूबी अन्जाम दे रहे हैं ताजुशरीआ के फतावा इकसाये आलम में सनद का दर्जा रखते हैं। एक अन्दाजे के मुताबिक ता दम तहरीर फतावा के रजिस्ट्रों की तअदाद 31 से मुतजावज हो गई है।

मर्कजी दारुलइफ़ता का कियाम:

1981 ई.में ताजदारे अहले सुन्नत हुजूर मुफती-ए-आजम कुददुस सिराहु के इन्तिकाल के बाद आला हज़रत इमाम अहमद रजा कादरी फ़ाजिल बरेलवी के दौलत कदा पर(जहाँ ताजुशरीआ की मुस्तक़िल सुकूनत है) मर्कजी दारुलइफ़ता की बुनियाद डाली,1982 ई.में घेर पर ही मसाइल के जवाबात एनायत फरमाते थे। बाज़ाबता तौर पर किसी इदारा की बुनियाद नहीं पड़ी थी,मगर उलमा व मशाइख और अवामे अहले सुन्नत की ज़रूरत का खियाल करते हुये"मर्कजी दारुलइफ़ता"के कियाम का फैसला किया।

उस वक्त हज़रत रोज़ाना दारुल इफ़ता में जलवा अफरोज होते और आप ने मौलाना मुफती काज़ी अब्दुरहीम बस्तवी,मौलाना मुफती मुहम्मद नाजिम अली कादरी बारा बंकी,मौलाना मुफती हबीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी को मुफती की हैसियत से मर्कजी दारुलइफ़ता में मुक़रर फरमाया। फतावा को रजिस्टर में नक़ल की ख़िदमत के लिए मौलाना अब्दुलवहीद ख़ाँ बरेलवी को मामूर किया गया। मौलाना अब्दुल वहीद बरेलवी मरहूम ने 1983 ई से 2005 ई तक फतावा की नक़ल का काम किया। आज मर्कजी दारुलइफ़ता में मौलाना के हाथ से मुन्दर्जा फतावा के 80 /रजिस्टर होंगे। मौजूदा वक्त में मर्कजी दारुलइफ़ता से जारी फतावा की हैसियत मुल्क व बैरुने ममालिक में हर्फ़ आखिर का दर्जा में हैं। जिस मसन्द इफ़ता की बुनियाद मुजाहिद जंग आज़ादी मौलाना मुफती रज़ा अली ख़ाँ बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने रखी थी वह आज तक बारौनक है।

अजदवाजी जिन्दगी:

जानशीन मुफती आजम का अक्द मसनून हकीमुलइस्लाम मौलाना हुसनेन रजा बरेलवी अलैहिर्रहमा की दुखतरनेक अखतर सालेह सीरत के साथ 3 नवम्बर 1968 ई शअवानुलमुअज्जम 1388 हिजरी बरोज इतवार को महल्ला कांकर टोला पुराना शहर से हुआ, जिन से फिलहाल एक साहबजादा मखदूम गिरामी मौलाना अरजद रजा कादरी बरेलवी और पाँच साहबजादयाँ तवल्लुद हुये जिन में सब की शादियाँ हो चुकी हैं।

अल्लाह तबारुक व तआला आप की औलाद अमजाद को सलफे सालिहीन और खान्दान रजा का नमूना बनाये और साहबजादा गिरामी को वालिदे बुजुर्ग गवार ताजुशरीआ का सही मअनों में जानशीन और काइम मकाम बनाये (आमीन)

हज व जियारत

ताजुशरीआ मुफती मुहम्मद अखरत रजा अजहरी ने पहला हज 1403/4 सितम्बर 1983 ई., दूसरा हज 1405/1985 ई. तीसरा हज 1406 हिजरी 1986 ई. में अदा फरमाये। और मुतअदिद बार उमरा से भी फ़ैजयाब हुये।

नस्बन्दी के खिलाफ़ फ़तवा :

श्रीमती इंद्रागौधी सायिक वजीर-ए-आजम हिन्द का मिजाज आमराना था, उनके दौरे इक्तिदार में अवाम पर जुल्म व जबर किया गया, कांग्रेस पार्टी की सारी कुव्वत का नुक्ता, इरतिकाब सिर्फ और सिर्फ इंद्रागौधी की जात थी।

उन्होंने यह सब बिला शिरकत गैर इक्तिदार पर अपनी गिरफ्त काइम रखने के लिए ही किया था। वह सियासी मुखालिफीन को बे दर्दी से कुचल देने के लिए सख्त से सख्त इकदाम करने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करती थीं। इंद्रागौधी के साथ उन के बेटे श्री संजें गौधी का ताना शाही नज़रिया पसे पुशत काम कर रहा था। 1975 ई. में पुरे मुल्क में हंगामी हालात का एलान कर दिया गया, तमाम शहरियों के बुनियादी हुकूक सलब कर लिए गये, रकियों को कैदे सलासिल में जकड़ कर नजरे जिन्दा कर दिया गया, "मिसा" जैसे जाबिर कानून का नाफिजुलअमल कर दिया गया। इन तमाम हालात के साथ ही दो से ज्यादा बच्चा पैदा करने पर सख्ती से पाबन्दी आइद कर दी गई और उन लोगों पर नस्बन्दी करना ज़रूरी करार दे दिया। पुलिस अवाम को जबरन पकड़ पकड़ कर नस्बन्दी करा रही थी, उसी इसना में नस्बन्दी के जवाज या अदमे जवाज पर शरई नुक्ता नज़र जानने और अमल करने के लिए दारुलइफ़ता बरेली से अवाम ने रजुअ करना शुरू कर दिया। दूसरी तरफ़ दैबन्द के दारुलइफ़ता बरेली से काशी मुहम्मद तैब मोहतमिम दारुलउलूम दैबन्द ने नस्बन्दी के जाइज़ होने का फतवा दे दिया। मुल्क की हेजानी कैफ़ियत और उम्मत मुस्लिमा में इन्तिशार को देखते हुये जाबिर व जालिम हुक्मरों के खिलाफ़ ताजदार अहले सुन्नत हुज़ूर मुफती-ए-आजम कुददुस सिरहु के हुक्म पर ताजुशरीआ ने नस्बन्दी के हराम व नाजाइज़ होने का फतवा सादिर

फरमाया। इस फतवा पर हुजूर मुफ्ती-ए-आजम के अलावा हजरत मौलाना मुफ्ती काजी अब्दुरहीम बस्तवी, मौलाना मुफ्ती रियाज अहमद सीवानी के दस्तखत हैं।

फतवा की इशाअत के बाद हुकूमत ने इस बात के लिए दबाओ डाला कि यह फतवा वापस ले लिया जाये मगर हजरत ने फतवा से रुजूअ करने से इन्कार कर दिया और नुमाइन्दगाने हुकूमत से साफ साफ कह दिया गया कि फतवा कुरआन व हदीस की रौशनी में लिखा गया है किसी भी सूरत में वापस नहीं लिया जा सकता।

हक गोई व बे बाकी :

अल्लाह रब्बुलइज्जत ने जानशीन मुफ्ती आजम को जिन गोनोंगों सिफात से मुत्तसिफ किया है। इन सिफात में एक हक गोई और बेबाकी है। आप ने कभी भी सदाकत व हक्कानियत का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। चाहे कितने ही मसलिहत के तकाजे क्यों न हों। चाहे कितने ही कैद व बन्द, मसाइव व आलाम और हाथों में हथकड़ियाँ पहनना पड़ी, कभी किसी को खुश करने के लिए उसकी मनशाह के मुताबिक फतवा नहीं तहरीर फरमाया। जब लिखी कोई फितरी तहरीर फरमाया तो अपने अस्ताफ व अपने आबा व अजदाद के कदम तकदुम हो कर तहरीर फरमाया। जिस तरह जदे अमजद इमाम अहमद रजा फाजिल बरेलवी और मुफ्ती आजम मौलाना मुस्तफा रजा नूरी ने बे खौफ व खतर फतवे तहरीर फरमाये। इसी तरह अपने अजदाद के नक्शे कदम पर चलते हुये जानशीन

मुफ्ती आजम नजर आते हैं। इस हक गोई के शवाहिद आज आप के हजारों फतवा हैं जो मुल्क और बैरुने मुल्क में फैले हुये हैं।

सऊदी मुजालिम की कैफियत जानशीन मुफ्ती आजम की जबानी

जानशीने हुजूर मुफ्ती-ए-आजम अपनी शरीक हयात (पीरानी अम्मा साहिबा) के साथ हज व जियारत के लिए तशरीफ ले गये थे, अरफात से वापस लौटने के बाद सऊदी हुकूमत ने रात के वक्त मक्का मुअज्जमा में आप को कियात गाह से गिरफ्तार कर लिया, बिला वजह ग्यारह (11) दिल जेल में रख कर बगैर मदीना शरीफ की जियारत कराये हिन्दुस्तान भेज दिया। मन्दर्जा जेल सुतूर में हजरत की जबानी पूरी रिपोर्ट पेश है :

बम्बई 13/ सितम्बर 1986 ई./ 1407 हिजरी में इब्राहीम मिरचन्ट रोड मीनारा मस्जिद बम्बई के करीब रजा एकडमी बम्बई के जेरे एहतिमां जानशीन मुफ्ती आजम के मक्का मुकर्रमा में बेजा गिरफ्तारी पर सऊदी हुकूमत के खिलाफ एक शान्दार एहतिजाजी इजलास मुन्अफिद हुआ जिस की सदारत मुहदिस कबीर मौलाना जियाउलमुस्तफा रजवी अमजदी ने फरमाई, बम्बई के उलमा, अइम्मा मसाजिद के एलावा बाहर से आये हुये अकाबिर उलमा ने शिरकत फरमाई। मजमअ जो तकरीबन पचास हजार अफराद पर मुश्तमिल था। जोश एहतिजाज में सऊदी हुकूमत के खिलाफ नअरे बलन्द करता रहा। अखीर में जानशीन मुफ्ती आजम ने सऊदी हुकूमत में अपनी

गिरफ्तारी और जियारत मदीना मुनव्वरा के बगैर वापस किए जाने से मुतअल्लिक अपना यह मुख्तसर सा बयान दिया जो दर्ज जैल है।

31 अगस्त 1986 ई शब में तीन बचे अचानक सऊदी हुकूमत के सी आई डी और पुलिस के लोग मेरी कियाम गाह पर आये, और मुझे बेदार कर के पासपोर्ट तल्ब किया और फिर मेरे सामान की तलाशी का मुतालबा किया। मेरे साथ मेरी पर्दा नशीन बीबी थीं। मैंने उन्हें बाथ रूम में भेजा। फिर सी आई डी ने बाथ रूम को बाहर से मुकफल कर दिया। और वह लोग सिपाहियों के साथ मेरे कमरे में दाखिल हुये। मुझे रेलवालोर के नशाने पर हरकत न करने की वारनिंग दी। मेरे सामान की तलाशी ली। मेरे पास हज़रत मौलाना सैयद अलवी मुहजुल्लाहु की दी हुई चन्द किताबें, और कुछ किताबें आला हज़रत की और दलाइलुलखैरात थी, उन तमाम किताबों को अपने कबजा में लिया। मुझ से टेलिफोन की डाइरी मांगी। जो मेरे पास न थी। मेरा, मेरी बीबी का और मेरे साथियों के पासपोर्ट टिकट और वह किताबें हमरा ले कर मुझे सी आई डी आफिस लाये। और एके बाद दीगर मेरे रफका, महबूब और याकूब को भी उठालाये।

मुझ से रात में रस्मी गुफ्तगु के बाद पहला सवाल यह किया कि आप ने जुमा कहाँ पढ़ा, मैंने कहा कि मैं मुसाफिर हूँ मेरे ऊपर जुमा फर्ज नहीं। लिहाजा मैंने अपने घर में जोहर पढ़ी। मुझ से पूछा कि तुम हर्म में नमाज़ नहीं

पढ़ते हो ? मैंने कहा मैं हर्म से दूर रहता हूँ, हर्म में तवाफ़ के लिए जाता हूँ इसलिए मैं हर्म में नमाज़ नहीं पढ़ सकता। मुझ से कहा कि आप क्यों अपने महल्ला की मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ते, मैंने कहा कि बहुत से लोग हैं जिन्हें मैं देखता हूँ कि वह महल्ला की मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ते, और बहुत से लोगों के मुतअल्लिक मुझे महसूस होता है कि वह सिर से नमाज़ ही नहीं पढ़ते तो मुझ से ही क्यों बाज़ पर्स करते हैं। मुझ से फिर भी इसरार किया गया तो मैंने कहा कि मेरे मजहब में और आप लोगों के मजहब में इख़िलाफ़ है, आप हम्बली कहलाते हैं और मैं हन्फी हूँ और हन्फी मुकतदी की रिआयत गैर हन्फी इमाम अगर न करे तो हन्फी की नमाज़ सही न होगी। इस वजह से मैं नमाज़ अलाहिदा पढ़ता हूँ। मुझ से हज़रत अल्लामा सैद अलवी मालकी मुहजुल्लाहु की किताबों के मुतअल्लिक पूछा कि यह तुम्हें कैसे मिली? मैंने कहा कि यह किताबें मुझे उन्होंने चन्द रोज़ पहले दी हैं। जब मैं उन से मिलने गया था। मुझ से सवाल किया कि यह पहली मुलाकात थी। मैंने कहा हाँ, यह पहली मुलाकात थी। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरेलवी की चन्द किताबें देख कर जो नअत और मसाइल के मुतअल्लिक थीं पूछा उन से तुम्हारा किया रिशता है? मैंने कहा कि वह मेरे दादा थे।

उस मुख्तसर सी इन्कुवारी के बाद मुझे रात गुज़र जाने के बाद फजिर के वक़्त जेल भेज दिया गया। दस बजे फिर सी आई डी से गुफ्तगु हुई। उस ने मुझ से पूछा कि

हिन्दुस्तान में कितने फिरके हैं। मैंने शीआ, कादयानी, वगैरा चन्द फिर्के गिनाये और मैंने वाजेह किया कि इमाम अहमद रजा खॉ फाजिले बरेलवी ने कादयानियों का रद किया है। और उस के रद में छः रिसाले **جزاء الله على قهر السوء العقاب** लिखे हैं। हम पर कुछ लोग यह तोहमत लगाते हैं और आप को यह बताया है कि हम और कादयानी एक हैं, यह गलत है और वही लोग हमें बरेलवी कहते हैं जिस से यह वहम होता है कि बरेलवी किसी नये मजहब का नाम है। ऐसा नहीं है। बल्कि हम अहले सुन्नत व जमाअत हैं।

सी आई डी के पूछने पर मैंने बताया कि इमाम अहमद रजा फाजिल बरेलवी ने किसी नये मजहब की बुनियाद नहीं डाली बल्कि उनका मजहब वही था जो सरकार मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और सहाबा व ताबेईन और हर जमाने के सालिहीन का मजहब है, और यह कि हम अपने आप को अहले सुन्नत व जमाअत कहलवाना ही पसन्द करते हैं। और हमें इस मकसद से बरेलवी कहना कि हम किसी नये मजहब के पैरोकार हैं हम पर बहुतान है, सी आई डी के पूछने पर मैंने वहाबी और सुन्नी का फर्क मुख्तसिर तौर पर वाजेह किया। मैंने कहा कि वहाबी हुजूर अलैहिस्सलात वस्सलाम के इल्मे गैब और उनकी शफाअत और उन से तवस्सुल और इस्तिमदाद और उन्हें पुकारने के मुन्किर हैं। और उन उमूर को शिर्क बताते हैं। जबकि हमारा यह

अकीदा है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से तवस्सुल जाइज़ है, और उन्हें पुकारना भी, और यह कि वह सुनते भी हैं और अल्लाह के बताये से गैब को भी जानते हैं। और अल्लाह ने उन को शिफाअत का मन्सब अता फरमाया, और इल्मे गैब पर सी आई डी के पूछने पर आयात कुरआन से मैंने दलीलें काइम की, और यह साबित किया कि नबूवत इत्तिलाअ अलल गैब ही का नाम है, और नबी वही है जो अल्लाह के बताने से इल्मे गैब की खबर दे। और यह कि नबी के वास्ते से हर मोमिन गैब जानता है जैसा कि कुरआने मुकददस में मन्सूस है। सी आई डी के पूछने पर मैंने बताया कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाद विसाल सभी गैब की खबर है। इसलिए कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नबुव्वत बाकी है और नबुव्वत गैब जानने ही को कहते हैं। फिर यह कि आयतों में ऐसी क़ैद नहीं है जिस से यह ज़ाहिर हो कि बाद विसाल सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इल्मे गैब नहीं जानते हैं। एक और नशिस्त में सी आई डी के मुतालबे पर मैंने तवस्सुल की दलील में **واستغوا اليه الوسيلة** आयत पढ़ी, और यह बताया कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तवस्सुल मिन्जुमला आमाल सालेहा है और यह कि किसी अमल का सालेह होना और वसीला होना इस शर्त पर मौकूफ है कि वह मकबूल हो और सरकार रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बिला शुबह मकबूल बारगाहे उलूहियत हैं, बल्कि सैयदुलमकबूलिन

हैं तो उन से तवस्सुल बदर्जाए ऊला जाइज है, और तवस्सुल शिर्क नहीं।

सी आई डी के कहने पर मैंने मजीद कहा कि किसी से उस तौर मदद मांगना कि अल्लाह के सिवा उस को मुस्तकिल और फाइल समझे शिर्क है और हम इस तौर पर किसी से मदद मांगने के काइल नहीं हैं। हाँ अल्लाह की मदद का वसीला जान कर किसी मकबूल वारेगाह से मदद मांगना हर गिज़ शिर्क नहीं है। सी आई डी के एक सवाल के जवाब में कहा कि हम में और वहाबियों में यह फर्क है कि वह हमें तवस्सुल वगैरा उमूर की बिना पर काफिर व मुशरिक बताते हैं, लेकिन हम उन को महज़ इस बिना पर काफिर व मशरिक नहीं कहते (यानी उस के वजूहात और हैं)।

दूसरे दिन मेरे उन बयानात की रोशनी में सी आई डी ने मेरे लिए एक इकरार नामा उस ने खुद लिख कर मुझे सुनाया, जो यूँ था। मैं फलों इब्ने फलों बरेलवी मज़हब का मतीअ हूँ मैंने एअतिराज किया कि मैं बारहा यह कह चुका हूँ कि बरेलवी कोई मज़हब नहीं है। और अगर कोई नया मज़हब बनाम बरेलवी है तो मैं उस से बरी हूँ। आगे इकरार नामे में उसने यूँ लिखा कि मैं इमाम अहमद रज़ा का पैरवहूँ और बरेलवियों में से एक हूँ और हमारा अकीदा है कि सरकार से तवस्सुल, इस्तिगासा और उन को पुकारना जाइज है। और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम गैब जानते हैं। और वहाबी उन उमूर को शिर्क बताते हैं, और यह कि मैं उन के पीछे इस वजह से नमाज

नहीं पढ़ता हूँ कि हम सुन्नियों को मुशरिक बताते हैं। इकरारनामे के आखिर में मेरे मुतालबे पर उस ने यह इज़ाफा किया कि बरेलियत कोई नया मज़हब नहीं है और हम लोग अपने आप को अहले सुन्नत व जमाअत कहलवाना ही पसन्द करते हैं। फिर मुख्तलिफ नशिस्तों में बार बार वही सवालात दोहराये, बाद में मुझ से मेरे सफ़र लन्दन के बारे में पूछा और कहा कि किया वहाँ आप ने किसी कान्फरन्स में शिरकत की है। मैंने जवाब दिया कि कान्फरन्स हुकूमत के पैमाने और सियासी सतह पर होती है हम लोग न. सियासी हैं, न किसी हुकूमत से हमारा राबता है।

सी-आई-डी के पूछने पर मैंने बताया कि लन्दन के उस इजलास में जिस में शरीक था। बनाम बरेलियत मसाइल पर मुबाहिसा न हुआ। बल्कि इत्तिहादे इस्लामी और तन्जीमुल मुस्लिमीन पर तकारीर हुयें और उस जलसा का खर्च वहाँ के सुन्नी मुसलमानों ने उठाया, और उस में यह मुतालबा किया गया कि इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी के पैर व अहले सुन्नत व जमाअत को राबता आलमे इस्लामी में नुमाइन्दगी दी जाये। जिस तरह नदवियों वगैरा को राबता में नुमाइन्दगी हासिल है।

सी-आई-डी-के पूछने पर मैंने बताया कि यह तजवीज़ बिलइत्तिफाक राये पास हो गई थी। तीसरी नशिस्त में जब दो नशिस्तों की तफतीश खत्म हो चुकी और मेरा इकरार नामा खुद तैयार कर चुके तो मुझ से एक बड़े

सी आई डी आफिसर ने कहा कि मैं आप का आप के इल्म, उम्र और शख्सियत की वजह से एहतिराम करता हूँ और आप से मखासूस औकात में दुआओ का तालिब हूँ। गिरफ्तारी का सबब मेरे पूछने पर उसने बताया कि आप का कैसे मअमूली है। वरना उस वक्त जब सिपाही हथकड़ी डाल कर आप को लाया था मैं आप की हथकड़ी न खिलवाता।

मुख्तसर यह कि मुसलसल सवालालात के बावजूद मेरा जुर्म मेरे बार बार पूछने के बाद भी मुझे न बताया, बल्कि यही कहते रहे कि मेरा मुआमला अहमियत नहीं रखता लेकिन उसके बावजूद मेरी रिहाई में ताखीर की और बगैर इजहार जुर्म मुझे मदीना मुनव्वरा की हाजिरी से मौकूफ रखा। और ग्यारह दिनों के बाद जब मुझे जद्दा रवाना किया गया तो मेरे हाथों में जद्दा एरपोर्ट तक हथकड़ी पहनाये रखी, और रास्ते में नमाज जोहर के लिए मौका भी न दिया गया, उस वजह से मेरी नमाज जोहर कज़ा हो गई।

बैनललअकवामी एहतिजाजी मुजाहिरी :

सितम्बर 1986 ई. 1407 हिजरी में दौरान हज जानशीन मुफती आजम को हुकूमत सऊदी अरब ने मक्का मुकर्रमा में बिला जुर्म सिर्फ़ ग़लबा-ए-नजदियत की खातिर गिरफ्तार कर के ग्यारह दिन तक कैद व बन्द में रखा। और मजीद सितम यह कि उन्हें दियारे हबीबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हाजिरी से भी

महरूम कर दिया। लेकिन जानशिन मुफती-ए-आजम अपने मौकफ और मसलक पर काइम रहे और उनके पाये सिबात में लगज़िश नहीं आई।

आप की गिरफ्तारी से आलमे इस्लाम में ग़म व गुस्सा की एक लहर दोड़ गई थी। और न सिर्फ़ हिन्दुस्तान बल्कि बैरूने हिन्द वेशतर इस्लामी और गैर इस्लामी मुमालिक में सवाद आजम अहले सुन्नत के एहतिजाजात का लम्बा सिलसिला शुरू हो गया था। अख़बारों व रसाइल ने भी जानशीन मुफती-ए-आजम की उस बेजा रिगफ्तारी की मज़्मत की। वर्ल्ड इस्लामिक मिशन बरतानिया, रज़ा एकेडमी मुम्बई, सुन्नी जमीअतुलउलमा जमीआ उलमा-ए-इस्लाम पाकिस्तान और छोटी बड़ी अन्जुमनों व जमाअतों ने जबर दस्त एहतिजाजी मुजाहिरे पूरे बर्रे सगीर में किए। और हुकूमते सऊदी से मुआफी का मुतालबा किया।

शाह फ़हद, शहजादा अब्दुल्लाह और तर्की इब्ने अब्दुलअजीज़ से मुलाकात:

जानशीन-ए-मुफती-ए-आजम की गिरफ्तारी के रदे अमल पर काइदीने मिल्लत ने लन्दन में सऊदी हुकूमत के बादशाह शाह फ़हद, शहजादा अब्दुल्लाह (मौजूदा बादशाह) और तर्की इब्ने अब्द अल अजीज़ वजीर-ए-ममलिकत से तवील मुलाकाते की, जिन में अल्लामा अरशदुलकादरी मौलाना अब्दुस्सत्तार ख़ाँ नियाज़ी, मौलाना शाह अहमद नूरानी, मौलाना सय्यद गोला मुस्सय्यदैन, मौलाना शाहिद रज़ा नईमी, शाह मुहम्मद जीलानी सिद्दीकी, मौलाना यूनुस का

शमीरी, मौलाना अब्दुलवहाब सिद्दीकी और शाह फरीदुल इक और दीगर उलमा अहले सुन्नत ने हुक्मरान सऊदिया को पुर जोर अन्दाज में गिरफ्तारी पर एहतिजाज दर्ज कराया और हरमैन शरीफैन में हर मसलक के लोगों को अपने अकीदे के मुताबिक नमाज पढ़ने और दीगर अरकान करने पर मुतालबा किया, जिस पर उनसरबराहाने ममलुकत ने फौरन मन्ज़ूर कर लिया और उम्मत मुस्लिमा के लिए सऊदी हुक्मत ने एक एलानिया जारी किया कि:

“हरमैन शरीफैन में हर मसलक व मजाहिब के लोग अब आजादाना अपने तौर व तरीकों से एबादत करेंगे। कुन्जुलईमान पर पाबन्दी मेरे हुक्म से नहीं लगाई गई है, मुझे इस का इल्म भी नहीं है। अब मीलाद की मुहाफिल आजादाना तरीका पर होंगी, किसी पर मुसल्लत नहीं किया जायेगा। सुन्नी हेजाज़ किराम के साथ कोई ज़्यादती नहीं होगी।”

रोज़ नामा अलएहराम काहिरा 12/ रबीउलअव्वल 1407 हिजरी 1987 ई. रोजनामा जंग लन्दन 3/ मार्च 1987/1407 हिजरी बालाआखिर कुरबानी रंग लाई अहले सुन्नत के एहतिजाजात ने हुक्मत सऊदिया को यह सोचने पर मजबूर कर दिया और लन्दन में सऊदी फरमाँ रवा शाह फहद को यह एलान करना पड़ा कि ‘हरमैन शरीफैन में हर मसलक के लोगों को उन के तरीके पर एबादात करने की आजादी होगी’ अरकान वलडइस्लामिक मिशन बर तानिया ने लन्दन में शाह फहद और उन के भाई तुर्की इब्ने अब्दुलअजीज़ से

मुलाकात कर के इख़िताफ़ी मसाइल पर मजाकिरा के सिलसिला में गुफ्तगु की, अल्लामा अरशदुलकादरी रजवी ने सऊदी सफीर को बज़बान अरबी एक एहतिजाजी मैमूरन्डम भी दिया।

21 मई 1987 ई. 1407 हिजरी को सऊदी सफ़ारत खाना देहली से जानशिने मुफ़ती आजम के दौलतकदा पर एक फ़ौन आया और खुद सफीर सऊदिया ने आप से मुआफ़ी मांगते हुये यह ख़बर दी कि।

हुक्मत सऊदी अर्ब ने आप को ज़ियारत मदीना मुनव्वरा और उमरा के लिए एक माह का खुसूसी वीज़ा दिया है।

जानशीन-ए-मुफ़ती आजम 24 मई 1987 ई. 1407 को सऊदी फ़्लाइट से वाया जद्दा, मदीना मुनव्वरा पहुँचे। सऊदी सफ़ारत खाना ने आप की आमद की इत्तिलाअ बजरीआ टेलिकस जद्दा और मदीना हवाई अड्डों पर देदी थी। सऊदी सफीर मिस्टर फ़वाद सादिक मुफ़ती ने इस मुआमला में काफी दिलचस्पी ली। जानशीन मुफ़ती आजम उमरा और मदीना मुनव्वरा की ज़ियारत से मुशरफ़ हो कर सऊदी में सौला रोज़ कियाम के बाद वतन वापस आये। देहली हवाई अड्डा और बरेली जंक्शन पर हज़ारों मुसलमानों ने पुर जोश इस्तिकबाल और ख़ैरमकदम किया।

तक़वा शिआरी:

आज कल पिर फ़कीर और आलिमों और आमिलों के इर्द गिर्द औरतों का हुजूम लगा रहना आम सी बात है,

जहाँ देखिए मुंह खोले चलती फितरी नज़र आयेंगी। हया नाम की कोई चीज़ ही बाकी नहीं रह गई है, मगर जानशीने मुफ्ती आजम की तक़्वा शिअरी मुलाहिजा फ़रमायें।

1407 हिजरी की बात है कि जनान ख़ाने में औरतें ज़ियारत और बैअत के लिए हाज़िर हैं। जब आप जनान ख़ाने में तशरीफ़ ले गये तो चन्द औरतों के निकाब उलटे और मुंह खुले हुये थे। आप ने फ़ौरन अपनी आँखें बन्द कर लीं और फ़रमाया "निकाब डालो निकाब डालो, ला हौला वला कुव्वता इल्लाह बिल्लाहिल अलियुलअज़ीम।"

(मुफ्ती आजम और उन के खुलफा जिल्द अव्वल स:50 मअबूआ रज़ा एकेडमी 1990 ई)

सब औरतों ने निकाबें डाल ली, फिर बैअत फ़रमाया शरीअत की पास्दारी हो तो ऐसी हो। सफ़र चाहे जैसा हो, हवाई जहाज़ से हो या ट्रेन या गाड़ी से नमाज़ का वक़्त होते ही नमाज़ की अदायेगी के लिए बे चैन हो जाते हैं। अकसर राकिमुस्तुतुर को हुक्म फ़रमाते कि मुसल्ला बिछाओ, नमाज़ पढ़ूँगा, चाहे एरपोर्ट हो या स्टेशन, नमाज़ तो कज़ा नहीं होती। नमाज़ पढ़ने की सभी को ताकीद फ़रमाते। हज़रत राकिम से अकसर पूछते कि नमाज़ पढ़ी कि नहीं, अगर मालूम हो गया कि नमाज़ नहीं पढ़ी तो सख़्त नाराज़ होते। मुझे ख़ुब याद है कि 1991ई से 2006 तक तकरीबन 15 साल तक मैं ने हज़रत के साथ पूरे मुल्क का सफ़र किया मगर नमाज़ हज़रत की कोई कज़ा नहीं हुई।

अल्लाहुअकबर।

ख़िलाफ़त व इजाज़त की शानदार तक़रीब:

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरेलवी की ख़िलाफ़त व इजाज़त की तक़रीब, एक हसीन और शानदार तक़रीब थी, दारुलउलूम मज़हर-ए-इस्लाम बरेली के सेह रोज़ा इजलास 13/14/15/जनवरी 1962 ई/6/7/8 शअबानुलमुअज़्ज़म 1381 हिजरी की सदारत और सरपरस्ती ताज़दारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म कुददुस सिरुहु ने फ़रमाई।

हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म कुददुस सिरुहु ने मौलाना साजिद अली ख़ाँ बरेलवी मोहम्मिम दारुलउलूम मज़हर-इस्लाम को हुक्म दिया कि 15/जनवरी 1962 ई./8/शअबान1381 हिजरी को सुबह 7 बजे घर पर महफ़िले मीलाद शरीफ़ का इन्फ़ेक़ाद किया जाये। मीलाद ख़्वाँ हज़ारात उलमा व मशाइख़ और तलबा मदारिस व फारिगुल्लहसील होने वाले तलबा की दअवत शिरकत दे दी जाये। शदीद सरदी के मोसम में कई हज़ार लोगों ने मीलाद शरीफ़ में तशरीफ़ लाये और ताज़ुशरीआ अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी को बुलवाया, अपने करीब बठाया, दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर जमीअ-ए-सलासुल आलिया कादरिया सहरवर्दिया, नक्शबन्दिया चिशितयाँ और जमीअ सलासुल अहादीस मुसलसल बिलअव्वलियत की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सर फ़राज़ फ़रमाया। तमाम औराद व वज़ाइफ़, आमाल व अशग़ाल, दलाइलुलख़ैरात, हज़बुलबहर, तअवीजात वगैरा वगैरा की इजाज़त मरहम्मत फ़रमाई।

इस मौके पर मुजाहिद मिल्लत मौलाना हबीबुर्रहमान अब्बासी रईस आजम उड़ीसा, बुरहाने मिल्लत मुफ्ती बुरहानुलहक जबल पूरी, मौलाना खलीलुर्रहमान मुहददसि अमरोहवी, अल्लामा मुश्ताक अहमद निजामी इलाहाबाद, मुफ्ती नजीरुलअकरम नईमी मुरादाबादी मौलाना मुहम्मद हसीन संभली, मौलाना अनवार अहमद शाहजहाँपुरी, मौलाना काजी शमसुद्दीन जाफरी जौनपुरी, मौलाना कमाल अहमत तुलशीपुरी, मौलाना शअबान अली हुब्बानी गोंडवी, सूफी अजीज अहमद बरेलवी वगैरा जैसे जय्यद उलमा मशाइख मौजूद थे। सभी हज़रत ने उठ उठ कर यक़े बाद दीये ताजुशरीआ को मुबारकबादियाँ दीं। (माहनामा नूरी किरन बरेली स:40, फरवरी 1962 ई/1381 हिजरी)

जानशीन मुफ्ती आजम को बचपन ही में हुज़ूर मुफ्ती आजम मुत्ता सिरहु ने बैअत फरमा लिया था और बीस साल के बाद खुद ही हुज़ूर मुफ्ती आजम ने मीलाद शरीफ की महफिल में ख़िलाफत व इजाजत से सरफराज फरमाया। जब हुज़ूर मुफ्ती आजम ने 15 जनवरी 1982 हिजरी 1381 हिजरी को ख़िलाफत अता फरमाई उस वक्त शमसुलउलमा मौलाना काजी शमसुद्दीन अहमद रजवी जअफरी अलैहिर्रहमा, बुरहानुलमिल्लत मुफ्ती बुरहानुलहक रजवी जबलपुरी अलैहिर्रहमा भी तशरीफ फरमा थे। मुफ्ती बुरहानुलहक रजवी जबलपुरी ने फरमाया कि हुज़ूर मुफ्ती आजम से मेरी गुफ्तगु इस वारे में हुई है, कि हुज़ूर मुफ्ती आजम ने फरमाया था कि जानशीन अपने वक्त

पर वही होगा जिसे होना है। सदरुशरीआ मौलाना अम्जद अली रजवी फ़ाज़िल बरेलवी से दरयाफत किया था कि हुज़ूर आप का जानशीन कौन होगा ? तो आला हज़रत ने हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमा के मुतअल्लिक़ फरमाया बड़े मौलाना, मैंने अर्ज़ किया। उन के बाद फरमाया मुसतफा (हुज़ूर मुफ्ती आजम) अर्ज़ किया उन के बाद फरमाया जीलानी, बशर्त इल्म व अमल की कैद, सुन्नियत आला हज़रत है। जब आला हज़रत ने नबीरा-ए-आला हज़रत मुफ़सिरे आजम हिन्द अलैहिर्रहमा को मुरीद किया तो शजरा पर तहरीर फरमाया, "खलीफा इन्शाअल्लाह बशर्त इल्म व अमल" यही रजिस्टर मुरीदीन में तहरीर फरमाया। हुज़ूर मुफ्ती आजम कुदिसा सिरहु ने अपने जानशीन के मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाया कि इस (अल्लामा मुहम्मद अख़्तर रजा ख़ाँ अज़हरी) लडके से बहुत उम्मीद है"।

हुज़ूर मुफ्ती-ए-आजम कुदिसा सिरहु ने आख़री जमाने में एक तहरीर जानशीने-मुफ्ती-ए-आजम को एनायत फरमाई और इस में अपना जानशीन और काइम मक़ाम बनाया,

14/15/नवम्बर 1984 ई को मारहरा मुत्तहरा में उर्स कास्मी की तकरीब में अहसनुलउलमा मौलाना मुफ्ती सैयद हसन मियाँ बरकाती सज्जादा नशीन ख़ानकाह बरकातिया मारहरा ने जानशीन मुफ्ती आजम का इस्तिक़बाल "काइम मक़ाम मुफ्ती-ए-आजम अल्लामा अज़हरी ज़िन्दा बाद" के नज़रा-ए-से किया और मजमअ

कसीर में उलमा व मशाइख और फुजला व दानिशवरों की मौजूदगी में जानशीन मुफ्ती-ए-आज़म को यह कह कर "फ़कीर आस्ताना आलिया कादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से काइम मक़ाम मुफ्ती आज़म अल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ साहिब को सिलसिला कादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम ख़िलाफ़त व इजाज़त से माज़ून व मजाज़ करता हूँ पूरा मजमा सुन ले, तमाम बरकाती भाई सुन ली, और यह उलमा-ए-किराम (जो उर्स में मौजूद हैं) इस बात के गवाह रहें"।

बअ़दोह अहसनूलउलमा मौलाना सैयद हसन मिया बरकाती महज़ुल्लाहु ने जानशीने मुफ्ती-ए-आज़म की दस्तारबन्दी की और नज़र भी पेश की।

सैयदुलउलमा मौलाना अश्शाह सैयद आले मुसतफ़ा बरकाती मारहरवी अलैहिर्रहमा ने जुमला सलासुल की इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमाई और ख़लीफ़ा इमाम अहमद रज़ा बुरहानेमिल्लत हज़रत मुफ्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी अलैहिर्रहमा ने भी तमाम सिलसिलों की ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

वालिद माजिद मुफ़िस्सरे आज़म हिन्द ने अपने फ़रज़न्दअरज़मन्द को कबल फ़रागत इल्म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का जानशीन बनाया और एक तहरीर भी एनायत फ़रमाई

रैहाने मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा बरेलवी साबिक मोहतमिम मन्ज़र इस्लाम अपनी इरादत में शाइअ

होने वाले "माहनामा आला हज़रत" में बउ़नवान "क़वाइफ़ दारुलउलूम" तहरीर फ़रमाते हैं। "यह तरीर उस ज़माने की है जब मफ़िस्सरे आज़म हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा बरेलवी कुदिसा सिरहु की तबीअत बहुत ज़्यादा अलील थी, और सारे लोगों को यह उम्मीद थी कि अब मौलाना इब्राहीम रज़ा जीलानी बरेलवी ज़ाहिरी दुनिया से रुख़सत हो जायेंगे, बवज़हे अलालत यह तबक्को नहीं कि अब ज़्यादा ज़िन्दगी हो, बिना बरीं ज़रूरत थी कि दूसरा काइम मक़ाम हो। लिहाज़ा अख़तर रज़ा सल्लमाहु को काइम मक़ाम व जानशीने आला हज़रत बनादिया गया, जानशीन का अमामा बाँधा गया, और इबा पहनाई गई। यह दस्तार और इबा और तलबा की दस्तार व इबा अहले बनारस की तरफ से हुई।"

(माहनामा आला हज़रत बरेली सं-32, दिसम्बर 1962ई 1382हिजरी)

तादादे मुरीदीन

फ़कीह-ए-इस्लाम अल्लामा मुहम्मद अख़तर रज़ा अज़हरी के मुरीदीन हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, मदीना मुनव्वरा, मक्का मुअज़्ज़मा बंगला देश, मुरिशश सिरीलंका, यूके, हाइलेन्ड, जुनूबी अफ़रीका, अमरीका ज़रमन, इंगलेन्ड, एराक़, ईरान, तुर्की, वगैरा ममालिक में लाखों की तअदाद में फैले हुये हैं। मुरीदीन में बड़े बड़े उलमा, मशाइख, सुलहा, शोअरा, मुफ़िकरीन, काइदीन, मुसन्नफ़ीन, रिसर्च इस्कालर, प्रोफ़िसर, डाक्टर और मुहक्कीन हैं जो आप की गुलामी पर फख़ करते हैं।

मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा नूरी बरेलवी कुदिसा सिरहु ने

अपने सामने लोगों को आप के हाथ पर बैअत करने के लिए हुक्म फरमाते, यहाँ तक ही नहीं। बल्कि मुफ्ती आजम हिन्द कुदिसा सिरहु ने अपने सामने लोगों की कसीर तअदाद को ताजुशरीआ के हाथ पर बैअत करवाया और बहुत से मकामात पर अपना जानशीन और काइम मकाम बनाकर रवाना किया। मजमा के मजमा ने आप के दरस्त मुबारक पर बैअत कबूल की। सिलसिला कादरिया बरकातिया रजविया की सब से ज्यादा इशाअत हुजूर मुफ्ती आजम के बाद ताजुशरीआ ही कर रहे हैं। उन दो बुजुर्गों ने सिलसिला को वसीअ से वसीअ तर कर दिया है।

इशके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

बारगाहे इलाही से जानशीन मुफ्ती-आजम को इशके नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का वाफिर हिस्सा अता हुआ है, इमाम अहमद रजा बरेलवी ने इशके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में गुम हो कर "हदाइके बख्शिश" का बेश बहा तोहफा कौम व मिल्लत को दिया। उन्हीं के हकीकी जानशीन ने इशके रसूल से सरशार हो कर "सफीना-ए-बख्शिश" का वह तोहफा-ए-नायाब कौम को दिया जिसके हर शेअर से इशके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम छलकता है, सफीना-ए-बख्शिश के अशआर पढ़िए और इशके रसूल में गुम हो जाइये। वसा ओकात यह मुशाहिदा हुआ कि अपना कलाम जब पढ़ते हैं तो वारफतगी सी छा जाती है। आँखें आँसूओं में डबडबाने लगती हैं। और नअत शरीफ पढ़ते वक़्त एक

खास कैफियत तारी हो जाती है।

शेअर व शाइरी और नमूना-ए-कलाम

जानशीन मुफ्ती-ए-आजम ने तीनों ज़बानों में शेअर व शाइरी में तबअ आजमाई की। उसकी यहाँ पर कद्रे वजाहत की जाती है। आप को ज़माना-ए-तालिबइल्मी में ही शेअर व शाइरी का शगफ़ हो गया था। मगर ज्यादा रुजहान उसकी तरफ़ न था। इब्तिदाई में शाइरी की इसलाह अपने असातिज़ा और वादिल माजिद से लेते रहे, ज़माना-ए-तालिबइल्मी की नेअमतेँ, नज़में "माहनामा आला हज़रत" में छपतीं रहीं। आस्ताना रजविया पर मुअक़िद होने वाले "मुशाइरे" में भरपुर हिस्सा लेते और आला कामयाबी होती, ताजुशरीआ और आप के बराबर अक्बर की शाइरी का मवाज़ ना भी होता। सुनने वालों का कहना है कि हर दो शख्स के कलाम में एक अलाहीदा ही चाशनी होती, आप को शेअरगोई का शौक ज़माना-ए-तालिब इल्मी से ही था। इन्नीस साल की उमर की एक नअत पाक के चन्द शेअर मुलाहिज़ा हों।

इस तरफ़ भी एक नजर महर दरख़्शान जमाल
हम भी रखते हैं बुरहत मुदत से अरमान जमाल
इक इशारे से किया शक़ माहे ताबाँ आप ने
मरहबा सद मरहबा सल्ले आला शाने जमाल
फ़र्श आँखों को बिछाओ रह गुज़र में आशिकों
हर तरफ़ देखेगे ऐसे जलवा-ए-शान जमाल
मर के मिट्टी में मिले वह बा खुदा बिलकुल ग़लत

मिस्ल साबिक अब भी हैं मरकद में सुलतान जमाल
 हासिदाने मुस्तफा को दीजिए अखतर जवाब
 दर हकीकत मुस्तफा प्यारे हैं सुलतान जमाल
 मार्च 1987 ई. 1407 हिजरी को एक हादसा में चौट
 आ जाने के बाद जानशीन मुफती-ए-आजम को कई रातें
 ठीक से नीन्द न आई। शब 10 मार्च 1987 ई को रात भर
 न सो सके, और उसी इजितराब के आलम में उन्होंने
 मन्दर्जा नअत अकदस कही।
 चन्द अशआर दर्ज जैल हैं :
 तलातुम है यह कैसा आँसूओं का दीदा-ए-तर में
 यह कैसी मौजें आई हैं तमन्ना के समन्दर में
 तजरसुस की करवटे क्यों ले रहा है कल्बे मुजतर
 मदीना सामने है बस अभी पहचान में दम भर में
 न रखा मुझ को तय्यबा की कफस में इस सितम गिर ने
 सितम कैसा हो बुलबुल पे यह कैद सितम गिर में
 सितम से अपने मिट जाओगे तुम खुद ऐ सितमगारो
 सुन्नियों हम कह रहे हैं वे खतर दोते सितम गिर में
 नबाते जलवा-ए-गाह नाज मेरे दीदा-ए-व दिल को
 कभी रहते वह इस घर में कभी रहते वह उस घर में
 मदीने से रहें खुद दूर उस को रोकने वाले
 मदीने में खुद अखतर मदीना चशम अखतर में
 जब जानशीने मुफती-ए-आजम को गुम्बदे खजरा
 की जियारत करे बगैर हिन्दुस्तान वापस भेजदिया गया तो
 हुकूमत सऊदिया के जुल्म व बरबरियत से मुतास्सिर हो

कर यह नअत पाक कही, इस मौका पर जब 17 फरवरी
 1987 ई को झर या (बहार) के एक जलसा में एक शाइर ने
 उसी जमीन में एक नअत पढ़ी थी। आप ने बरजस्ता स्टेज
 पर ही सात शेर कहे और बकिया अशआर ट्रेन में कहे।
 चौदह अशआर में से चन्द मुलाहिजा हो।
 दागे फुरकत तैबा कल्ब मुफमहल जाता
 काश गुम्बद खजरा देखने को मिल जाता
 मेरा दम निकल जाता उन के आस्ताने पर
 उन के आस्ताने की खाक में मैं मिल जाता
 मौत लेके आजाती जिन्दगी मदीने में
 मौत से गले मिल कर जिन्दगी में मिल जाता
 दिल पे जब किरन पड़ती उन के सब्जे गुम्बद की
 उसकी सब्जे रंगत से बाग बनके खिल जाता
 फुरकत मदीना ने वह दीए मुझे सदमे
 कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता
 दरपे दिल झुका होता इजान पाके फिर बढ़ता
 हर गुनाह याद आता दिल खजिल खजिल जाता
 मेरे दिल में बस जाता जलवा-ए-जार तैबा का
 दाग फुरकत तैबा फूल बन के खिल जाता
 उनके दरपे अखतर की हसरते हुई पूरी
 साइल दर अकदस कैसे मन्फ़ील जाता
 मौलाना अब्दुलहमीद रजवी अफरीकी हुजूर मुफती-ए-आजम
 की नअते पाक
 तू शम्भे रिसालत है आलम तेरा परवाना

तू माहे नबुव्वत है ऐ जलवा-ए-जानाना
हुजूर मुफ्ती आजम की मज्लिस में पढ़ रहे थे, जब यह
मकतअ पढ़ा

आबाद उसे फरमा वीरों है दिल नज्दी
जलवो तेरे बस जाये आबाद हो वीराना
तो हुजूर मुफ्ती-ए-आजम ने फरमाया कि बेहम्देही
तआला फकीर का दिल तो रौशन है अब उसको यूँ पढ़ो।
आबाद उसे फरमा वीराना है दिल नज्दी जलवे तेरे
बस जाये आबाद हो वीराना।

इस वक्त जानशीने मुफ्ती आजम इस मज्लिस में
रौनक अफरोज थे और फौरन बर जस्ता हुजूर मुफ्ती आजम
के सामने अर्ज किया। हुजूर मकतअ को इस तरह पढ़
लिया जाये।

सरकार के जलवों से रौशन है दिल नूरी
ता हश् रहै रौशन नूरी का यह काशाना
हुजूर मुफ्ती आजम कुद्दिसा सिरुहु ने यह मकता बहुत
पसन्द फरमाया और दाओं से नवाजा।

जानशीन-ए-मुफ्ती-ए-आजम ने अरबी ज़बान में
हुजूर मुफ्ती-ए-आजम के विसाल पर तारीख विसाल कही
चन्द शेअर मुलाहिजा हो।

ثوى المفتى العظام محمد
بدار فالكرام بها من دار
حوت في عقرها شمس الزمان
فامست من سنها مطلع الانوار

سماء الفضل بدر سمائنا
اياويه فينا كا سماء الممدار
سماء ته غابت فاظلمت الدجى
فمن توقوف موفى المحتار
رحيلك شيخى ثلثة اى ثلثة
بذالدين جلت عن الاطهار
سئلون اختر اخرج حلة سيدى
فقلت "عظيم الشان" ليتنا الدار

चन्द गैर मुस्लिम का कबूले इस्लाम:

ताजुशशीआ के दस्ते मुकद्दस पर मुशर्रफ बा इस्लाम
होने वालों की एक इजमाली फिह्रिस्त है, मगर यहाँ पर
चन्द नो मुस्लिमीन का तजकरा मुनासिब मालूम होता है।

कौमे कबूले इस्लाम "रियावार" नाम "गुलाब"
बादहु, "मुस्लिम रजवी" यह रहने वाले जबलपुर भोटा ताल
के हैं। बचपन के ज़माने में घर से निकल गये थे और
साधूओं की जमाअत में रहते रहे जवानी का आलम उसी
आलम में गुजारा, मुहम्मद मुस्लिम रजवी के साथियों में एक
साथी लड़का मुसलमान था। उसके हमराह बचपन के
जमाने में पढ़ा करते थे, और मजहबे इस्लाम की कुतुब
तजकरा उसने किया था। साधूओं में रह कर
जब सुकून नहीं पाया तो मजहबे इस्लाम की किताबों का
मुतालअ करना शुरू किया।

दरयाफ्त करने पर बताया कि मुझे उस में बहुत

सुकून मिला और मेरा दिल एक दम मुजतरब हो गया, कि मजहबे इस्लाम कबूल कर लूँ, फौरन बरेली शरीफ हाजिर हुआ। यहाँ पर चान्द जैसे चेहरे वाले एक शख्स को देखा। उनके बारे में मालूम किया कि यह कौन शख्स हैं। लोगों ने बताया कि यह हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुदिदसा सिर्रहु के जानशीन हैं। इस वजह से मेरा दिल और बे करार हुआ, मैंने अर्ज किया हुजूर आप के दस्त अकदस पर इस्लाम कबूल करना चाहता हूँ, फौरन जानशीन मुफ्ती-ए-आजम ने कलमा तैयबा पढ़ाकर इस्लाम में दाखिल किया, नीज सिलसिला कादरिया व रजविया में बैअत भी फरमाया।

नो मुस्लिम जनाब मुहम्मद अहसन रजवी(साबिका) नाम मस्टर जार्ज स्टेफन जो मअ फेन्ली ईसाई से मुसलमान हुये हैं। मुहम्मद अहसन रजवी कथोलिक चर्च नराइन गढ़ जिला अम्बाला (पंजाब) में एक मुबल्लिग स्पीकर और टीचर की हैसियत से काम करते थे। और उन्हें वहाँ काफी मुराआत हासिल थीं, तब्दीगी व तहरीरी कामों के एलावा उन के जिम्मा बाइबिल का दर्स और कुरआन, बाइबिल का तकाबुली मुतालअ कराना, नीज इस्लाम मजहब पर तन्कीद का काम भी सोंपा हुआ था। मुहम्मद अहसन रजवी उर्दू ज़बान व अदब में काफी दस्तर्स रखते हैं। फारसी और अरबी से भी वाक्फियत है। कुरआन मजीद बहुत अच्छी तरह से पढ़ते हैं और उन्हें कुरआन मुकदस की बहुत सारी आयतें और सूरेतें याद हैं। नीज उनकी मजहबी मालूमात भी काफी वसीअ हैं, और उन्हे इस बात पर फख्र है

और मुसरत भी, कि उन्होंने इस्लाम गौर व फिक्र के बाद कबूल किया है, और यह कि वह सही रास्ते पर आ गये हैं, और उन्होंने सच्चा मजहब और दीने फितरत कबूल कर लिया है।

1986 ई. 1406 हिजरी में जानशीने मुफ्ती-ए-आजम के हाथों पर मुसलमान हुये, और उन्हीं से दाखिल सिलसिला भी हुये, कुछ अथ्याम तक जानशीन मुफ्ती-ए-आजम के दौलत कदा पर कियाम पजीर रहे और दीनयात रोजा, नमाज़, इस्लामी तौर तरीके सिखे, बरेली शरीफ का पता उन्हें फतावा रजविया जिल्द ग्यारह से मालूम हुआ। बरेली आ कर उन्होंने यह भी बताया कि वह वहाबी, दैवन्दी और शीआ वगैरा मजहब का भी मुतालअ कर चुके हैं, और उन्हें बरेली मसलक ही सही मसलक मालूम हुआ। लिहाजा वह मुसलमान होने के लिए कई जगह से लौट फिर कर बरेली आये।

मुहम्मद अहसन रजवी ने अपने मुसलमान होने के बारे में बताया कि तकरीबन छः माह से बड़े जहनी करब में मुबला था और अक्सर सोचा करते थे कि जिस बाइबिल की वह तअलीम देते हैं यह असल इन्जील नहीं है, और इस बाइबिल में बावजूद तहरीफ व तरमीम के मुसलमानों के नबी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आमद का तजकरा है उनके आखरी नबी और उनके रहमतुल्लिलआलमीन होने का जिक्र है, और खुद हजरत मसीह अलैहिस्सलाम उन के बारे में फरमाते हैं कि मेरे बाद

वह आयेगा जो कमफूर टर (रहमतुललिलअलमीन) होगा जिस का नाम आस्मानों में "अहमद" और ज़मीन में "मुहम्मद" है, और वही निजात दा हिन्दा है, तो फिर ईसाई हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को क्यों नहीं मानते और उन पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को क्यों फौकियत देते हैं। और जब यह मकफूटर हैं यही रसूल अरबी आखरी नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं और खुद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कुरब कियामत ज़मीन पर उतर कर उन्हें के दीन की पैरवी करेंगे, तो फिर दीन तो उन्हें मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आखरी दीन और सच्चा दीन है। एलावा उसके यह इस बात पर भी गौर व फिक्र किया करते थे कि अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम खुदावन्द कुदूस के बेटे हैं तो फिर उनका बाप जो तमाम ज़हानों का मालिक है। इतना बे बस हो गया कि उसने अपने बेटे को मगलूब करा दिया, और फिर अगर वह खुदाबाप है तो वह वहदहु ला शरीक कैसे है, और अब अपने बजाये खुदा या अल्लाह के (मआजल्लाह) वह तो खुद इन्सान हो गया, और यह नामुम्किन है लिहाज़ा हज़रत मसीअ खुदा के फरजन्द नहीं, वह खुदा के बन्दे और नबी व रसूल हैं।

मुहम्मद अहसन रज़वी दुनिया के तमाम मुमालिक के सियासी, समाजी निज़ाम पर भी गौर करते थे कि कानून और हर उसूल लोगों ने ही वज़अ कर रखे हैं, लोग जो मुसलमानों के कुरआन और हदीस के उसूल हैं। फर्क यह

है कि उसे सही मअनों में इस्लामी तरीके से बरतते नहीं और उस पर किसी ने कमयूनज़म की छाप लगा रखी है, किसी ने सोशलज़म की और किसी ने अपनी नज़रयाती थीयूरी का लेबील लगा रखा है। गोया नज़री तकाज़ों को जो मज़हब या जो उसूल पूरा करता है वह इस्लाम ही है, यह बात और है कि इस ज़माना के मुसलमान खुद अपने उसूल से हट गये हैं। लेकिन उसके बा वजूद आज भी दीगरर कौमों के मुकाबिला में मुसलमानों में 25 फीसद बुराई कम है।

मुहम्मद अहसन रज़वी ने यह भी बताया कि दुनिया के दीगर मज़ाहिब बुराई से बचने को ज़रूर मनअ करते हैं। लेकिन बुराई से बचाने का उनके यहाँ कोई नुस्खा या एलाज़ नहीं है और अगर यह एलाज़ कहीं है तो सिर्फ मज़हबे इस्लाम में, इन्हीं तमाम बातों को सोंच कर कुरआने मुकद्दस के मुतालअ ने जो हर कौम और हर फर्द के लिए हिदायत है इसलिए यह मुसलमान हो गये, मुहम्मद अहसन रज़वी खुदा का शुक्र अदा करते हैं कि वगैर किसी लालच या दुनियावी फायदे के यह मुसलमान हुये हैं। और इस आलम में जबकि चर्च के बैंक में उनका बीस हजार रुपया जमा है, जिसे अब चर्च के जिम्मा दारान मुहम्मद अहसन रज़वी को देने से गुरेज़ कर रहे हैं और उन्हें तरह तरह के लालच दे रहे हैं। लेकिन उनके पाये सिबात में लगज़िश नहीं आ रही है।

जनाव मुहम्मद अहसन रज़वी की अहलिया और दो

लड़के एक लड़की भी 1986 ई. को मुसलमान हुई। अहलिया का साबिका नाम "सरीन्दार मसीह" था। अब नाम मरयम खातून है। लड़कों के साबिका नाम पैटर उमर 9 साल, और मूसिस उमर 4 1/2 साल, दोनों बच्चों का इस्लामी नाम महमूद हसन रजवी, मुहम्मद हसन रजवी और बच्ची का साबिका नाम रोजीना उमर 6 साल, इस्लामी नाम "कनीज फातमा" है। उनकी खुश नसीबी है कि जानशीन मुपती-ए-आजम के हाथ पर मुशरफ ब इस्लाम हुये और दाखिल सिलसिला भी फरमाया।

एक लड़की जो अहल हनूद से तअल्लुक रखती थी जिसकी उमर तकरीबन बीस या बाईस साल की थी। उसने अज खुद बरेली शरीफ आ कर 27 सफरुलमुजफर बरोज जुमा 29 सितम्बर 1410 हिजरी 1989 ई. को जानशीन मुपती-ए-आजम के दस्त हक परस्त पर मुशरफ ब इस्लाम हुई। और जानशीन मुपती-ए-आजम ने उसे दाखिल सिलसिला भी फरमाया। मालूम करने पर उसने बताया कि मैं खुद बखुद इस्लाम के पाकीजा मजहब होने की वजह से इस्लाम लाई हूँ किसी ने मुझे बहकाया नहीं है। कब इस्लाम उसका नाम "अस्ते" था, जानशीन मुपती-ए-आजम ने उसका नाम कनीज फातमा रखा।

राये बरेली का रहने वाला शादी शुदा गवाला उसने जमादुलअव्वल 1409 हिजरी 1989 ई. को जानशीन मुपती-ए-आजम के हाथ पर शर्फ इस्लाम से मुशरफ हुआ। उसने इस्लाम लाने का सबब यह बताया कि उसके

बाप का इन्तिकाल हो गया था। और उसके घरम में यह है कि जो सब से छोटा बेटा होगा या सब से बड़ा बेटा होगा वह अपने बाप की लअश को जलायेगा, और यह भी है कि अपने बाप की लअश पर बांस से मारेगा। उस लड़के ने एक बांस सर पर मारा और ख्याल किया कि यह मेरा मजहब गलत है, और मुसलमानों का मजहब सही है और उसने रात को ख्वाब में देखा कि हम एक बड़ी मस्जिद में बैठे हैं और उस मस्जिद में एक जईफ हसीन खुबसूरत चेहरे वाले तशरीफ फरमा हैं, और वह यह कह रहे हैं कि बेटा कलमा पढ़, मैंने कलमा पढ़ लिया। वह जब बरेली आया तो उसने जानशीन मुपती-ए-आजम को देखा, फौरन चीख पड़ा कि अपने मालिक की कस्म फलों मस्जिद में मैं ख्वाब में उन्हें बुजुर्ग को देखा था, और उन्होंने ही मुझे कलमा पढ़ाया था। वह लड़का फौरन जानशीन मुपती-ए-आजम के दस्त पाक पर कलमा शरीफ पढ़ लेता है और दाखिले सिलसिला हो जाता है। उसका नाम जानशीन मुपती-ए-आजम ने "अब्दुल्लाह" रखा।

एक सिख फरीदपुर जिला बरेली शरीफ का रहने वाला था। उसने जुलाई 1989 ई./1410 हिजरी जानशीन मुपती-ए-आजम के हाथ पर शर्फ इस्लाम कबूल किया। उसने अपने इस्लाम कबूल करने की वजह बताई कि दीने इस्लाम एक पाकीजा दीन है, जिस में मसावात व उखवत का दर्स दिया जाता है। जब मैंने अपने धर्म और मजहब इस्लाम का तकाबुली जाइजा लिया तो मुझे मजहब इस्लाम

नफीस और पसन्दीदा लगा और मुशरफ बा इस्लाम हो गया। जानशीन मुफती-ए-आजम ने दाखिल सिलसिला फरमा कर उसका नाम "मुहम्मद मुस्लिम" रखा।

इन मजकूरा लोगों के अलावा सैकड़ों गैर मुस्लिमों ने हज़रत के हाथ पर इस्लाम कबूल किया। रज़ा एकडेमी मुम्बई के जेरे एहतिमाम सद साला जशन हुज़ूर मुफ्त आजम में आप मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ थे, तीन गैर मुस्लिम रास्ता से निकलते हुये जा रहे थे, जब उनकी नज़र आप के चेहरा-ए-अनवर पर पड़ी, वह लोग इतना मुतास्सिर हुये कि मिम्बर पर आकर इस्लाम कबूल किया। हज़ारों के नजमअ ने उन नोनहालाने इस्लाम का पर तपाकइस्तिकबाल किया। बिल्कुल ऐसा ही वाकिआ अजमीर शरीफ में 1999ई को हुआ। जिस का राकिम ऐनी शहिद है। राकिमुस्तुतूर हज़रत के हमराह आस्ताना-ए-ख़वाजा पर हाजरी की शरफियादी के बाद रेलवे जंक्शन बजरीआ आटो पहुँचे, आटो रिक्षा से उतरते ही एक शख्स हज़रत के कदमों में गिरपड़ा, मैं बक्ती तौर पर ज़रा धबराया कि आखिर यह कौन शख्स है। मगर बाद में पूछने पर कहने लगा कि मैं अपनी आँखों से देवता को देख रहा हूँ। (मआज़ल्लाह) मैंने इस को मना किया। कुछ देर तक टकटकी बांधे देखता रहा फिर बोला कि मुझे मुसलमान कर लिजीए। हज़रत ने वहीं करीब ही स्टेशन पर दाखिल इस्लाम कराया।

सुबहानल्लाह

तब्लीगी व तअलीमी इदारों की सर परस्ती

हिन्दुस्तान से बाहर बहुत से ममालिक में दरजनों तब्लीगी और तअलीमी इदारे जानशीन मुफती-ए-आजम की सर परस्ती में रात व दिन मसरूफ़ अमल हैं। हिन्दुस्तान में जिन इदारों की सर परस्ती जानशीन मुफती-ए-आजम करते हैं उसकी एक तबील फिहरिस्त है। जिस में से चन्द मन्दरजा जैल हैं :

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर कसगिरान सौदागिरान

1- मरकज़ी दारुलइफ़ता सौदागिरान बरेली शरीफ

2- जामिआतुर रज़ा मथुरापुर बरेली शरीफ

3- अख़तर रज़ा लाइबरीरी सद बाज़ार छाऊनी लाहूर (पाकिस्तान)

4- मरकज़ी दारुल इफ़ता डैनहाग हालैन्ड,

5- जामिआ मदीनतुलइस्लाम डैनहाग हालैन्ड

6- अलजामिअतुलइस्लामिया गंजकदीम, रामपुर

7- अलजामिअतुलनूरिया ऐनी कैसर गंज जिला बहराज

8- अलजामिअतुलनूरिया व माहनामा नूर मुस्तफा मुगलपुरा पटना (बिहार)

मदरसा अरबिया गौसिया हबीबया पुर, एम-पी-

मदरसा अहले सुन्नत गुलशन रज़ा बकारोस्टील धनबाद, बिहार

11- मदरसा गौसिया जशने रज़ा पैटलाद गुजरात

12- दारुलउलूम कुरैशा रजविया आसाम

13- मदरसा रज़ाउलउलूम घोगारी महल्ला बम्बई

14- मदरसा तन्जीमुलमुस्लिमीन बाइसी पुरनिया, बिहार

15- माहनामा सुन्नी दुनिया व मकतबा सुन्नी दुनिया बरेली शरीफ

16-अलइंडिया जमाअते रजा-ए-मुस्तफा बरेलीशरीफ

17-अलअन्सार ट्रेस्ट,मिल्की पुर बनारस

18-अलजामिआतुलइस्लामिया,गंजे कदीम रामपुर

19-मदरसा फज रजा कोलमबो,सीलका

20-सुन्नी रजवी जामेअ मस्जिद,नियू जरसी,अमरीका

21-इस्लामि रिसर्च सेन्टर,कसगिरान बरेली शरीफ

22-जामिआ अम्जदिया,नागपुर

23-दारुलउलूम हन्फिया जियाउलकुरआन लखनऊ

नीज आल इन्डिया सुन्नी जमीअतुलउलमा बम्बई का सदर 1970 ई. में बनाया गया,और इब्तिदा से ता दम तहरीर मशहूर व मअरुफ इशाअती इदारा रजा एकडमी बम्बई की सर परस्ती भी कर रहे हैं।

हजरत अल्लामा अरशदुलकादरी की तहरीक पर 22/ जुलाई 1985 ई. 1405 हिजरी को अशरफिया मिरबाहउलउलूम मुबारकपुर जिला आजम गढ़ में अकाबिरे अहलेसुन्नत का दीनी व इल्मी इज्तिमा हुआ। इफितताई तकरीर अल्लामा अरशदुलकादरी की हुई काफी देत तक बहस व तमहीद के बाद जानशीने मुफ्ती-ए-आजम की कियादत में सारे मुल्क से फिकही मसाइल और उलूम शरीआ में रसूखा रखने वाले मुफितयाने किराम पर मुश्तमिल 'शरई बोर्ड' की तशकील अमल में लाई गई,और जानशीन मुफित-ए-आजम को उसका सदर

मुन्तखब किया गया।

दिसम्बर 1986 ई/1406 हिजरी को मुस्लिम

परसनल्ला ला कोन्सल की इदारा-ए-शरीआ उत्तप्रेदेश राये बरेली में तशकील हुई। आप को बहसियत सदर मुफ्ती पेश किया गया। मरकजुददुरासातुलइस्लामिया जामेअतुर्जा बरेली के जेरे एहतिमाम चलने वाली शरई कोनसल आफ इंडिया,और इमाम अहमद रजा ट्रेस्ट के आप सदर नशीन हैं।

हिजाज कान्फरन्स लन्दन

वर्लड इस्लामिल मिशन लन्दन के जेरे एहतिमाम होने वाली हिजाज कान्फरन्स में जानशीन मुफ्ती-ए-आजम और अल्लमा अरशदुलकादरी शिरकत के लिए 21 अप्रील 1985 ई. 1405 हिजरी को बजरीआ तय्यरा लन्दन तशरीफ ले गये। 5 मई को कान्फरन्स का इन्वेकाद हुआ,और उसमें जानशीन मुफ्ती-ए-आजम ने खिताब भी फरमाया तकरीर बी बी सी लन्दन से नशर हुई। हिजाज कान्फरन्स में शिरकत के बाद उमरा के लिए हरमेन शरीफैन तशरीफ ले गये, और वापसी एकुम जून 1985 ई. 140ई हिजरी को बरेली शरीफ हुई। याद रहे कि हिजाज कान्फरन्स की सदरत आप ही ने फरमाई थी।इस कांफ्रेस की अहमियत इस लिए है कि यह बैनल अकवामी कांफ्रेस थी जिस में पुरी दुनिया के काइदीन ने शिरकत की और दर पेश मसाइल पर खुल कर बहस हुई और हल के लिए लाइहा अमल तैयार किया गया।

हमदर्द सुन्नियत,नाशिर मसलक आला हजरत,आली

मरतबत मौलाना मुहम्मद सईद नूरी सिक्रेट्री रजा एकडमी बम्बई की तहरीक पर 25 सफरुलमुजफ्फर 1410 हिजरी 1989 ई. को रजा एकडमी के जेरे एहतिमाम रैहाने मिल्लत मौलाना रैहान रजा कादरी बरेलवी के दौलत कदा पर हिन्दुस्तान के माया नाज उलमा व मशाइख और सहाफियों की मौजूदगी में इमाम अहमद रजा कादरी बरेलवी कुदिसा सिरूहु की काइम करदा जमाअत रजा-ए-मुस्तफा की तशकील नो हुई। उसके सदर के तौरपर हज़रत मौलाना तौसीफ रजा बरेलवी का नाम पेश हुआ और सरपरस्ती ताजुशरीआ के सुपुर्द की गई। उसमें तजावीज भी पास की गई और एक तजवीज यह थी कि तमाम हम मसलक इशाअती तब्लीगी इदारों का बाहम राबता और वह सारे रवाबित जमाअत रजा-ए-मुस्तफा के तहत हों।

रजा एकडमी ने उस काम में एक अहम रोल अदा किया है, और रवाबित के सिलसिला में कोशिशें हैं। रबीउलअव्वल 1410 हिजरी में एक तहरीक चलाई कि मुन्तशिर जमाअतें एक सु हो कर काम करें ताकि इज्तिमाइयत और बढ़ती जाये। उसमें भी कामयाबी हासिल हुई।

हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुदिसा सिरूहु की सरपरस्ती में "रजवी दारुलउलूम मजहरे इस्लाम" के नाम से मस्जिद स्टेशन बरेली में एक मदरसा काइम किया गया। जिसकी एक मज्लिस आमिला तशकील दी गई और साथ ही साथ एक तवील इत्तिहादी मुआहिदा भी तै हुआ। यह बात याद रहे कि उससे कब्ल मुफ्ती-ए-आजम कुदिसा सिरूहु ने तहरीरी सूरत में ताजुशरीआ को "मजहरे इस्लाम" का सदर बना चुके थे। उस में 8, मुआहिदे हैं और पांचवी मुआहिदे में

मुफ्ती आजम कुदिसा सिरूहु की तहरीर की तौसीक की गई है, मन व अन मुलाहिज़ा हो।

"रजवी दारुलउलूम मजहरे इस्लाम सिटी बरेली शरीफ का दस्तूर व निज़ाम हज़रत मुफ्ती-ए-आजम की तहरीरात व ख्वाहिशात के मुताबिक होगा। और खान्दानी दस्तूरी कमेटी वह होगी जो मुआहिदे के साथ मुन्सलिक है। क्योंकि हज़रत (मुफ्ती-ए-आजम) की तहरीर के मुताबिक मौलाना अख़तर रजा ख़ाँ साहिब दारुलउलूम हज़ा के सदर हैं।"

रजवी दारुलउलूम मजहरे इस्लाम बरेली के सरपरस्त मौलाना रैहान रजा रहमानी बरेलवी मुन्तख़ब हुये और सदर व मुतवल्ली ताजुशरीआ को बनाया गया, नाइब सदर अमीन शरीअत मौलाना सिब्लैन रजा, मौलाना ख़ालिद अली ख़ाँ, नाज़िम आला मौलाना मन्नान रजा, नाइब नाज़िम जनाब अन्जुम रजा, मुहासिब सदरुल उलमा अल्लमा तहसीन रजा, ख़ाज़िन अब्दुलहबीब उर्फ अन्नू भाई, निगराँ मौलाना कमर रजा ख़ाँ और मज्लिसे आमिला के मिम्बरान में ख़ास तौर से मौलाना मुहम्मद तौसीफ रजा कादरी काबिले जिक्र हैं।

तसानीफ़ व तराजुम

फकीहे इस्लाम मुफ्ती मुहम्मद अख़तर रजा अजहरी बरेलवी ने अपनी दीगर मसरूफियात के बावजूद तस्नीफ़ व तालीफ़ का सिलसिला जारी रखा। कसीर तअदाद में प्रोग्रामों और तब्लीगी असाफ़ार की वजह से यह काम कम हो पाता है। मगर हज़रत की आदते मुबारका है कि सफ़र व हज़र में मजामीन, फ़तावा, तस्नीफ़, व तालीफ़ की मसरूफियात में इन्हेमाक में कमी नहीं आने दी है। हज़रत

का मामूल है कि रोज़ाना सुबह व शाम अरबी इबारात का तर्जमा उर्दू ज़बान में और उर्दू ज़बान का तर्जमा अरबी में मरकज़ीदारु लइफ़ता के मुफ़्तियाने किराम या जामिआतुर्रज़ा के आसातिज़ा को इमला करा देते हैं।

फ़तावा जो दरुलइफ़ता में मुफ़्तियाने किराम हल नहीं कर पाते हैं, उनको जमा कर दिया जाता है और जब बाहर तब्लीगी दौरे पर तशरीफ़ ले जाते, तो वह मसाइल साथ होते-ट्रेन वगैरा में सवालात के जवाबात कलम बन्द करते। आज ताजुशरीआ दुनिया-ए-इस्लाम के लिए मरजा-ए-उलमा व फ़ुकहा बने हुये हैं। आप की मन्दर्जा जैल तसानीफ़ व तराजुम काबिले जिक्र हैं।

मतबूआत

- 1- अलहक्कुल मुबीन (अरबी)
- 2- दफ़ाअ कन्जुल ईमान (हिस्सा अब्बल)
- 3- टी-वी-और वीडियो का आप्रेशन
- 4- मिरातुन्नजदिया बजवाबुलबरेलविया, जिल्द अब्बल (अरबी)
- 5- तस्वीरों का शरई हुक्म
- 6- शरह हदीस नियत
- 7- शरह हदीसुलअख़लास
- 8- हज़रत इब्राहीम के वालिद तारिख़ या अज़ (अरीब व उर्दू)
- 9- दिफ़ाअ कन्जुलईमान (किताबचा उर्दू)
- 10- एक अहम फ़तावा (उर्दू)
- 11- तकदीम तजाल्लयुस्सलम मुसन्निफ़ा इमाम

अहमद रज़ा फ़ाजिले बरेलवी)

- 12-तीन तलाकों का शरई हुक्म (उर्दू)
- 13-आसार-ए-कियामत (उर्दू)
- 14-हिज़रते रसूल
- 15-अलकौलुलफाइक़ लिहुविमलइक़तिदाइलफ़ासिक
- 16-बरकातुलइमदाद (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी)
- 17-हाशियातुलबुख़ारी (अरबी बुख़ारी शरीफ़ पर हाशिया)
- 18-तयस्सिरुलमाऊन (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 19-शमूलुलइस्लाम (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 20-अलअताउलकदीर (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 21-कसीदातान राइअतान (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा अरबी उर्दू से)
- 22-अलमोअतकदुल मुस्तनद (मुसन्निफ़ा अल्लामा फ़जले रसूल बदायूनी अरबी से उर्दू)
- 23-फ़किहे शहिन्शा (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी, तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 24-अहलाकुलवहाबीन (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 25-अलहादीयुलकाफ़ (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी, तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 26-नमूजज हाशियतुलअज़हरी (अरबी)

गैर मतबूआत

- 27- मरातुन्नजदिया बेजवाबिलबरेलविया(जिल्द दौम)अरबी
- 28- हाशिया असीदतुलशोहदा शरहुलकरीयातुलदुरदा (अरबी)
- 29- अलहक्कुलमुबीन (उर्दू)
- 30- दिफाअ कन्जुलईमान (हिस्सा दौम)
- 31- किया दीन की मुहिम पूरी हो चुकी(अहद जामिया अजहर का मकाला)
- 32- तर्जमा अज्जुललुलअन्का मिम बहरे सबकातिल अतका (मुसन्निफा इमाम अहमद रजा बरेलवी, अरबी)
- 33- अस्मा-ए-सूरए फातिहा की वजह तरिमया
- 34- जशने ईदमीलादुन्नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम (अहद ताखिबइल्मी मनजर-ए-इस्लाम का मकाला)
- 35-मस्टर आरिफ़ संभली ने अकाइदे वहाबिया की ताईद में एक तफसीली गुमराह कुन मजमून अखबारात में शाइअ कराया,ताजुशरीआ ने इस मजमून का मस्कत जवाब दिया और रद्दे बलीग़ फरमाया,हज़रत के इस मकाला को माहनामा आला हज़रत बरेली ने दो किस्तों में शाइअ किया था।
- 36- आप ने दरमियान दर्स व तदरीस कुरआन शरीफ़ की तफसीर लिखने का आगाज किया, हर माह जिन आयात की तफसीर तहरीर करते उस को माहनामा आला हज़रत बरेली में शाइअ करा देते। तफसीर के लब व लहजे सलासत व रवानी और इफ़ादियत व अहमियत को देखते हुये जनाब उमीद रजवी बरेलवी एडीटर माहनामा आला

हज़रत बरेली ने 'ज़ियाउलकुरआन' के उनवान से एक कालम मख़सूस कर दिया था, आप की लिखी हुई तफसीर मजकूरा उनवान से मुसलसल किस्त वार शाई हुई। आप ने जब माहनामा सुन्नी दुनिया बरेली के निकालने की इजाजत हुकूमत हिन्द से तलब की तो इब्तिदाई दौर में आप ने 'तफसीर सूरए फातिहा' के उनवान से पाँच किस्तों में सूरए फातिहा की शानदार तफसीर तहरीर फरमाई, जो माहनामा सुन्नी दुनिया बरेली में शई हुई। मजकूरा इल्मी ज़खाइर को तलाश व जिस्तजू के बाद जमा कर के मनजर-ए-आम पर लाना बहुत मुफीद होगा।

तकरीज़ व तास्सुरात :

- 1- दुआइया कलमात बरसामाने वख़िशश अज हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना अशशाह मुस्तफा रजा नूरी बरेलवी क़ुदिसा सिरुहु
- 2- दुआइया कलमात बर जमाल-ए-मुस्तफा हमारा मेगजीन,मिनजानिब तलबा मजिलस रजा अलजामियातुल इस्लामिया गंज कदीर रामपुर
- 3- तकरीज़ बर मुजहिदे इस्लाम बरेलवी अज मौलाना साबिरुलकादरी नसीम बस्तवी
- 4- तकरीज़ बर शरह मरनवी रद्दे इम्सालिया अज कारी गुलाम मुहीयुद्दीन ख़ातीब हलदवानी रहमतुल्लाहि अलैहि
- 5- तकरीज़ बर मुरशिद बर हक अज हाफ़िज़ इफ़ितख़ार वली ख़ाँ रजवी पीलीभीत
- 6- तकरीज़-ए-बर तजल्लियात इमाम अहमद रजा :

कारी अलहाज मुहम्मद अमानत रसूल नूरी पीली भीती।

7- तकरीज बर तजकरा मशाइख कादरिया रजविया :

अज मौलाना अब्दुल मुज्जबा रजवी सुनदरपूरी मरहूम, मुदरिस मदरसा मजीदिया बनारस

8- तकरीज बर आला हजरत की बारगाह में अन्सारियों का मकाम अज कारी मुहम्मद अमानत रसूल पीलीभीत

9- तकरीज बर पन्द्रवी सदी हिजरी के मुजहिद अज कारी अमानत रसूल नूरी

10- तकरीज बर मकाशिफ तुत्तजवीद अज कारी अबूलहम्माद हामिद अली रजवी शाहपूरी शैखुत्तजवीद वल करअत मन्जर-ए-इस्लाम बरेली

11- तकरीज बर मुफ्ती-ए-आजम और उन के खलफा अज मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी बहराईची सुम्मा बरेलवी (राकिमुस्सुतूर)

12- तकरीज बर मौलाना रजा अली खाँ बरेलवी और जंग आजादी अज मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी बहराईची, सुम्मा बरेलवी

मशाहीर तलामिजा :

जानशीन-ए-मुफ्ती-ए-आजम की तदरीसी जिन्दगी में वे शुमार तलवा ने इक्तिसाब फेज किया, तलामिजा की तादाद दारुलउलूम मन्जर-ए-इस्लाम बरेली के रजिस्टर तलवा से हासिल की जा सकती है। ता हम चन्द तलामिजा यह हैं।

1- हजरत अल्लामा मुफ्ती सय्यद शाहिद अली रजवी, मुहदिदस अलजामिअतुल इस्लामिया रामपुर

2- अल्लामा मौलाना अनवर अली रजवी बहराईची, शैखुलअदब दारुलउलूम मन्जर-ए-इस्लाम बरेली

3- मुफ्ती नाजिम अली रजवी बाराबंकी, मरकजी दारुलइफता बरेली शरीफ

4- मौलाना कमाल अहमद रजवी नानपारा, जिला बहराईज

5- मौलाना जमील अहमद खाँ नूरी बस्तवी उस्ताज, मुस्लिम यूनीवर्सिटी अली गढ़

6- मौलाना मजफ्फर हुसैन रजवी कटीहारी साबिक मुदरिस जामिआ नूरिया रजविया बरेली

7- मौलाना साहबजादा अरुजद रजा खाँ कादरी इब्न ताजुशरीआ मदजुल्लाहू

8- मुफ्ती उबैदुर्रहमान रजवी, मुदरिस व मुफ्ती दारुलउलूम मजहर-ए-इस्लाम बरेली

9- मौलाना वसी अहमद रजवी, खतीब वर मंगधम

10- मौलाना सलीमुद्दीन रजवी, समनपुर (बिहार)

11- मौलाना शबिरुद्दीन रजवी, मुदरिस मदरसा महमदिया संगराकछ मगरिवी दीनाजपुर, बंगाल

12- मौलाना मुजीबुर्रहमान रजवी, मदरसा बाहारे इस्लाम बज्जो कटीहार (बिहार)

13- मौलाना सज्जाद आलम रजवी, समनपुरी, (बिहार)

14- मौलाना शर्फ आलम रजवी सीतामढ़ी, बिहार

15- मौलाना अतीकुर्रहमान रजवी, ललवारा जिला रामपुर

16- मौलाना शैख शाह अलहमीदुलबाकवी, मुबल्लिग मरकजुस्सकाफतुस्सुन्निया काली कट (केरेला)

- 17- मौलाना मुहम्मद कौसर अली रजवी इब्न मुहम्मद नूरुलहुदा, मरकजी दारुलइफता बरेली
 18- मुफती मुशरफ हुसैन बर्दौयूनी उस्ताज दारुलउलूम मजहर-ए-इस्लाम बरेली
 19- मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी बहराईची सुम्मा बरेली (राकिमुस्सुतूर)

हिन्दुस्तान के खुलफा

हज़रत ताजुशरीआ के खुलफा की तादाद बहुत तबील है ता हम जिन हज़रत का नाम रजिस्टर में इन्दराज है उन के असमा जैल में दर्ज किए जा रहे हैं। अगर किसी का नाम जाब्त तहरीर से रह गया हो तो वह राकिमुस्सुतूर को मुत्तलअ कर सकते हैं।

मुहक्क अस्त्र हज़रत मौलाना मुफती सय्यद शाहिद अली रजवी, नाजिम आला व शैखुल हदीस अलजामिअतुल इस्लामिया रामपुर(काजी शरह व मुफती (जिला रामपुर)

फजीलतुशैख हज़रत अल्लामा शैख अबूबक्र अहमद मुरिलियार,सिक्रेटरी मरकजुस्सकाफहुस्सुन्निया,काली कट (कीराला)

मुफती अनवर अली रजवी,सद्र आलकरनाटक उलमा बोर्ड,बेगलौर(कराटक)

मौलाना असगर अली रजवी,इमाम व खतीब जामेअ मस्जिद रामनगरम,(करनाटक)

मुनाजिर-ए-अहले सुन्नत मौलाना सगीर अहमद जौखनपुरी मोहतमिम अलजामिअतुल कादरिया रिछा जिला बरेली

मौलाना मुहम्मद हुसैन सिद्दीकी अबुलहक्कानी,

- शैखुलहदीस दारुलउलूम फैजुलगुरबाआरा(आरा)
 कारी अबुमुहामिद हामिद अली शाहपूरी, शैखुत्तजवीद दारुलउलूम मन्जर-ए-इस्लाम बरेली
 हज़रत हाफिज शाह लईक अहमद ख़ाँ जमाली,
 सज्जादा नशीन आस्ताना-ए-जमालिया नक़्शबन्दिया मुजहिदिया रामपुर
 मुफती उज़ैर अहसन रजवी,शैखुलहदीस दारुलउलूम गौसे आजम पुरबन्दर,(गुजरात)
 मौलाना अली अहमद सीवानी,हसन पुरा जिला सीवान (बिहार)
 साहाबजादा मौलाना मुहम्मद अस्जद रजा ख़ाँ कादरी सद्र आल इन्डिया जमाअत-ए-रजा-ए-मुस्तफा,सिक्रेटरी इमाम अहमद रजा ट्रेस्ट,बरेली
 मौलाना सूफी मजहर हसन कादरी बरकाती,महल्ला नागिरान बर्दौयू शरीफ
 मौलाना अब्दुलमुस्तफा रौनक,इमाम व खतीब जामेअ मस्जिद अम्बर नाथ(महाराष्टर)
 मौलाना तत्हीर अहमद रजवी,उस्ताज जामिआ नूरिया रजविया बाकरगंज बरेली
 कारी अलाउद्दीन अजमली,नाजिम आला मदसी खलीलुलउलूम संभल जिला मुरादाबाद
 मौलाना डाक्टर अब्दुलजब्बार रजवी,पलामो,बिहार
 मौलाना मुहम्मद अहमद इब्न मुहम्मद शफीअ,
 मोहतमिम दारुलउलूम रजा-ए-मुस्तफा दमोह,एम-पी

मौलाना मुफ्ती वली मुहम्मद रजवी, इमाम व खतीब
जामेअ मस्जिद व अमीर-ए-सुन्नी तब्लीगी जमाअत वा
सुन्नी जिला नागौर, राजस्थान

मौलाना मुहम्मद हनीफ रजवी, शीरानीबाद जिला
नागौर (राजस्थान)

मौलाना हाजी अली मुहम्मद खतरी, बानी दारुलउलूम
गौसे आजम मैमुनवाड़ापुर, बन्दर, (गुजरात)

अदीब शहीर जनाब जियाजालवी एडीटर माहनामा
पास्वान इलाहाबाद

मौलाना मसरूर रहमान रजवी, पलखीरा जिला सीता मढी

मौलाना सूफी मुहम्मद उमरबानी, बिहारपुरा, धोराजी,
गुजरात

हमदर्द कौमे मिल्लत मौलाना अहहाज मुहम्मद सईद
नूरी, चैयरमैन रजा एकडमी मुम्बई

मौलाना सूफी लअल मुहम्मद सज्जादा
नशीन, खान्काहे कादरिया, चमन शाह कथोरी, जिला बाराबकी

मौलाना कारी दिलशाद अहमद रजवी, नाजिम आला
मदरसा मदीनतुलउलूम, बनारस

डाक्टर हाफिज शफीक अजमल इब्न अहहाज अब्दुर्रब
रजवी, रेवडी तालाब, बनारस

मौलाना गुलाम मुस्तफा हबीबी, मदनपुरा बनारस
अलहाज हाफिज मुहम्मद शौएब रजवी, काशाना-ए-

नूरी सदानन्द बाजार, बनारस

मौलाना सय्यद अफरोज अहमद नूरी, निहाँ

बाग, अहमद नगर जिला गौरखपुर

अल्लामा मौलाना मुजीब अली रजवी, इमाम व खतीब
मक्का मस्जिद हबीब नगर, हैदरबाद

आल्लामा गोলাম हुसैन, इमाम व खतबी जामेअ
मस्जिद बकारो इस्टेल सिटी

मौलाना मुख्तार अहमद कादरी, नाजिम आला
बहरुलउलूम, इस्लाम नगर बहेड़ी जिला बरेली

कारी हाफिज सय्यद गोলাম सुह्रानी इब्न अल्लामा
सय्यद गुलाम जीलानी मेरेटी, संभल

मौलाना मुहम्मद रजा कादरी, सद्र मुदरिस हामिदिया
रहमानिया पोखरिया जिला सीतामढी

मौलाना जहानगीर खाँ रजवी, मोहतमिम मदरसा
गुलशन रजा, बकारो जिला धंवाद

मौलाना हाफिज अब्दुलकादीर रजवी, मोहतमिम दारुल
उलूम हन्फिया रजविया, कुलाबा बाजार मुम्बई

मौलाना अब्दुस्सतार रजवी, इमाम व खतीब मस्जिद
मौमनान तकिया आदम शाह जैपुर (राजस्थान)

मौलाना हाफिज तजम्मूल हुसैन, इमाम व खतीब सुन्नी
जामेमस्जिद भसावल, (महाराष्टर)

मुफ्ती जुबैर आलम रजवी, मौजा लिल्या पोस्ट करोबार
जिला कटीहार

हजरत मौलाना गुलाम मुहम्मद हबीबी सज्जादा
नशीन आस्ताना-ए-कादरिया हबीबिया, धाम नगर शरीफ, उड़ीसा

मौलाना एहतिराम अली रजवी, जैपुर, (राजस्थान)

हजरत मौलाना जहीर रजा मौजा तरसापटी, शाही
जिला बरेली (शहादत 3/अगस्त 2007 ई.)
मौलाना गुलाम मुस्तफा बरकाती, सिलगिराम पुरा
सूरत (गुजरात)
आली जनाब मौलवी साबिर रजा कादरी, छाऊनी कानपुर
मौलाना सय्यद रिजवानुलहुदा, सज्जादा नशीन
खानकाहे मुन्झमिया पन्ड शरीफ जिला मुंगीर, (बिहार)
मौलाना मुफ्ती बशीरुलकादरी, मोहतमिल मदरसा
आलिया कादरिया शमशीरनगर जिला धंवाद
मौलाना कादिर वली कादरी कारवान पैट जिला
करनोल, (आंध्रप्रदेश)
मौलाना जहूरुलइस्लाम, राज बस्ती, गुंजरिया बाजार
जिला उत्तर दीनाजपुर, (बंगाल)
मौलाना मुहम्मद शाहजहाँ, कमालपुर, खटीया जिला
वीरभूम, (बंगाल)
मौलाना चिराग अली, पैटर जिला बलरामपुर
मौलाना मुहम्मद गुलाम अनवर, रफी गंज जिला औरंगबाद
मौलाना मुहम्मद ऐहतिशामुद्दीन हुसैन चक जिला नवादा
मौलाना मुख्तार अहमद, नारायनपुर, अनल झाडी, जिला
उत्तरदीनाजपुर, (बंगाल)
मौलाना गुलाम मुहम्मद रजवी, ताबरबाला पटन जिला
बारा मौला, (कश्मीर)
मौलाना मुहम्मद खातिम रजा, मौजा मन्डा, दोधारी,
जिला बांका

मौलाना मुहम्मद शाह जमा, मौजा बतम, दौला जिला
किशनगंज
मौलाना मुनीर अहमद कादरी, हबेली, (कर्नाटक)
मौलाना रफीक अहमद रजवी, हबेली (कर्नाटक)
मौलाना मुजाहिदुलइस्लाम रजवी, हबेली कर्नाटक
मौलाना मुफ्ती यूनुस रजा उयेसी, वाइसपरन्सिपल
जामिअतुर्रजा मथरापुरा बरेली
मौलाना मुफ्ती काजी शहीद आलम रजवी, दारुल
इफता जामिआ नुरिया, बरेली
मौलाना सय्यद मसऊद अलीनूरी, रामनगर जिला
नैनीताल, (उत्तराखण्ड)
अल्लामा मौलाना मुहम्मद अशरफ
कादरी, ठाकुरदोवारा, जिला मुरादाबाद
मौलाना मुफ्ती मुजफ्फर हुसैन रजवी, सदर मुफ्ती
मरकजी दारुलइफता बरेली
मौलाना अहमद हुसैन रजवी, वानगाँव, गोहरा जिला
उत्तरदीनाजपुर, (बंगाल)
मौलाना मुहामिद रजा इब्न मुफ्ती महबूब
रजा, पोखरिया जिला सीतामढ़ी
मौलाना मुफ्ती मेराजुलकादरी, उस्ताज अलजामिअतुल
अशरफिया, मुबारकपुर, जिला आजम गढ़
मौलाना मुबारक हुसैन मिस्बाही, एडीटर माहनामा
अशरफिया, मुबारकपुर जिला आजम गढ़
मौलाना मुहम्मद जमाल अनवर, मौजा कलपर जिला

जहानबाद (बिहार)

हाफिज सय्यद जाहिद अली हाशमी, मौजा बंकागाँव

जिला लखीमपुर खीरी

मौलाना मुहम्मद शाहिद रजा, मौजा मालीनी, कन्नौर

जिला दरभंगा

मौलाना मुहम्मद जमील अखतर मौजा उखली,

भालोबाद जिला उत्तरदीनाजपुर, (बंगाल)

मौलाना शकील अहमद इब्न रशीदुद्दीन, कटीहार, बिहार

मौलाना मुहम्मद शमशाद आलम इब्न मुहम्मद तैमूर

हुसैन, पुरनिया (बिहार)

मौलाना इरफानुलहक इब्न मुहम्मद जिल्लुर्रहमान कम

नौल जिला मधुबनी

मौलाना कलीमुद्दीन नूरी इब्न इब्राहीम खसलोडिया,

जिला गिरेडिया, झाड़खण्ड

मौलाना मिन्हाजुद्दीन इब्न मुहम्मद फरीद आलम,

मौजा फिरदोस बाग जिला बांका (बिहार)

मौलाना नसीरुद्दीन इब्न मुहम्मद सिदीक मौजा

फतह जिला गिरेडिया, झाड़खण्ड

मौलाना नूर आलम खाँ मौजा पटनियाँ जिला

दरभंगा, बिहार

हजरत अल्लामा मौलाना अनवर अली

रजवी, शैखुलअदब मन्ज़र-ए-इस्लाम बरेली

मौलाना हाफिज जाहिद रजा, शाहबाजपुर, गजरोला

जिला जैपीनगर (यूपी)

मौलाना कारी रईस अहमद खाँ, मोहतमिम

दारुलउलूम नूरुलहक चिरा मुहम्मदपुर, जिला फैजाबाद

मौलाना कमाल अखतर, मदरिस दारुलउलूम नूरुलहक

चिरापुर, जिला फैजाबाद

मौलाना गुलाम हुसैन, दारुलउलूम नूरुलहक चिरा

मुहम्मदपुर, जिला फैजाबाद

मौलाना अब्दुलकुदूस, दारुलउलूम नूरुलहक चिरा

मुहम्मदपुर जिला फैजाबाद

अलहाज सय्यद आबिद हुसैन इब्न सय्यद

अब्दुलुल्लाह कादरी, विकरोली, टाईगरनगर, मुम्बई

मौलवी मुहम्मद अब्दुलवकील रजवी, नाइब इमाम जामे

मस्जिद मीरटा सिटी (राजस्थान)

मौलाना काजी मुहम्मद इकरम उस्मानी इब्न काजी

मुहम्मद कासिम उस्मानी, काजी शहर मीरटास्टी,

हाफिज मुहम्मद अबूबक्र मुहम्मद हुसैन, बा सुन्नी

जिला नागपुर, राजस्थान

कारी फहीम अहमद खाँ इब्न उजैर यार खाँ, वनेखण्ड लखनऊ

मौलाना अनीस आलम सीवानी, जामिअतुलकरा खदरा लखनऊ

मौलाना काजी खतीब आलम इब्न काजी

अब्दुस्सुबहान, मौजा पिन्डहाल जिला कटीहार (बिहार)

मौलाना नूरुलइस्लाम इब्न नसीरुद्दीन, मौजा

सहजाना जिला कटीहार

मौलाना मुहम्मद आजम अली इब्न मुहम्मद

रफीक, सिधारत नगर जिला कटीहार (बिहार)

मौलाना गोলাম सादिक खॉ हबीबी इब्न मुहम्मद
 हाशिम, सिरावों जिला इलाहाबाद
 मौलाना नाहीद रज़ा मुर्दरिस बरकातुलइस्लाम ताज
 गंज, आगरा
 मौलाना अजीजुर्रहमान रजवी, इमाम व खतीब जामेअ
 मस्जिद, बरेली शरीफ
 मौलाना मुईनुलहक रजवी जिला दरंग (आसाम)
 मौलाना मुहीयुद्दीन अहमद, जिला दरंग (आसाम)
 मौलाना निजामुद्दीन नूरी, इमाम व खतीब हबीबिया
 मस्जिद सैलानी, बरेली
 मौलाना कारी मुहम्मद अफरोजुलकादरी, जामेआ
 कादरिया, चिरया कोर्ट, जिला मऊ
 मौलाना अफजाल रज़ा नूरी, मौज़ा गवाल जिला पुर्निया
 मौलाना अलहाज महसिन मक्की, इब्न हाजी वली
 अहमद, सीगोड़ा, जिला भड़ोच (गुजरात)
 मौलाना मुहम्मद रफीक रज़ा कादरी, महबूब
 नगर (आंधरा प्रदेश)
 मौलाना जुबैर आलम इब्न काज़ी हसीन, मौज़ा
 बरआना गंज, जिला पुर्निया
 मौलाना मुहम्मद जमाल अनवर रजवी इब्न मुहम्मद
 गैरअली खॉ, मौज़ा कलयर जिला जहानाबाद
 मुफ्ती अब्दुलकदीर कादरी, इमाम व खतीब जामे
 मस्जिद, वजैवाड़ा (आंधरा प्रदेश)
 मुफ्ती मुमताज अहमद नईमी, दारुलइफ्ता जामिआ

नईमिया, मुरादाब
 मुफ्ती अखतर हुसैन, मदरिस दारुलउलूम अलीमिया,
 जमदाशाही जिला बस्ती
 आली जनाब मुहम्मद अफरोज रज़ा इब्न जनाब
 अब्दुल हसीब मरहूम, बरेली
 आली जनाब सिराज रज़ा खॉ इब्न मौलाना इदरीस
 रज़ा खॉ, बरेली
 अली जनाब रिज़वान रज़ा खॉ इब्न हजरत अल्लामा
 तहसीन रज़ा खॉ मुहदिदस बरेली
 मौलाना अलाउद्दीन नूरी इब्न मुहम्मद सिद्दीक
 जमिलिया बाज़ार, जिला मधुबनी
 मौलाना अस्तमुलकादरी इब्न मुहम्मद यूसुफ, मरगिया
 चक, जिला सीतामढ़ी
 मौलाना मुफ्ती मुहम्मद शऐब रज़ा कादरी नईमी,
 सदरइस्लामी, मरकज देहली
 मौलाना मुफ्ती अशफाक हुसैन कादरी सदर तन्ज़ीम उलमा
 -ए-इस्लाम, इमाम व खतीब कादरी मस्जिद शास्त्रीपार्क देहली
 मुहम्मद शहादबुद्दीन रजवी (राकिमुस्सुतूर)
 हजरत ताजुशरीआ ने मौलाना मतीउर्रहमान
 मुजफ्फर पूरी और मौलाना रफीक अहमद मुहीश पूरी की
 सन्द इजाजत व खिलाफत मन्सूख कर दी है। (मन्कूल अज
 रजिस्टर्ड)

पाकिस्तान के खुलफा :

मुसन्निफ कुतुब कसीरा हजरत अल्लामा मुहम्मद
अब्दुल हकीम अखतर शाहजहानपुरी, बानी मर्कजी मंजिलस
इमामे आजम लाहोर,

अलहाज मुहम्मद हनीफ तय्यब रजवी, साबिक मर्कजी
वजीर तामीरात व मुशीर सदर पाकिस्ता

मौलाना अलहाज सय्यद शाहिद अली नूरानी, इदारा
मुआरिफ रजा अकरम रोड, लाहोर

जनाब अलहाज अब्दुलहमीद मक्की रजवी, कराची
जनाब अलहाज जुबैर मक्की कादरी रजवी, कराची
जनाब अलहाज हाफिज मुहम्मद असलम

रजवी, कराची

मौलाना सय्यद मुहम्मद कलीम रजा कादरी,

नाजिमाबाद कराची

मौलाना पीर सय्यद जियाउलहक जीलानी, अमरीकन
कुवाटर, हैदराबाद, सिंध

डाक्टर इकबाल अहमद अखतरुलकादरी, इदारा
तहकीकात इमाम अहमद रजा कराची

मौलाना मुहम्मद अस्लम रजा अतारी, खैरआबाद
गुलशने मुस्तफा कराची

मौलाना मुहम्मद जाकिर हुसैन सिद्दीकी, मोहतमिम
दारुलउलूम मुस्तफा जामे मस्जिद, लूतीफाबाद, हैदराबाद

मौलाना अताउलमुस्तफा इब्न अल्लामा जियाउल
मुस्तफा कादरी, मदरिस जामेआ अम्जदिया कराची

मौलाना अलहाज यूनुस खतरी, पी आई बी
कालौनी, कचारी

जनाब अलहाज गुलाम उवैस कर्नी, सदर इदारा
मुआरिफ नोमानिया, लाहूर

मौलाना मुहम्मद फैसल कादरी नक्शबन्दी, जमशीर
रोड कराची

मौलाना मुहम्मद साकिब अखतर कादरी इब्न
अशाफाक अहमद, नार्थ कराची

बंगलादेश के खुलफा :

मौलाना डाक्टर सय्यद इरशाद बुखारी, डाइरेक्टर
जामिआ इस्लामिया दीनाजपुर बंगलादेश

मौलाना सूफी मुहम्मद अब्दुलस्लाम रजवी, चमपक
नगर पोस्ट हलीम नगर जिला कोमल्ला

मौलाना सय्यद मुहम्मद इब्राहीम कासिमूलकादरी,
कनजनपुरदरबार शरीफ जिला सीतामढ़ी गोरगंज

मौलाना हाफिज शाह आलम नईमी इब्न सुलतान
अहमद, चाटगाम

मौलाना सूफी नजीर अहमद रजवी कुमिल्लाह (बंगलादेश)

नेपाल के खुलफा :

मौलाना मुफ्ती मुहम्मद जैश बरकाती, शेखुलहदीस
दारुलउलूम हन्फिया, जिकपुरधाम

मौलाना मुहम्मद नजमुद्दीन कादरी इब्न मौलाना
मुहम्मद हनीफ कादरी, बेदरेकझारा पोस्ट जलीशौर जिला मोहवतरी

अरब ममालिक के खुलफा :

फजीलतुशैख हजरत अल्लामा मुहम्मद उमर
 सलीमुलहन्फी मेहन्दी, इमाम, जामेअ मस्जिद इमामे आजम,
 अलअजमिया, बगदाद शरीफ, (एराक)
 अलहाज शैख मुहम्मद यूसुफ अब्दुलअजीज सुन्नी
 बोहरा, दबई (मुत्तहिदा अरब इमारात)
 फजीलतुशैख अल्लामा कमाल यूसुफुलहौत, डाइरेक्टर
 मखतूतात इलतरासुलइस्लामी, लबनान
 मौलाना अलहाज मुहम्मद आकिब
 फरीद, अबूजहबी, (मुत्तहिदा अरब इमारात)
 मौलाना शैख हस्सामुद्दीन, कराकीरा, लबनान
 मौलाना शैख नबीलुशरीफ, लबनान
 मौलाना शैख काशी अलीमुद्दीन, लबनान
 मौलाना शैख जमाल सफीर, लबनान
 फजीलतुशैख अल्लामा अब्दुलकादिर फाकहानी,
 सिक्रेट्री अलजमिअतुलमुशारेअतुलखैरिया लबनान
 अशशैख अब्दुरहमान अम्माश, लबनान
 अशशैख गानम हुलूल, लबनान
 अशशैख उंसामहुसय्यद, लबनान
 अशशैख जमील हलीम लबनान
 अशशैख खालिद हनीना, लबनान
 अशशैख अहमद अलजलबी लबनान
 अशशैख बिलाल हलाक लबनान
 अशशैख यूसुफ दाऊद लबनान
 अशशैख यूसुफ अलमला लबनान

अशशैख हस्साम रहबी, लबनान
 अलउस्ताज अशशैख मुहम्मद अलसर खुस, लबनान
 अशशैख सय्यद अत्तबता, लबनान
 अशशैख अब्दुरज्जाक शरीफ लबनान
 अलउस्ताज अशशैख सलाह सईद लबनान
 अशशैखुलबराहीमुशशार, लबनान
 अशशैख मुहम्मद शाफेई, लबनान
 अशशैख रोवेद अम्माश, लबनान
 अशशैख सलीम उलवान लबनान
 अशशैख वलीद यूनुस, लबनान
 अशशैख मुहम्मद अयूबी, अददोरोमाद, लबनान
 अशशैख अददुकतूर अहमद तमीम,
 अलउस्ताज अशशैख मुहम्मद सईद अलहाज अली, लबनान
 अलउस्ताज शैख जहीर फीयूमी, लबनान
 अलउस्ताज शैख अहमद महमूद लबनान
 अशशैख तारिक निजाम, लबनान
 अलउस्ताज शैख तारिक गन्नाम लबनान
 अशशैख वलीद अलहबली लबनान
 अल्लामा अशशैल मुहम्मद दाइल हंबली, शैखुलजामिया
 अलफतुलइस्लामी जामिआ बेलाल दमशक, (शाम)
 फजीलतुशैख मुहम्मद ईसा मानेअउहमीरी,
 यजीरुलऔकाफ हुकूमत मुत्तहिदा अरब इमारात
 अलहाज जावेद खालिद अलहिन्दी, जदा, (सऊदी अरब)
 अलहाज मुहम्मद अशरफ औजी कादरी रजवी, दुबई

(मुल्तहिदा अरब अमारात)

श्रीलंका के खुलफा :

मौलाना कारी नूरुलहसन, नाज़िम आला मदरसा

फैजाने रज़ा, कौलमबो

जनाब अलहाज मुहम्मद इदरीस पटैल

रज़वी, कौलमबो

जनाब अलहाज अब्दुलगफ़ार हाजी बाबू रज़वी कोलमबू

अलहाज हाफ़िज़ मुहम्मद अहसान पटैल रज़वी कोलमबू

साऊथ अफ़रिका के खुलफा :

मौलाना मुहम्मद शमीम अशरफ़ कादरी, इमाम, व

ख़तीब लेडीज असमथ, (साऊथ अफ़रिका)

जनाब अलहाज सय्यद इब्राहीम कादरी, डरबन, साऊथ अफ़रिका

अमरिका के खुलफा :

मौलाना मुफ़ती कमरुलहसन कादरी, सद्र नार्थ

अमरिका हलाल कमेटी, अन्नूर मस्जिद, होस्टन

अलहाज डाक्टर मुहम्मद ख़ालिद रज़वी, शका गो

मौलाना सय्यद औलाद रसूल कुदसी इब्न मुफ़ती

अब्दुलकुददूस, कैलोफ़ोर्निया

मौलाना डाक्टर गुलाम ज़रकानी इब्न अल्लामा

अरशदुलकादरी, इमाम, ख़तीब मक्का मस्जिद, डीलीक्स

मौलाना मुहम्मद उस्मान कादरी (साबिक मिम्बर

पारलेमेन्ट पाकिस्तान) वरजीनिया

दीगर ममालिक के खुलफा :

अलहाज आसिफ़ मुहम्मद पटैल रज़वी, लैलानंग वे, मलावी

मौलाना मुहम्मद आरिफ़ बरकाती, इमाम व ख़तीब

जामेअ मस्जिद, लैलांग वे

मौलाना अलहाज कारी अहमद रज़ा

कादरी, हरारे, ज़मबाबवे

अलहाज हाजी लियाक़त दिल मुहम्मद रज़वी डैनहीग हायलेन्ड

मुफ़ती अब्दुलमजीद कादरी, इमाम मस्जिद मारीशस

मौलाना वसी अहमद रज़वी, इमाम व ख़तीब मस्जिद

बरमंधम

इमामत व ख़िताबत :

हज़ारत ताजुशशरीआ ज़माना ताल्ब इल्मी से ही

इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देने लगे थे, वालिद माजिद

मुफ़स्सिर आजम हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ जीलानी

बरेलवी ने बा ज़ाबता तौर पर रज़ा मस्जिद की इमामत व

ख़िताबत का मन्सब ज़लीला के लिए तहरीरी वसीयत नामा

जारी किया था। हुज़ूर मुफ़ती-ए-आज़म कुददुस सिरहू का

मामूल था कि जब ताजुशशरीआ हमारह होते तो आप को

ही नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाते। एक असी दराज़ से

नमाज़ ईदैन बरेली की ईदगाह में इमामत के फ़राइज़

अन्जाम दे रहे हैं। मन्सब फ़र्ज शनासी और परोकार तरीक़े

से मुतअल्लिका फ़राइज़ अन्जाम देते हैं। जब अप कुरआन

शरीफ़ की तिलावत करते हैं, या खुत्बा पढ़ते हैं तो लेहने

दाऊदी की याद कानों में बाज़ग़श्त करने लगती हैं। आप

की किरअत में अरबी मिस्री लब व लहजा पाया जाता है।

उलूम व फुनून में महारत :

ताजुशरीआ उलूम मअकूलात व मन्कूलात में एकसाँ महारत रखते हैं। दीन कथिम की तजदीद, सुन्नत की तरवीज, और बिदआत व मुन्किरात के इस्तिहसाल में जिस कद्र सई आप ने फरमाई वह आप ही का हिस्सा है। हजरत ने जिस मौजू या किसी मसअला पर कलम उठाया उस पर बे तकल्लुफ लिखते चले गये। जिस मसअला की तहकीक़ फरमाई दलाइल के अंबार लगा दिए। मुहदिदस कबीर अल्लामा जियाउलमुस्तफ़ा कादरी अमजदी ने इमाम अहमद रज़ा कांफ़्रेस में कहा कि :

अल्लामा अज़हरी के कलम से निकले हुये फ़तावा के मुताला से ऐसा लगता है कि हम आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु की तहरीर पढ़ रहे हैं। आप की तहरीर में दलाइल और हवाला जात की भर मार से यही जाहिर होता है। (तकरीर इमाम अहमद रज़ा कांफ़्रेस बरेली-24 सफ़रुलमुज़ज़फ़र-1425 हिजरी)

ताजुशरीआ मन्दज़ा जैल उलूम व फुनून में कामिल महारत रखते हैं। तफ़सीर, उलूम-ए-कुरआन, हदीस, उसूले हदीस फ़िक्ह, मुआनी व बयान, जबर व मुकाबिला, मुनाज़िरा व मराया, हयाते जदीदा मुरबबआत, इल्मुलजफ़र, अकाइद व कलाम, मन्तिक, फलसफ़ा, सफ़, नोह तजवीद व करअत, तसव्वुफ़, तारीख़, अदब, नअत, उरुज व क्वाफी, तौकियत, हिसाब हयअत हिन्दसा, रियाज़ी, फ़न्ने किताबत वगैरा वगैरा काबिल जिक्र हैं।

बे मिसाल हुसने ख़त :

हजरत ताजुशरीआ फ़न्ने खिताती में महारत रखते हैं। इसलिए आप के मकातीब, मज़ामीन व मकालात और फ़तावा हुस्न तहरीर के लिहाज़ से बे मिसाल हैं। उन तहरीरात को देखते ही दिल बाग़ बाग़ हो जाता है, इल्म व फ़ज़ल के साथ साथ यह ख़ूबी बहुत कम उलमा व मुफ़ितयाने एज़ाम में पाई जाती है। हजरत का तर्ज़ खिताती अहद व ज़मान के ऐतिबार से बदलता रहा है मगर हर ज़माना की तहरीरें अपने आप में आला नमूना और बे मिसाल खिताती का आइना दार हैं। ऐसा मालूम होता है कि मौतियों की लड़ियाँ बिखरी हुई हैं। दर हकीकत हुस्न तहरीर से खुद शख़्सियत का वह ज़माले मरख़ी बे हिजाब हो जाता है जिस तक रिसाई बहुत मुश्किल है। हजरत के मकातिब के हुस्न जाहिरी से हुस्न मअनवी आशकार होता है। राकिमुस्सुतूर के पास हजरत की तहरीरात अहद व अहद मौजूद हैं। ज़माना-ए ताल्व इल्मी, वादे फ़रागत, अहद दर्स व तदरीस, अहदे दारुलइफ़ता, अहदे जानशीनी, ज़माना-ए-शबाब और मौजूदा वक़्त की तहरीरात महफूज़ हैं। इस से हुस्न तहरीर और फ़न्ने खिताती का बख़ूबी अन्दाज़ा होता है। और हजरत की एक ख़ुसूसियत है कि फुलस्केप के कागज़ पर बगैर नीचे कुछ रखे लिखते जाते हैं और मजाल है कि कोई लाइन जरा सी भी टेढ़ी हो जाये।

अमर्बिल मुआरिफ़ व नही अनिलमुन्किर :

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़ती-ए-आज़म अल्लामा

मुहम्मद अखतर रजा अजहरी बरेलवी ने अपनी पूरी जिन्दगी अमर्बिल मारुफ और नही अनिलमुन्कर का मुकददस फरीजा इन्तिहाई खुलूस व लिल्लाहियत के साथ अदा किया और कर रहे हैं। अल्लाह तआला का हुक्म है कि उम्मत मुहम्मदिया(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)तमाम दूसरी उम्मतों से इसलिए मुमताज है कि वह भलाई का हुक्म देती है और बुराई से रोकती है। इसलिए "उम्मत मुहम्मदिया" की यह खुसूसियत है कि अमर्बिलमारुफ में सारी उम्मतों पर फौकियत रखती है, और आप अपने तमाम मुआसिर उलमा व मशाइख में फौकियत रखते हैं। यह फौकियत उस वक्त और बढ़ जाती है जब मुम्बई में सुन्नी, शीआ, बोहरा, खोजा, गैर मुकल्लिद, नदवी, दैबन्दी और जमाअते इस्लामी वगैरा बातिल फिरकों से इत्तिहाद किया गया। आप ने उसकी शिद्दत से मुखालिफत की। उत्तर प्रदेश में एक सियासी तौर पर मुशिरकीन से इत्तिहाद व मोहब्बत की फ़जा हमवार की जा रही थी। और उस रविश को ऐने इस्लाम बताया जा रहा था। आप ने सख्त मुखालिफत कर के इस इत्तिहाद के शीराजे को मुन्तशिर कर दिया। कराची और लंदन में भी वहाबी, सुन्नी को सियासी और दैनलअकवामी मसाइल के नाम पर एक पलैट फार्म पर लाने की बात हो रही थी तो आप ने इस इत्तिहादे उम्मत के मुतअल्लिक फरमाया कि "हक और बातिल का इत्तिहाद सुबह कियामत तक नहीं हो सकता"।

मुझे खूब याद है कि आजाद इन्टर कालेज बरेली में

आलइन्डिया जमाअत रजा-ए-मुस्तफा ने अजमते मुस्तफा कांफ्रेंस(2002 ई.)का इन्वेकाद किया था, हजरत ने हजारों के मजमअ से खिताब फरमाते हुये कहा कि:

आप लोगों को नसीहत करता हूँ और वसीयत करता हूँ कि आला हजरत कुददुस सिररहु के मसलक पर काइम रहना, वहाबियों और दूसरे फिरकों से मेल जूल, खाना पीना या किसी भी तरह का इत्तिहाद जाइज़ नहीं हैं। इन फ़िर्काहाये बातिला से ता कियामत इत्तिहाद नहीं हो सकता। मेरे खान्दान के लोग हो या मेरा बेटा ही क्यों न हो, अगर आप देखें कि मसलके आला हजरत से हट गया है तो दूध से मक्खी की तरह निकाल कर बाहर कर दें। छोड़ दें"।

हजरत ने "लफ़्जे कमली" और "तस्वीर" कशी और टी.वी रेडियो और टाई पर फाजिलाना मकाला और फतावा लिख कर आलम-ए-इस्लाम को हक व सदाकत का दर्स दिया। मुम्बई में एक फितना-ए-अजीम का सिदबाब करते हुये मुल्ला बुरहानुद्दीन को तौबा करने पर मजबूर होना पड़ा, गुजरात में कोमी एकता सम्मिलन में शिरकत करने वालों की गिरफ्त फरमाई तो उन लोगों ने बरआत का इजहार किया। हजरत ने मसाइल फिक्ह के इजहार और मसलक अहले सुन्नत व जमाअत खिताबत की तर्जुमानी और हिफाजत व सियानत में मफाहिमत कभी न की। आप की जात गिरामी अमर्बिलमारुफ व नही अनिलमुन्कर की जिन्दगी की आइनादार है।

उम्मत मुस्लिमा की फिक्र मन्दी :

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम जहाँ उम्मत मुस्लिमा की मजहबी रहनुमाई फरमा रहे हैं, वहीं कौमी व मिल्ली मसाइल में भी रहनुमाई का फरीज़ा अन्जाम दे रहे हैं। आलमे इस्लाम को दर पेश मसाइल के हल और उलमा-ए-अहले सुन्नत के इन्दिया के इजहार और बैनलअक़वामी ताकतों पर दबाओ बनाने के लिए आप ने उस रज़वी के हसीन मौका पर 22/जुलाई 1995 ई. में मर्कज़ी दारुलइपता सौदागिरान में काइदीने मिल्लत,उलमा, मशाइख की मौजूदगी में पैचीदा मसाइल पर बहस व मुबाहिसा के बाद करार दाद पास की गई। इन करारदादों में यकसा सीवील कोड के निफाज़ की मुखालिफत,तन्जीम अइस्मा मसाजिद के ज़रीअ औकाफ पर ग़ासिबाना कब्ज़ा,उल्म दीनी और दुनियावी की तरफ मुसलमानों की खुर्सी तवज्जह मरकूज़

करने,आपसी इन्तिशार व इख़िलाफ़ को मैदाने जंग व जदाल के बजाये अपने काइदीन की बारगाह में तवज्जो तलबी,चीचिनया और फिलिस्तीनी मुसलमानों की हिमायत, टाडा के तिहत गिरफ्तार मुसलमानों की आज़ादी वगैरा वगैरा उमूर पर हुकूमत हिन्द से मुतालवात किए गये।

इस मुश्तरका अख़बारी एलानिया पर हजरत के एलावा अल्लामा ज़ियाउलमुस्तफ़ा कादरी,मौलाना अब्दुलमुदीन नोअमानी,मौलाना अब्दुलमुस्तफ़ा रदोलवी, अलहाज़ मौलाना मुहम्मद सईद नूरी,मौलाना रियाज़ हैदर

हन्फी, मौलाना अनवार अहमद कादरी,मौलाना आरज़ु अशरफी,अल्लामा मुहम्मद हसीनी अशरफी,मौलाना मुहम्मद हुसैन अबूलहक्कानी,मुफती मुहम्मद मतीउर्रहमान मुजतर रज़वी,मौलाना बशीरुलकादरी वगैरा के दस्तख़त हैं।

मजारात पर औरतों की हाज़री :

चन्द वही ख़्वाहान मसलक अहले सुन्नत व जमाअत ने उस रज़वी में औरतों की आमद पर जानशीन-ए- हुजूर मुफती-ए-आजम की तवज्जोह मब्ज़ूल कराई,हज़रत ने फौरन 26 जुलाई 1995 ई को एक अपनी तरफ से मज़मून शाइअ कराया कि मजारात पर औरतें न आयें,और यही आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ौं फाज़िले बरेलवी का फरमान है। हज़रत ने तमाम मुरीदीन व मुतवस्सिलीन के लिए हिदायत नामा जारी किया कि "अपने साथ ख़्वातीन को मजार शरीफ पर न लायें।"

तहफ़्फ़ुजे मुस्लिम परसनल ला की तहरीक :

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम अल्लामा मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ौं अज़हरी बरेलवी उम्मत मुस्लिमा की रहनुमाई और कियादत में हमेशा पेश पेश रहे। एक जमाना वह था जब शाह बानू मसअला को ले कर पूरे मुल्क में मुस्लिम परसनल ला पर हमले किए जा रहे थे, सुप्रीम कोर्ट ने शरीअत इस्लामिया के मन्शा व मबदा के खिलाफ़ फैसला सादिर कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट के फैसला के खिलाफ़ उलमा अहले सुन्नत ने चैलेंज किया और पुरे मुल्क में एहतिजाजी मजाहिदा व इजलास के

जरीआ अपने जज्बात व एहसासात को हुकूमत हिन्द तक पहुँचाया। अवामी सतह पर दबाओ इस कद्र बढ़ गया था कि हुकूमत हिन्द को मजबूरन पारलेमेन्ट के जरीआ कानून बन कर सुप्रीम कोर्ट के फैसला को कलअदम करार देना पड़ा (तहफफुजे मुस्लिम परसनल ला अज मौलाना यासीन अखतर मिरवाही मतबूआ दारुलकलम देहली)

हुकूमती ओहदा से इस्तिगना :

उत्तरप्रदेश के साबिक वजीर आला नारायन दत्त तैवारी (गवर्नर आंधरा प्रदेश) खान्दान आला हजरत इमाम अहमद रजा कादरी फाजिले बरेलवी से गहरा तअल्लुक रखते हैं। उन्होंने ने अपने अहद में हजरत के बरादरे अकबर मौलाना रैहान रजा खौ रहमानी मियाँ को एम-एल-सी-नामजद किया था। उनकी मुकरर्रा मीआद खत्म हो जाने के बाद जानशीन-ए-मुफ्ती-ए-आजम के लिए कोशा रहे मगर हजरत ने मना फरमा दिया। 1989 ई में जनाब उस्मान आरिफ नकश्बन्दी (गवर्नर उत्तर प्रदेश) आप के दरे दौलत पर हाजिर हुये और एम-एल-सी-नामजद करने की हुकूमत उत्तरप्रदेश की मनशा जाहिर की मगर हजरत ने ओहदा कबूल करने से मना फरमा दिया। उत्तर प्रदेश के गवर्नर उस्मान आरिफ ने आप से बहुत मिन्नत व समाजत की मगर आप राजी न हुये। उस्मान आरिफ साहब आप से कल्बी लगाओ और अकीदत रखते थे। औलिया-ए-किराम के आस्तानों पर हाजरी देना और मशाइख से दुआयें लेना उन का मामूल था। हजरत की बे पनाह इज्जत और अदब

व एहतिराम करते थे। मगर कुरबान जाइये उस अल्लाह के बली पर कि दुनिया को गालिब होने न दिया और हुकूमती ओहदा से हमेशा दूर रहे। किया आज के तरक्की याफत दौर में ऐसा मुम्किन है?

मुरादाबाद के मुकद्दमा में शान्दार कामयाबी :

अल्लाह तआला जानशीन-ए-हुजूर मुफ्ती-ए-आजम अल्लामा अखातर रजा अजहरी महजुल्लाहु को वह मकबूलियत अता फरमाई है कि जिस एलाके में पहुँच जाये वह एलाका का ऐलाका आप का गरवीदा हो जाता है। मुफ्ती सय्यद शाहिद अली रजवी रामपुरी के बकौल : जहा दूसरे पीराने एजाम सालिहासाल लोगों को दाखिले सिलसिला करने के लिए महनत करते हैं, तरगीब दिलाते हैं, मगर हजरत सिर्फ इस जगह एक घन्टा के लिए तशरीफ ले जाये तो वह लोग आप के नूराही जलवा जेबा को देखते ही मुरीद होने के लिए बिला तरगीब बे तावाना बेकरार हो जाते हैं। यह खुदादाद मकबूलियत आप को ही मयस्सर है।

इसी मकबूलियत व शोहरत को देखते हुये हासिदीन से न रहा गया, इन से कुछ न बन पड़ा तो हजरत के खिलाफ एक मुकद्दमा दाइर कर दिया। पहले थाना नाग फनी मुरादाबाद में एफ-आई-अर-दर्ज कराने के लिए इस्पेक्टर से रजुअ किया। जब उस ने इस फर्जी रिपोर्ट पर मुकद्दमा काइम करने से मना कर दिया तो इस हासिद ने 20/नोम्ब 1996 ई. को मुरादाबाद कोर्ट में इस्तिगासा

दाइर किया। जिस की बुनियाद पर थाना में एफ-आई-आर-दर्ज हो गई। जब बरेली इत्तिलाअ पहुँची तो साहबजादा गिरामी मौलाना अस्जद रजा खॉ कादरी, मुफ्ती अब्दुलमन्नान कलीमी मुरादाबादी, राकिमुस्सुतूर और बरादरम मुजीब रजा खॉ मरहूम इब्न हज़रत मौलाना हबीब रजा खॉ बरेलीवाली जनाब अफरोज मियाँ मुरादाबाद पहुँचे। कोर्ट में जानकारी हासिल की, बादोहु अपना जवाब दाखिल किया गया। हमारे वकील के जवाबत सुन कर फाजिल जज हैरान रह गया। जज ने 22/फरवरी 1999 ई को हज़रत के हक में 8/ सफ़हात पर मुश्तमिल शान्दार फैसला सादिर किया। यह बात याद रहे कि बावजूद मुखालिफ़ की हज़ार कोशिशों के हज़रत कभी भी कोर्ट तशरीफ़ नहीं ले गये। मुक़द्दमा की पेरव कारी राकिमुस्सुतूर ने की, हर तारीख़ पर बरेली से मुरादाबाद जाता था अलहम्दुलिल्लाह हक़ की फ़तह व नुसरत हुई और बातिल शिकस्त व रीख़त हुआ।

आलइन्डिया सुन्नी जमईअतुलउलमा :

वहाबी तन्जीम जमिअतुल उलमा के बढ़ते हुये असरात को जाइल करने और उलमा अहले सुन्नत को मरवूत व मज़ाबूत करने की गर्ज़ से 1970 ई. में सय्यदुलउलमा हज़रत मौलाना सय्यद आले मुस्तफ़ा भारहरवी रहमतुल्लाहि अलैहि(सज्जादा नशीन खान्काह बरकातिया) की सदारत में "आल इन्डिया सुन्नी जमईअतुलउलमा की फ़आल कियादत की वजह से पूरे मुल्क में आनन फ़ानन विरांचो काइम हो गई और पूरी बाडी तश्कील

दे दी गई। हज़रत सय्यदुल उलमा के इन्तिकाल हो जाने के बाद जनवरी 1980 ई को बड़ी मस्जिद मदनपुरा मुम्बई में आल इन्डिया सुन्नी जमईअतुल उलमा की मज्लिस आमिला व मज्लिस आमा की मीटिंग हुई जिस में नये सद के इन्तिख़ाब के लिए राये शुमार हुई। सब ने जानशीन-ए-मुफ्ती-ए-आज़म अल्लामा अख़तर रजा खॉ अज़हरी के नाम की तजवीज़ पेश की। हज़रत ताजुशरीआ को 1980 ई में मुत्तफिका तौर पर सुन्नी जमईअतुलउलमा को सद मुन्तख़ब कर दिया गया। ता हुनूज़ आप की सदारत में यह तन्जीम काम कर रही है। मौलाना मन्सूर अली खॉ इस के जनरल सिक्रेट्री हैं और आलइन्डिया जमाअत रजा-ए-मुस्तफ़ा के आप सर परस्त आला भी हैं।

बाबरी मस्जिद का क़ब्ज़ा :

चार सौ साला तारीख़ी बाबरी मस्जिद(अजूधिया जिला फैज़ाबाद) का मसअला इस्लामियान हिन्द के लिए बहुत अहमियत रखता है। फ़िर्का परस्तों ने बा जोर ताकत 6/दिसम्बर 1992 ई को शहीद कर दिया! बाबरी मस्जिद की शहादत से कब्ल और बाद में बाज़याबी की तहरीक में ताजुशरीआ जानशीन-ए-मुफ्ती-ए-आज़म ने बड़ा अहम किरदार किया। हुकूमत हिन्द से काफ़्रसों और मैमुरन्डम के ज़रीआ मुतालबात की तहरीक को बाआवाज़ बलन्द पेश करते रहे। हाफ़िज़ लईक़ अहमद खॉ जमाती सज्जादा नशीन आस्ताना जमालिया रामपुर और मुफ्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी की कियादत में चल रही "जेल भरी तहरीक" की

मार्च 1986 ई. में हज़रत ने हमालियत का ऐलान फरमाया। हज़रत के ऐलान के बाद तहरीक में जान आई। राकिम भी एक दिन जेल में रहा।

उत्तरप्रदेश के साबिक वज़ीर आला नाराइन दत्त तैवारी (अब अंधेराप्रदेश के गवर्नर हैं) और वज़ीर आजम राजयूगांधी के सियासी सलाह कार मिस्टर एम-एल-भुतेदार ने 17/नोवंबर 1989 ई में बाबरी मस्जिद के क़िय़ा पर आप से मफ़ाहिमत की कोशिश की जिस में वह ना काम रहे। दर्शें इस्ना दूसरे काइदीन ने अपने को मुस्लिम रहनुमा पेश कर के कुछ मफ़ाद हासिल करने की कोशिश की जिस पर आप ने सख़्त नाराज़गी का इज़हार किया और ऐसे रहनुमाओं के बाइकाट की अवाम से अपील की। (रोज़ नामा अमर उजाला आगरा 10 नोवंबर 1989 ई)

जनवरी 1995 ई दो पहर दो बजे की बात है कि वज़ीर आजम पी वी नरसिमहा राऊ के खुसूसी सिक्रेट्री जानशीन मुफ़ती-ए-आज़म की खिदमत में वज़ीर आजम का पैग़ाम ले कर हाज़िर हुये। वह राकिमुस्सुतूर से वाक़फ़ियत रखते थे, मैंने उनकी हज़रत से मुलाकात कराई, उन्होंने वज़ीर आजम का तहरीक कर्दा ख़त ज़बानी तौर पर बताया कि वज़ीर-ए-आज़म हिन्द आप की शख़्सियत से बहुत मुतास्सिर हैं और मुलाकात कर के दुआयें लेना चाहते हैं। आप दौलत कदा पर आने की इज़ाज़त एनायत फरमा दें। हज़रत ने फ़माया कि मैं मज़हबी आदमी हूँ, मुझे मेरे बुजुर्गों ने जिन उमूर की जिम्मादारी दी है उसी को अन्जाम देने में

मसरूफ़ हूँ, मैं सियासी नहीं हूँ, और उसके एलावा वज़ीर-ए-आज़म के हाथ बाबरी मस्जिद की शहादत में मुलख़िस हैं। पूरी उम्मत मुस्लिमा नाराज़ है। किसी भी सूरत में मुलाकात करना पसन्द नहीं है। अगर वह एक अकीदत मन्द की तरह बग़ैर किसी सियासी प्रोग्राम के आस्ताना शरीफ़ आना चाहते हैं तो आयें और हाज़री दे कर चले जायें।

मैं ऐनी शाहिद हूँ कि बावजूद हज़ार कोशिश के हज़रत ने मुलाकात नहीं फ़रमाई जब कि वज़ीर आजम हिन्द 7/ घन्टा बरेली के सरकट हाऊस में आप का इन्तिज़ार करते रहे।

हालते हाज़िरा के शरई तफ़ाज़े:

एक मुफ़ती के लिए ज़रूरी है कि ज़माना के हालात और कवाइफ़ पर नज़र रखते हुये शरई और आईली कानूनी रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम दे। 1995 ई में हुकूमते हिन्द के शोअबा "एलेकशन कमीशन" ने तमाम बाशिन्दगाने मुल्क के लिए "शनाख़्ती कार्ड" का रखना और इस्तेमाल करना ज़रूरी करार दे दिया था। इस "शनाख़्ती कार्ड" में नाम वलदियत और पूरा पता व उमर दर्ज होती है। साथ ही फोटो चिस्पाकर होता है। फोटो हराम होने की वजह से आस्ताना आलिया रज़विया के मरकज़ी दारुलइफ़ता में "शनाख़्ती कार्ड" बनवाने या न बनवाने के लिए सवालात का अंबार लग गया। दूसरी तरफ़ एलेकशन कमीशन ने भी सख़्ती करना शुरू कर दी कि हर काम में मसलन बैंक

इकाउन्ट, खरीद व फरोख्त को लाजमी करार दिया गया है। उसी दौरान अलजामिअतुलअशरफिया मुबारक पुर में "मजिसले शरई" की मीटिंग का एहतिमाम हुआ। हजरत जानशीन मुफती-ए-आज़म ने मजिसल शरई की सदारत फरमाई। रईसुल्लहरीर अल्लामा अरशदुलकादरी की तजवीज पर आप ने "शनाख्ती कार्ड" बनवाने की इन अल्फाज के साथ इजाजत दी कि "इस सूरत में तलब के वक्त जरूरतें मलजिया या हाजत शदीदा मुतहक्क होंगी। लिहाजा खास शनाख्ती कार्ड के लिए तस्वीर खिचवाने की इजाजत होगी" (फरवरी 1995 ई मजलिस शरई मुबारकपुर)

अवाम की शदीद तरीन जरूरत के तेहत हजरत ने मशरूत इजाजत अता फरमाई, तो एक तब्का में नुक्ता चीनी शुरू हुई, जब इस की खबर हजरत को हुई तो आप ने एक वजाहती बयान जारी फरमाकर बहस को बन्द कर दिया। लिखते हैं :

ऐसे नये मसाइल जो फिलवाके फरइया हों, और उन इस मुतअल्लिक कोई सरीह जुजइया न मिल सके तो हर आलम नहीं बल्कि माहिर व तजर्बा कार मुफती की तरफ रजुअ करना चाहिए। और इस मुफती पर लाजिम है कि उसूल शरई के पेश नजर इस का हुक्म सादिर फरमाये। उसूल शरअ से हट कर फतावा देना हर गिज जाइज नहीं। अगर उस ने जिसे दलील करार दिया और फिर वाजेह हुआ कि यह दलील, दलील शरई नहीं तो फौरन इस पर रजुअ लाजिम है और हक का ऐलान करना

चाहिए। किसी हराम शय के मुबाह होने का फतवा उस वक्त दिया जायेगा जबकि वहाँ यह जाब्ता सादिक आये। "अज्जरुरात तन्बीहुलमहजूरात" और मुफती को तयक्कुन हो जाये कि इस जरूरत शरइया के मुआरिज कोई दूसरा काइदा शरइया नहीं है। (कल्मी फतावा)

अरब दुनिया में मसलके आला हजरत की इशाअत:

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आज़म ने हिन्द पाक के एलावा दरजनों अरब ममालिक का तब्लीगी सफर फरमाया, और अब भी यह सिलसिला जारी है, आला हजरत इमाम अहमद रजा कादरी फाजिले बरेलवी के मसलक की तरवीज व इशाअत के लिए आप अंधक जिद व जिहद फरमा रहे हैं। उस की एक अज़ीम मिसाल यह है कि रमजानुलमुबारक 1404 हिजरी "रोजनामा अलहुदा अबूजहबी" ने खुसूसी नम्बर शाइ किया। जिस में यह लिखा कि "बरेलियत एक नया फितना है, नया मजहब है" ताजुशशरीअ को यह पढ़ कर शदीद बे चैनी हुई कि अरब की दुनिया में आला हजरत कुददुस सिर्रहु को बदनाम किया जा रहा है। आप ने "मुत्तहिदा अरब इमारात" से शाइ होने वाले (11) ग्यारह मुल्की अख्बारात से रजुअ किया और "रोजनामा अलहुदा" का जवाब अरबी में तरतीब दे कर शाइ कराया। और बाजाब्ता तौर पर बर्रे सगीर में एक मुहिम चलाई ताकि उन अख्बारात पर दबाओ बने और आला हजरत कुददुस सिर्रहु के मसलक को बदनाम करने वालों की साजिश नाकाम हो जाये। हजरत ने हिन्दुस्तान,

पाकिस्तान और बंगला देश में दस्तखती महम की अपील भी जारी की।

गैर मुकल्लिद के फ़तना-ए-अजीम का सदबाद

गैर मुकल्लिद ने 1993 ई. में अपने एअतिकाद मसलक की तशहीर के लिए एक नया फारमोला ईजाद किया कि हर इसलिए निजाई को मिडिया में पेश किया जाये जिस से उम्मत मुस्लिमा में इन्तिशार फैले और वह अहनाफ के खिलाफ हो। उसी इन्दिया के पेशे नजर 30/मई 1993 ई. को एक मजलिस में तीन तलाक का मसअला मिडिया में उछाल दिया गया कि :

अब कोई शौहर अगर तीन बार तलाक कहे तो शरीअत के मुताबिक तलाक नहीं मानी जायेगी, और उस से मर्द व बीवी उस के हुकम और जिम्मा दारी पर कोई असर नहीं पड़ेगा। अगर कोई शौहर हर एक साथ तीन बार तलाक दे तो उसे कानून एक ही तलाक कहा जायेगा और शरीअत के मुताबिक उसे बदला भी जा सकता है।' (रोजनामा अमरउजाला बरेली 30 मई 1913 ई.)

जब जानशीन-ए-हुजूर मुपती-ए-आजम को गैर मुकल्लिद के गुमराह कुन बयान की इत्तिलाअ हुई तो आप ने एक प्रेस कांफ्रेंस बुलाकर फतावा जारी फरमाया, जिस में पाजेह तौर पर लिखा कि:

तीन तलाक नाम व निहाद व जमिअत अहले हदीस का एक बयान अखबार में मुलाहिजा हुआ जो न सिर्फ हन्फी बल्कि शाफेई, मालिकी और हंबली सभी आइम्मा

मजाहब के नजदीक सरीह खिलाफ और नाकाबिले अमल मरदूद व बातिल है, और मुसलमानों में फूट डालने की नापाक कोशिश नीज सियासी चाल है। मजलिस वाहिदा में दी गई तीन तलाक तीन ही मानी जायेगी। उस पर सभी आइम्मा का इत्तिफाक है।

(रोजनामा दैनिक जागरन बरेली 31/मई 1993ई.)

बरेली में मदारिस का कियाम :

बाज नागुफता व हालात की वजह से जानशीन हुजूर मुपती-ए-आजम और आप के बरादर असगर मौलाना मन्ना रजा खॉ मन्नानी बरेलवी ने 1982 ई. में "जामिआ नूरिया" रजविया के कियाम का फैसला किया, कोई मअकूल जगह न होने की वजह से जामिआ नूरिया को पुराना शहर की तारीखी मस्जिद बमअरूफ "मिरजाई मस्जिद" महल्ला घेरजाफर खॉ में सरे दस्त शुरू कर दिया। सदरुलउलमा मौलाना मुपती तहसीन रजा खॉ बरेलवी उसके शैखुल हदीस मुकरर हुये। 1984 ई. में जमीन हासिल हो जाने के बाद जामिआ नूरिया को महल्ला बाकरगंज बरेली में मुत्तकिल कर दिया गया।

बरेली सवादे आजम अहले सुन्नत का मर्कजी शहर है, मगर यहाँ पर कोई ऐसा वसीअ और जामिआ इदारा न होने की वजह से तिशानिगाने उलूम को मायूस होती थी। 1998ई. के आवाखिर में राकिमुस्सुतूर के इसारार पर "मर्कजुदरासातिलइस्लामिया जामिआतुर्रजा" के कियाम के लिए मन्सूबा बन्दी और अमली जामा पहनाने की कोशिश

तेज हो गई। अखिलन हजरत राजी नहीं थे, मगर राकिमुस्सुतूर ने हालात और जरूरत का एहसास दिलाया तो तकरीबन दो साल बाद मन्जूरी एनायत फरमा दी। 1999ई. में बेरुने शहर मुख्तलिफ जगहों को देखा गया। बालाआखिर मथरापुर(बरेली)में जगह पसन्द कर ली गई। 1999ई.के वस्त में सब से पहले 24/ बीधा आराजी की खरीदारी हुई, बादोह साल भी में मुख्तलिफ ओकात में 80 विधा आराजी खरीदारी गई। राकिमुस्सुतूर की जिद व जहद से "इमाम अहमद रजा ट्रस्ट" भी बज्जद में आया। अलहम्दु तिल्लाहि इमाम अहमद रजा ट्रस्ट के जेरे एहतिमाम "जामिअतुर्रजा" हुसन व खूबी के साथ तअलीमी और तअमीरी मराहिल तै कर रहा है। हजरत के साहबजादा गिरामी कद्र मौलाना अर्रजद रजा खाँ कादरी जामिआ के नाजिम आला हैं, उन्हें की निगरानी और देख रेख में जामिआतुर्रजा का निजाम चल रहा है। चालीस हजार इस्कुयाइर फिट पर दो माला अजीमुशान खुबसूरत बिल्डिंग में दर्स निजामी की तअलीम हो रही है। एक हजार तलबा की रिहाइश को मदे नज़र रखते हुये दारुलइकामा की तअमीर मुकम्मल हो चुकी है। अब एक पब्लिक स्कूल और मस्जिद का तअमीरी मनसूबा पेशे नज़र है। यह सारा काम हजरत की सर परस्ती में अन्जाम पजीर हो रहा है।

कई जबानों पर महारत :

ताजुशरीआ को अल्लाह तआला ने कई जबानों पर मुकम्मल दस्तरस अता फरमाई है, अरबी, फारसी और उर्दू में

जहाँ बहेतरीन अदीब नज़र आते हैं तो वही दूसरी तरफ अंग्रेजी जबान पर भी आप को मुकम्मल उबूर हासिल है। आप ने इस्लामिया इन्टरकालेज बरेली में मामूली हिन्दी और अंग्रेजी पढ़ी थी मगर खुदादाद जिहानत व फतानत की वजह से आप ने अंग्रेजी में भी कमाल हासिल किया। साऊथ अफ्रीका, मलावी, जम्बावे, हरारे, मोरिशस, जर्मन, फ्रांस, हालैन्ड, इंगलैन्ड, अमरीका, कनाडा वगैरा वगैरा ममालिक की बैनलअकवामी कांफ्रेंस में अंग्रेजी ही में खिताब करते हैं। अंग्रेजी में आप ने सैंकड़ों फतावा तहरीर फरमाये, हजरत ने अंग्रेजी में सब से पहला फतवा 7/ मुहम्मद मुलहराम 1412 हिजरी/20/ जूलाई 1991ई में अलहाज हारुन तार रजवी(लीड स्मथ साऊथ अफ्रीका)के इस्तिफता के जवाब में तहरीर फरमाया, जो दारुस्सलाम और दारुहर्ब में मुस्लिम व जिम्मी काफिर से मुतअल्लिक है।

अंग्रेजी फतावा के दो मजमूअे डरबिन(साऊथ अफ्रीका)से शाइअ हो चुके हैं।

नाइब इन्कम टेक्स कमिशनर जनाब जोहूर अफसर खान रजवी बरेलवी (हाल मुकीम अजमीर शरीफ) से इस्तिदाअन मशवरा फरमाते थे। मगर मौसूफ का यह तास्सुर था कि : हजरत जिन अंग्रेजी अलफाज़ और जुमलों का इस्तेमाल करते।

हैं वह लोग़ात के एतिबार से बिल्कुल दुरुस्त होते हैं। इस तरह की सलासत व खानी भरी तहरीरें मुझे बहुत कम देखने को मिलें।

अंग्रेजी के एलावा आप को मैमुनी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, बंगाली और भोजपुरी वगैरा जवानों में भी सलाहियत हासिल है। आप बखुबी इन एलाकाई जवानों को समझते और हस्के जरूरत इस्तेमाल करते हैं। इन जवानों को सिखने के लिए कभी भी आप ने किसी उस्ताद के सामने जानवे अदब यह नहीं किया, यह खुदादाद सलाहियतों अल्लाह तआला ने आप को वरसा में अता फरमाई हैं।

औलाद अमजाद :

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम अल्लामा मुफती मुहम्मद अखतर रजा खॉं अजहरी बरेलवी से छ औलादें हैं, जिन में एक साहबजादे गिरामी हजरत मौलाना अस्जद रजा खॉं कादरी और पांच साहबजादिया(1) मोहतर्मा आसिया बैगम (जौजा आली जनाब अलहाज बुरहान अली रजवी देहली) (2) मोहतर्मा कुदसिया बैगम (जौजा मौलाना मुफती शुऐब रजा कादरी देहली) (4) मोहतर्मा अतया बैगम (जौजा हजरत मौलाना सलमान रजा खॉं बरेलवी) (5) मोहतर्मा सारिया बैगम (जौजा) जनाब मुहम्मद फरहान रजा हैं।

मौलाना अस्जद रजा खॉं कादरी :

मौलाना अस्जद रजा खॉं बरेलवी की पैदाइश 14 शअबानुलमुअज्जम 1390 हिजरी को ख्वाजा कुतब बरेली में हुई। हुजूर मुफती-ए-आजम कुददुस सिर्रहु ने आप के मुंह में लुआवे दहन डाल कर दाखिले सिलसिला आलिया कादिरया बरकातिया रजविया फरमाया। आप का पैदाइशी नाम "मुहम्मद मुनव्वर रजा मुहामिद" है, और उर्फ

नाम "अस्जद रजा"

जामिआ नूरिया रजविया बरेली में तअलीम हासिल की, आप के साथ राकिमुस्सुतूर को भी दर्स व रिफाकत का शर्फ हासिल रहा। हम दोनों जामिआ नूरिया रजविया के एलावा सदरुलउलमा हजरत मौलाना मुफती तहसीन रजा खॉं मुहदिदस बरेलवी के दोलत कदा पर शरह जामी और जलालैन शरीफैन पढ़ने जाते थे। आप ने इब्तिदाई कुतुब घर पर मुफती मुजफ्फर हुसैन रजवी और मुफती नाजिम अली कादरी से पढ़ें। दर्स निजामिया की मुतदाविल कुतुब बुखारी शरीफ, मिशकात शरीफ, तर्मिजी शरीफ वगैरा वालिद माजिद ताजुशरीआ से पढ़ी।

अमीन शरीअत हजरत अल्लामा सिबतैन रजा खा बरेलवी की साहबजादी मोहतर्मा राशिदा नूरी साहिबा से 2/शअबनुल मुअज्जम 1411 हिजरी/17 फरवरी 1991 ई बरोज इतवार को अक्दे मसनून हुआ। आप से चार लड़कियाँ और दो लड़के पैदा हुये। (1) अरीज फातमा (2) अमरा फातमा (3) मजीना फातमा (4) बुशरा फातमा (5) हुसाम अहमद रजा (6) हुमाम अहमद रजा पैदा हुये। अमीने मिल्लत हजरत मौलाना सय्यद शाह अमीन मियाँ सज्जादा नशीन खान्काह बरकातिया मारहरा शरीफ ने उर्स कास्मी बरकाती के मजमअ अक्तूबर 2001 ई में इजाजत व खिलाफत से नवाजा। वालिद माजिद ने सन्द फरागत के साथ ही साथ 2002 ई में तमाम सलासिल की इजाजत व खिलाफत और औराद वजाइफ आमाल व अशसगाल में

मजाज व माज़ून फ़रमाया। आप बड़ी सलाहियतों के मालिक हैं, कम्प्यूटर वगैरा जैसे असी उलूम व फ़ुनून में बगैर किसी उस्ताद के महारत हासिल की, और जदीद से जदीद तर की फ़हम व फ़रासत में लगे रहते हैं। अल्लाह तआला मौलाना अस्जद रज़ा खाँ कादरी को अपने इस्लाफ़ का सही जानशीन बनाये। अमीन सुम्मा अमीन।

नोट : मज़ीद तफ़सीली हालात जिन्दगी के लिए मुताला करें "ताजुशरीआ हयात और ख़िदमात" जो तक़रीबन पाँच सौ सफ़हात पर मुश्तमिल होगी। अन्क़रीब मन्ज़रे आम पर आने वाली है।

सेह लिसानी अदब पर उबूर-ए-कामिल

अज़-मुहदिदसे कबीर हज़रत अल्लामा मुफ़्ती ज़ियाउल मुस्तफ़ अम्जदी ताजुशरीआ हज़रत अल्लामा अज़हरी, साहिब यगाना रोज़गार मुहक्कि और साहिब बसीरत आलिम फ़कीह हैं। इल्म व फ़ज़ल और जुहद व तक़वा में आप अपने ज़ददे अमजद अहले सुन्नत सय्यदी आला हज़रत के वारिस मुन्फ़रिद हैं। अहकाक़ हक़ व इबताले बातिल का तहक्कीकी अन्दाज़ आप को वरासत में मिला है, आप खुदादाद वजाहत से मुत्तसिफ़ हैं। इसी लिए अरब व अजम के अवाब व ख़्वास आप से हुसूले फ़ैज़ के मुश्ताक़ रहते हैं और आप की ज़ियारत को ताज़गी ईमान का ज़रीआ मानते हैं।

अल्लाह तआला ने आप को कई ज़बानों पर मलका ख़ास अता फ़रमाया है। ज़बान उर्दू तो आप की घरेलू ज़बान है और अरबी आप की मज़हबी ज़बान है। इन दोनों ज़बानों में आप को खुसूसी मलका हासिल है जिस पर आप की उर्दू और अरबी नअतिया शाइरी शाहिद अदल हैं। आप के बर जस्ता और फ़िलबदीहा नअतिया अशआर फ़साहत व बलाग़त हुस्न तरतीब और नअत तख़ैयुल में किसी क़हना मशक़ उस्ताद के अशआर से कम दरज़ा नहीं होते। अरबी ज़बान के कदीम व जदीद उस्तूब पर आप को मलकाए रासिख़ हासिल है। आप की ख़िताबत व शाइरी और तर्जमा निगारी किसी पुख़्ता कार अरबी अदीब के अदबी कारनामों पर भारी नज़र आती है। ज़ामिआ अज़हर के दौरे तहसील

में जब आप का अरबी कलाम अजहर के शूयूख सुनते तो कलाम की सलासत व नज़ाकत और हुस्न तरतीब पर झूम उठते और कहते थे कि यह कलाम किसी ग़ैर अरबी का महसूस नहीं होता।

यह बाकिआ मेरे सामने ही का है कि जम्बा बोवे में एक मिस्री शैख ने आप के हुम्द यह अशआर सुने तो बहुत महजूज़ हुये और उस की नक़ल की फ़रमाइश भी कर डाली हज़रत अल्लामा अजहरी को मैंने इंगलैंड, अमरीका, साऊथअफ़रीका, जम्बाबोवे वगैरा में बर जस्ता अंग्रेज़ी ज़बान में तकरीर व वअज़ करते देखा है और वहाँ के तालीम याफ़ता लोगों से आप की तअरीफ़ें भी सुनीं और यह भी उन से सुना कि हज़रत को अंग्रेज़ी ज़बान के क़साकी उस्तूब पर उबूर हासिल है।

हासिल कलाम यह है कि आप जो कुछ लिखते बोलते हैं उस में तकल्लुफ़ात का दखल नहीं होता बल्कि आप के मज़ामीन या तर्जमा निगारी उमूमन बजरीआ इमला ही ज़बत क़लम किए जाते हैं। इसलिए आप के इल्मी कारनामे बरजस्तगी ही से मुत्तसिफ़ होते हैं फिर हर बात दलाइल से मुबर्रहन दिक्कत मुआनी पर मुश्तमिल जामिइयत से लबरेज होती है आप आला हज़रत कुददुस सिर्रहुलअजीज के कई नादिर रोज़गार इल्मी मुबाहि़स व तहकीकात पर मुश्तमि रिसालों की तकरीब व हाशिया निगारी इमला करा चुके हैं मशाइख़ अरब ने उन्हें पसन्द फ़रमाया और अपनी तकरीजात भी सुबुत फ़रमाये। रब्बे कदीर हज़रत ताजुशरीआ

अल्लामा अजहरी मददजुल्लाहिल आली की उमर व सिहत में बरकत दे। आमीन बेहुरमते सय्यदिल अम्बिया वल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, व आलाहि व सहबेही अजमईन, हस्बोनल्लाहु व नेअमल वकील।

मसलके आला हजरत के सच्चे दाई व तर्जुमान

मौलाना अलहाज मुहम्मद सईद नूरी, वियरमैन रजा एकेडमी मुम्बई
जानशीन हुजूर मुफती-ए-आजम हिन्द, ताजुशरीआ
फाजीयुलकज्जात हजरत अल्लामा मुफती, अखतर रजा खॉ
अजहरी दामजिल्लाहु अलैना मेरे हजरत, हुजूर मुफती आजम
की यादगार हैं। आप हुजूर आला हजरत और हुजूर मुफती-
ए-आजम रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के इल्मी व अमली
वरासत के चच्चे और हकीकी अमीन हैं। अल्लाह तबारुक
व ताआला ने आप के जरीआ सय्यदिना सरकारे आला
हजरत व हुजूर मुफती-ए-आजम रदियल्लाहु तआला अन्हुमा
के सिलसिले की बड़ी जबरदस्त इशाअत की है ज़माना-ए-
हाल और माजी करीब जिस की मिसाल पेश करने से
काजिर है।

मैंने कई मर्तबा हजरत की रिफाकत का शर्फ हासिल
किया है और खिदमत के भी कई मवाकेअ मयस्सर आये
हैं। सरकारे मदीना में हाजिरी और अग्रे की सआदतों से मैं
कई मर्तबा हजरत की मईत में बहरा अन्दोज हुआ। मक्का
मुअज्जमा, मदीना मुनव्वरा और पाकिस्ता वगैरा में हजरत
ताजुशरीआ की खिदमत का जर्रीन मौका मिला। मैंने
इन मकानात पर भी हजरत के इर्द गिर्द अवाम व ख्वास
का वही हुजूम देखा है जो हिन्दुस्तान में देखने को मिलता
है। इस से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आप मुल्क व
बैरुने मुल्क उलमा व अवाम के दरमियान एकसौ तौर पर
मकबूल हैं।

शहरे मुम्बई में महरमुलहराम, रबीउलअव्वल शरीफ
और रबीउलआखिर के दस ग्यारह और बारह रोज़ प्रोग्राम
एक ही स्टेज पर हुआ करते थे। इस जलसों में हुजूर
मुफती आजम के विसाल के बाद हुजूर ताजुशरीआ, शिरकत
फरमाते, इन में हजरत का वह इल्मी बयान होता था कि
उलमा व ख्वास अश अश कर उठते थे, अफसोस इस की
रीकरडिंग मौजूद नहीं है वरना यकीनन यह बहुत बड़ा
इल्मी सरमाया होता।

1987 ई में जब हुजूर जानशीन मुफती-ए-आजम
हज व जियारत के लिए तशरीफ ले गये इस सफर में
अम्मी जान(अहलिया मोहतर्मा) भी आप के साथ थीं। हजरत
को मक्का मुकर्रमा में गिरफतार कर लिया गया और ग्यारह
रोज तक कैद व बन्द में रखा गया। इस वक्त रजा
एकेडमी मुम्बई ने हजरत की रिहाई के लिए मुल्कगीर
तहरीक चलाई थी और जबर दस्त एहतिजाजी सिलसिला
शुरू किया था। इस वक्त की फाइल को शायद दीमक ने
खा लिया है वरना इस तहरीक की पूरी तफसील पेश की
जाती। इस वक्त तकरीबन तमाम अखबारात में हजरत की
गिरफतारी के खिलाफ बयानात दिए जा रहे थे। इस मौका
पर रजा एकेडमी मुम्बई के दौर रुक्नी वफ़द ने इस वक्त
के सऊदी कोनसिल से मुलाकात कर के हजरत की रिहाई
का मुतालबा किया था। इस वफ़द ने कोनसिल से कहा था
कि आखिराइन का ज़ुर्म किया है? इन को गिरफतार क्यों
किया गया है? सऊदिया गवर्नमेंट ने उन्हें शायद इसलिए

गिरफ्तार किया है कि वह इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी कुददुस सिरुहु के पर पोते हैं और हिन्दुस्तान के एक ज़बरदस्त आलिमे दीन और अहले सुन्नत व जमाअत के काइद व रहबर हैं। इस वक्त सऊदिया हुकूमत के अहल कारों को 'फौक्स' के ज़रीअे एहतिजाजी मुरासलात जारी किए जा रहे थे। बर्र सगीर के सुन्नियों में एक अजीब सी बे चैनी पाई जा रही थी। इस जमाने में हज कमेटी ऑफ इन्डिया के चेयरमैन अमीन खन्डवानी साहिब थे। मैंने उन से भी मुलाकात की और उनसे भी यही कहा कि वह अपने तौर पर हज़रत की रिहाई की कोशिश करें। उन्होंने यकीन दिलाया। वहाँ पर एक मौलवी साहिब से मुलाकात हुई बोले के मैं अल्लामा अखरत रज़ा ख़ाँ की रिहाई का मुतालबा इसलिए करूँगा कि वह एक सुन्नी आमिल हैं। मैंने कहा कि वह सिर्फ सुन्नी आमिल ही नहीं बल्कि मुक्तदा-ए-अहले सुन्नत हैं और हमारे पीर जादा हैं, इसलिए हमारी कोशिश और ज्यादा होनी चाहिए।

रज़ाएकेडमी ने सिर्फ उसी पर इक्तिफा नहीं किया बल्कि मुख्तलिफ़ तन्जिमों को साथ लेकर इब्राहीम रहमतुल्लाहि रोडमीराना मस्जिद के पास एहतिजाजी जलसे का ऐलान भी किया। यहाँ एहतिजाज की तैयारियाँ शुरू हो गयीं कि मक्का मकरमा से फौन पर इत्तिलाअ मौसूल हुई कि हज़रत को हुकूमते सऊदिया ने रिहा कर के मक्का मुकरमा से जद्दा रवाना कर दिया है और वह कल जद्दा से मुम्बई पहुँच जायेंगे।

हज़रत के इस्तिक्बाल के लिए कई गाड़ियाँ और बसें जिस में दारुलउलूम इन्फ़िया रजविया कलाबा मुम्बई के तलबा और असातिजा थे और भी दीगर हज़रात थे, बस और गाड़ियों के साथ एयरपोर्ट पहुँच गये। उन के एलावा दीगर पीर भाई और अहबाब अहले सुन्नत भी कसीर तअदाद में पहुँच चुके थे। हज़रत मौसूफ़ सुबह की फ्लाइट से मुम्बई पहुँचे थे। चूंकि अख़बारात वगैरा के ज़रीअे यह खबर आम हो चुकी थी कि हुकूमत सऊदिया ने हज़रत को रिहा कर दिया है और हज़रत फ़लाँ वक्त पर मुम्बई पहुँच रहे हैं इसलिए अवाम में से भी कसीर तअदाद में लोग पहुँच गये थे।

हज़रत जब मुम्बई पहुँचे तो उनका एक शान्दार इस्तिक्बाल किया गया। मेरे लिए यह बाइस फ़ख़ है कि हज़रत मेरे ग़रीब खाना पर तशरीफ़ लाये। हज़रत बहुत थके हुये थे और सऊदी गवर्नमेन्ट ने हज़रत के हाथों में हथकड़ी भी डाल दी थी। इसलिए उन को आराम की सख़्त ज़रूरत थी। हज़रत से मुलाकात के लिए सब से पहले हज़रत मौलाना सय्यद हामिद अशरफ़ साहिब किब्ला अलैहिर्रहमा वरिज़वान और हज़रत मौलाना जहीरुद्दीन ख़ाँ ख़तीब व इमाम इस्माईल हबीब मस्जिद फ़ुलों का हार लेकर तशरीफ़ लाये मगर चूंकि हज़रत आराम फ़रमा रहे थे इसलिए उन के आराम में ख़ालल अन्दाजी मुनासिब न समझी गई। मैंने उन हज़रात से कहा कि हज़रत को बेदार न किया जाये। इसलिए यह हज़रात हार मेरे हवाले कर के

वापस हुये।

मुम्बई 13/सितम्बर 1986 ई/1407 हिजरी को इब्राहीम रहमतुल्लाहि रोड मुम्बई 3 पर मीनारा मस्जिद के पास रजा एकेडमी के जेरे एहतिमाम एक एहतिजाजी जलसा मुन्अकिद किया गया बल्कि यूँ कह लिये कि एक जशन का इन्अकाद हुआ जो हज़रत की रिहाई की खुशी में मुन्अकिद हुआ। जिस में मुहदिदसे कबीर हज़रत अल्लामा जियाउलमुस्तफा साहिब किब्ला मुदजुल्लाहुलआली और खतीबुलहिन्द, हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह खॉं आजमी और दीगर उलमा-ए-किराम शरीक थे। हज़रत ने इस जलसे में खुसूसी खिताब फरमाया। जब हज़रत ने खिताब शुरू किया तो मजमा में बिल्कुल सुकूत तारी था।

हज़रत ने अपने इस खिताब में अपनी गिरफ्तारी की रुदाद बयान फरमाई थी और अपना एक शैर भी पढ़ा था।

अर्ज़ तय्या है किस कदर दिल रुबा

मुझ से पहले मेरा दिल हाज़िर हुआ

नोट : हज़रत के इस खिताब को किताबचे की शकल में रजा एकेडमी मुम्बई ने शाई किया था, जेरे नज़र किताब में शामिल इशाअत है। (रजवी गुफिरा लहु)

इल्मी मकाम और मर्तबा

अल्लामा अब्दुलमुबीन नोअमानी अलमजमुलइस्लामी मुबारकपुर आजम गढ़

ताजुशरीआ बदरुत्तरीका, हज़रत अल्लामा मुफ्ती अख़रत रजा खॉं अज़हरी कादरी, बरेलवी दामत बरकातुहुमुल आलिया जानिशीन-ए-हुज़ूर मुफ्ती आजम हिन्द व सद्द मर्कज़ी दारुलइफ़ता बरेली शरीफ़ की जात गिरामी मोहताजे तआरुफ़ नहीं, आप आला हज़रत अहले सुन्नत अलैहिर्हमा के परपोते, हज़रत अल्लामा इब्राहीम रजा खॉं इब्ने हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रजा खॉं के साहिबज़ादे हैं इल्म व फ़ज़ल में अपने जदे अम्जद और सरकार आला हज़रत के जानशीन हैं साथ ही हुज़ूर मुफ्ती-ए-आजम हिन्द अलैहिर्हमा वरिज़वान के काइम मकाम हैं।

इस्तिहज़ारे इल्मी और तफ़क्कुह:

आप की जात पूरी जमाअत अहले सुन्नत के लिए मरजअ की हैसियत रखती है तफ़क्कुह फ़िददीन में जो वरासत आप को हासिल है यकता-ए-ज़माना है फ़िक्ही जुजियात नोक ज़बान पर रहते हैं। एक बार जब कि आप जमशेदपुर में तशरीफ़ ले गये थे, जनाब अलीमुद्दीन साहिब आसवी के मकान पर रौनक अफ़रोज़ थे कि एक इस्तिफ़ता आया, आप ने फौरन इस का जवाब अरकाम फरमाया और मुतअदिद फ़िक्ही एबारात से भी मुजय्यन फरमाया, और दस्तख़त कर के हवाले कर दिया जब कि कोई किताब सामने न थी।

एक अजीम खिदमत : अहमद शाह अब्दाली

अपने औकात के तहफफुज़ पर हद दर्जा एहतिमाम फरमाते हैं ग़ैर ज़रूरी बातों से परहेज़ और मुतालअ कुतुब, समाअत कुतुब और दर्स हदीस व फिक्ह नीज़ फ़तावा नवैसी आप का महबूब मशगला है। साथ ही तस्नीफ़ व तालीफ़ में भी अच्छा खासा वक्त सिर्फ़ फरमाते हैं हत्ता कि सफ़र में भी तस्नीफ़ व तर्जुमा का काम जारी रखते हैं सफ़र में विलउमुम वक्त कम मिलता है मिलने जुलने वालों की भीड़ से बच निकलना आसान काम नहीं, लेकिन हज़रत अज़हरी साहब क़िल्वा अक़ीदत मन्दी की भीड़ से भी निकल कर इल्मी मशागील अपनाते हैं चन्द साल पेशतर की बात है उर्स सदरुशरीआ अलैहिर्रहमा में आप घोसी तशरीफ़ लाये हुये थे और कादरी मन्ज़िल में कियाम किया था। मैं मिलने के लिए गया तो देखा कि कुछ इमला करा रहे हैं मसरूफ़ियत देख कर वापस आ गया बाद में मालूम हुआ कि हज़रत अलमोअतकदुलमुन्तकिद मुसन्नफ़ा अल्लामा फ़ज़ले रसूल बदायूनी अलैहिर्रहमा का तर्जुमा कर रहे थे। मैं ने हज़रत पर इल्मी मशगले में ख़लल डालना पसन्द न किया जब कि ऐसे मौक़े पर अकसर लोग अक़ीदत मन्दी का सुबूत देते हुये दूर से सलाम और दस्त बूसी व कदम बुरसी में लग कर अपने मखदुमों को इल्मी खिदमत से दूर कर देने में अपनी सआदत और अक्लमन्दी तसब्बुर करते हैं। अलहम्दु लिल्लाह अलमोअतकदुलमुन्तकद का यह तर्जुमा मुकम्मल हुआ और छप भी गया। यह हज़रत क़िल्वा

की एक बड़ी इल्मी व दीनी खिदमत है क्योंकि यह वह किताब है जिस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कुदिदसा सिरुहु ने हाशिया तहरीर फरमाया है जिस का तारीखी नाम है अलमुस्तनदुलमोअतकद बिना नुजातुलअबद 1320 हिजरी यह किताब अकाइद व कलाम के अहम मुवाहिस पर मुश्तमिल है। इस पर आला हज़रत कुददुस सिरुहु के हवाशी ने गोया सोने पर सुहागा का काम किया। बाज़ अदक और अहम एबारतों की तशरीह के साथ आला हज़रत ने कुछ जदीद फिरकों का भी रद तहरीर कर दिया है। जो हज़रत मौलाना फ़ज़ले रसूल उरमानी बदायूनी अलैहिर्रहमा के वक्त में न थे या उन के हुक्म का सिर्फ़ आगाज़ हुआ था। इसलिए ज़रूरत थी कि इस किताब को आम किया जाता और उर्दूदाँ तबक़े को भी इस से इस्तिफ़ादे का मौक़ा मिलता मज़ीद बरऔ यह किताब चूंकि बाज़ मदारिस अहले सुन्नत के निसाब तालीम में भी शामिल है तो इस से दर्स व तदरीस में आसानी भी पैदा करना मकसद था। जिस के पेशे नज़र मौलाना मुपती शोऐब रज़ा साहब की फ़रमाइश पर हज़रत ताजुशरीआ अज़हरी साहब क़िल्वा ने उसके तर्जुमे का आगाज़ कर दिया और सिर्फ़ आगाज़ नहीं तमाम मसरूफ़ियात के साथ छः माह की कलील मुददत में उसका तर्जमा मुकम्मल कर दिया बाज़ किताबों का तर्जमा आसान होता है। उसे हर अरबी दाँ बा आसानी कर भी सकता है, लेकिन बाज़ किताबें ऐसी फ़न्नी और मुश्किल होती हैं जिनका तर्जमा सब के

बस की बात नहीं होती। अलमोअतकदुलमुन्तकद भी कुछ ऐसी ही किताब है जिस के तर्जुमे का काम खासा मुश्किल था लेकिन हुजूर अजहरी मियाँ ने कलील वक़्त में बा आसानी एक उमदा तर्जुमा कर के उम्मत खुसूसन अहले इल्म पर एहसान फरमाया। यह किताब दो साल कब्ल छुप कर मन्ज़र-ए-आम पर भी आचुकी है। फरमाया तर्जुमा किन हालात में हुआ और कैसे हुआ इस की कुछ तफसील किताब के मुकदमा निगार मुपती काजी शहीद आलम साहिब किल्ला उस्ताज़ जामिआ नुरिया रज़विया बरेली शरीफ की ज़बान मुलाहिज़ा करें।

चुंकि हज़रत को इन्मीनान व सुकून से बरेली की सर ज़मीन पर रहने का मौका बहुत कम ही मयस्सर आता है लिहाज़ा जब तब्लीग व इरशाद के दोरे श्रीलंका खाना हुये तो हुसने इत्तिफाक कि हज़रत मौलाना शोएब रज़ा साहिब और ताजुशरीआ के खल्फ़ुरशीद हज़रत मौलाना मुहम्मद अस्जद रज़ा साहिब हमारा सफर हुये किताब अलमोअतकदुल मुन्तकिद साथ रख ली गई। बिल आखिर 27/जमादिलआखिर 1424 हिजरी मुताबिक 123 आगस्त 2003 बरोज हफ़ता बाद नमाज़े मरिब अलहाज़ अब्दुस्सत्तार रज़वी कोलमबो श्रीलंका के मकान पर इस अज़ीम काम का आगाज़ किया गया।

जिस तरह यह किताब अपने मौजू में मुन्फरिद व तालासानी है इसी तरह तर्जुमा का अन्दाज़ भी आम तराज़िम से बिल्कुल मुख्तलिफ और मुन्फरिद है एक तो हज़रत की

निगाह कमज़ोर, दूसरी बात यह है कि किताब का ख़ात निहायत बारीक हज़रत के लिए एबारत देख कर तर्जुमा करना मुश्किल अम्र था, मौलाना शोएब रज़ा साहिब एबारत पढ़ते जाते और ताजुशरीआ फिलबदिया तर्जुमा बोलते जाते और खुद मौलाना शोएब साहिब सफ़हा किरतास पर तहरीर करते जाते। जहाँ जब मौका मयस्सर होता तर्जुमा का अमल जारी व सारी रहता, इत्ता कि ट्रेन और पलीन पर भी यह मुबारक काम न रुका, इस तरह इस तर्जुमे का बाज़ हिस्सा श्रीलंका में लिखा गया और बाज़ हिस्सा मिलावी में और बाज़ हिस्सा ट्रेन व पलीन पर और कुछ हिस्सा बरेली शरीफ में कियाम के दौरान लिखा गया।

(मुकदमा अलमोअतकदुलमुन्तकिद मुतर्जिम स.9-10 अलमतवुआ अलमजमा अरज़वी बरेली)

जिम्नन यह भी अर्ज़ करता चलूँकि अलमोअतकदुल मुन्तकद का अरबी ऐडीशन निहायत उमदा नई कमपोज़िंग के साथ रज़ा एकेडमी मुम्बई से शाइ हो चुका है उसके बाद उसका दूसरा ऐडीशन हुदूसुलफतन व झाद ऐयानुस्सुनन (अरबी) अज़ अल्लामा मुहम्मद अहमद रज़वी सुदरुल मुदरिस्सीन अलजामिआतुलअशरफिया मुबारक पुर के इज़ाफे के साथ अलमजउलइस्लामी मुबारकपुर से भीशाइ हो गया है। किताब के कुल सफ़हात 270 हैं और हुदूसलफतन के 1193 ऐलावा फहारिस, साइज 26×20=8 मुताबिक बहारे शरीअत कदीम, हुसूसुफितन का तर्जुमा भी शाइ हो गया है। मतर्जिम हैं मौलाना अब्दुलगफ़ार आजमी मिस्वाही और

तर्जमे का नाम फितनों का जहूर और अहले हक का जिहाद, हुदूसुलफितन के तर्जमे का भी प्रोग्राम था कि उस दौरान यह खाबर फरहत असर मूसिल हुई कि हुजूर ताजुशरीआ दामत बरकातुहुमल कुदसिया इस को उर्दू में मुन्तकिल फरमारहे हैं। फिर जल्दी ही वह तर्जमा शाइअ हो कर मनज़र आम पर भी आ गया जो इस वक्त नज़र नवाज़ है। तर्जमा किया है गोया मुस्तकिल तस्नीफ है, कि पढ़ने वाले को शुबह ही नहीं होता कि यह किस किताब का तर्जमा है और यह तर्जमे की बहुत बड़ी खुबी है जो आम मुतर्जिम को हासिल नहीं होती। शुरु किताब में फाजिल गिरामी मौलाना काजी शहीद आलम रज़वी के कलम से 19 सफ़हात का मुकदमा है जो अर्ज़ अहवाल के साथ मुसन्निफ मुहश्शी और मतुर्जिम के हालात पर मुश्तमिल और बड़ा मालूमात अफ़ज़ा है, गिरया मुकदमा न होता तो बाक़ै एक बड़ी कमी महसूस की जाती, मुकदमा के साथ पूरी किताब 351 सफ़हात पर ख़ात्म होती है। मतन के साथ आला हज़रत कुददुस सिरुहु के हवाशी का तर्जमा भी बशकल हाशिया है।

तब्लीगी और तदरीसी मशगला:

हज़रत ताजुशरीआ दामत बरकातुहुम ने शुरु दौर में तदरीस का मशगला इख़्तियार किया जो हुजूर मुपती आजम कुददुस सिरुहु के आखिरी दौर तक चलता रहा फिर जब सरकार मुपती-ए-आज़म विसाल से कब्ल साहिब फराश रहने लगे और इस्तिगराकी कैफ़ियत तारी हो गई तो

आप के तब्लीगी दौरों का सिलसिला बन्द हो गया। उस के बाद ही से ख़लके खुदा का हुजूम हज़रत ताजुशरीआ की तरफ़ मुतवज्जोह हुआ तो आप को तदरीसी ख़िदमात छोड़ कर तब्लीगी दौरों में वक्त देना पड़ा जो आप की मजबूरी थी, क्योंकि मुल्क व बैरुने ममालिक ऐशाक मुपती-ए-आज़म और वाबस्तगान सिलसिला कादरिया बरकातिया रज़विया की प्यास बुझाना उनकी रुहानी तरतीब का फरीज़ा अन्जाम देना भी ज़रूरी था। इसलिए हज़रत ताजुशरीआ की हयात का ज़्यादा वक्त तो तब्लीगी दौरों ही की नज़र हो कर रह गया जिस की वजह से हज़रत तस्नीफ़ व तालीफ़ और फतवा नवैसी का ज़्यादा अन्जाम न दे सके फिर भी इतनी मसरुफियात के साथ जब आप की तसानीफ़ व तराजिम की फिहरिस्त पर नज़र डाली जाती है तो हैरत होती है कि तकरीबन बीस किताबें आप की नोक क़لم से निबल कर मन्ज़र-ए-आम पर आ चुकी हैं सिर्फ़ फतावे का काम बाकी वह भी तकरीबन पाँच ज़िलदों पर मुश्तमिल है और हुनूज़ इस का सिलसिला जारी है, काश बाज़ अहले अक़ीदत गैर ज़रूरी हुसूल के लिए हज़रत को यहाँ वहाँ न ले जाते और इल्मी कामों के लिए फ़ुर्सत बहम पहुँचाते बल्कि इन अहम कामों में हज़रत की मदद करते तो तस्नीफ़ व तालीफ़ और फतावे का काम आगे पढ़ता, लेकिन आदमी गर्ज का बन्दा होता है अपना मक़सद हासिल हो बाकी किसी कीमती शख़्शियत के ज़र्ज़ औकात जाइअ हो जाये उसे उस की फ़िक्र नहीं होती, मैं इस सिलसिले में ग़लू अक़ीदत के

शिकार अहबाब से गुजारिश करूँगा कि इल्मी और दीनी जरूरियात को अपनी जाती गर्ज और ख्वाहिश पर तरजीह दी और हुजूर ताजुशरीआ के नुकसानात को मजीद जाइ होने से बचायें, मेरा यह मकसद हर गिज़ नहीं कि हज़रत जहाँ भी जाते हैं कोई फायदा नहीं होता लेकिन अलअहम फलअहम के फारमुले पर अमल करना ही दानिशमन्दी है जहाँ तक दुआओं का तअल्लुक है घर पर जा कर ही दुआ करना तो ज़रूरी नहीं, हज़रत जहाँ से भी दुआ करेंगे अल्लाह कबूल करेगा और आप का मकसद हासिल हो जायेगा।

वक्त के बहुत से उलझे हुये मसाइल हैं जिन पर लिखना है बहुत से अहम मौजूआत हैं जिन पर तस्नीफात की जरूरत है, अगर हज़रत ने अब से उन पर तवज्जोह दी और कौम ने भी फुरसत दी तो इन्शाअल्लाह फैज़ान आला हज़रत व मुफती आजम के ऐसे दरिया बहेंगे कि लोग देखते रहेंगे। यह हकीकत है कि जो जाता है अपनी जगह खाली छोड़ जाता है और अपने उरूम फुनून की बसात लपेट कर चला जाता है, हमारी गिनती शख्सियतें हम से रुखसत हो गयीं लेकिन उन के शायान शान हमारे पास इल्मी आसार मौजूद नहीं जिन से हम उनका वाकई तआरुफ करा सकें, हुजूर ताजुशरीआ इस वक्त जमाअत अहले सुन्नत के वह कीमती सरमाया हैं जिन की मिसाल ढूँढ़ने से मिलना मुश्किल है। जो मरजईयत व मरकजियत आप को हासिल है वह किसी दूसरे को हर गिज़ नहीं। पीरों में आप इस

वक्त सब से बड़े पीर हैं, मुफितयों के भी इमाम नीज़ काजीयुलकुज़्जात और उलमा-ए-किराम के विला शुबह मलजा व मावा हैं फिक्ह में आप का मकाम बुलन्द तो आप के फतावा से जाहिर है और हदीस दानी में कमाल व देखना हो तो आप की तअलीकात बुखारी को मुलाहिजा किया जाये, जो इवाशी इमाम अहमद रज़ा के साथ मज्लिस बरकात जामिआ अशरफिया मुबारकपुर से शाइअ हो चुकी हैं।

और फ़न्ने तफसीर में आप को जो दर्क हासिल है उसके लिए दिफाअ कन्जुलईमान, नामी किताब मुंह बोलती तस्वीर की हैसियत रखती है यह किताब मुतवस्सित साइज के 119 सफ़हात पर मुशतमिल है लेकिन अफसोस कि उसकी किताबत व इशाअत की जिम्मेदारी गैर आलिमों और गैर अरबी दाँ के हाथ पड़ने के सबब निहायत वे वकअत अन्दाज़ से शाइअ हुई है जगह जगह से असल एबारात को जो कुतुब तफासीर से अखज़ की गई थीं। हज़फ कर दिया गया है और मजीद मजामीन जो हज़रत ने उसके बाद अखलाक कास्मी दैववन्दी के रद में लिखे थे वह भी शामिल न किए गये। दूसरे हिस्से के नाम पर उसे टाल दिया गया, मेरी हज़रत किबला की खिदमत बाबरकत में इस्तिफादा करने वाले अहले इल्म हज़रात से गुजारिश है कि दोनों हिस्सों को अज़ सरेनू एडट कर के असल अरबी एबारात के साथ और हवालों की मुकम्मल तखरीज के बाद जिल्द मन्ज़र आम पर लायें वरना कहीं मुसव्वदे के गायब होने का शिकवा करना पड़ा।

मेरी शहजादा हुजूर ताजुशरीआ मौलाना अस्जद रज़ा साहब से और हज़रत के गिर्द इल्मी मशग़लियात से वाबस्ता हज़रात से गुजारिश है कि कन्जुलईमान और

तफसीरी मवाद से मुतअल्लिक हजरत की तहरीरों यकजा और मुरत्तब करे हजरत को सुनाये और बाकाइदा अन्दाज में उन्हें मन्ज़रे आम पर लाये इसी तरह हजरत के लिखे हुये फतावा यकजा किए जाये उन्हें मुरत्तब कर के हजरत को दोबारा सुनाया जाये फिर उन्हें मन्ज़रे आम पर लाया जाये चुकि यह तमाम अन्जाम देना बहुत जरूरी है।

हजरत ताजुशरीआ के इल्मी मकाम व मरतबे को उजागर करने के लिए जरूरी है कि हजरत के आसार-ए-इल्मिया को महफुज किया जाये और उन्हें ढंग से शाइअ किया जाये बिलखुसूस हजरत की अरबी तसानीफ मसलन अलहक्कुलमुबीन और मिरातुन्नज्दिया वगैराहा को आलम अरब में फैलाया जाये ताकि आला हजरत कुददुस सिरूह के तअल्लुक से जो गलत फहमियाँ फैलाई जा चुकी हैं उन का ज्यादा से ज्यादा तदारुक किया जाये बल्कि मेरी एक राय यह भी है कि मसलके अहले सुन्नत व जमाअत यानी मसलके आला हजरत जो तर्जुमान हैं और बरेली के तअल्लुक से जो गलत प्रोपगन्डे आलमी पैमाने पर हो रहे हैं इस सब का यकजा जवाब हजरत के इरशादात पर मन्वी उर्दू अंग्रेजी और अरबी में शाइ किया जाये खानवादा के बाहर के अफराद जो जवाबात दे रहे हैं उस के मुकाबिले में हजरत ताजुशरीआ की तहरीरें ज्यादा मुवस्सिर साबित होंगी और मुखालफीन का झूट अच्छी तरह तशत अज बाम होगा।

तर्जमा निगारी का जाइज़ा

मौलाना नफीस अहमद रजवी, उस्ताज़ जामिआ अशरफिया, मुबारकपुर, आजम गढ़

खानवादा-ए-रजविया मरकजे अहले सुन्नत बरेली शरीफ के चशम व चिराग ताजुशरीआ हजरत अल्लामा मुपती, मुहम्मद अखतर रज़ा ख़ाँ अज़हरी मदज़ुल्लाहुलआज़ी की ज़ात उलमा-ए-किराम और मशाइख़ तरीकत के दरमियान ऐसे ही मुम्ताज़ और नुमाया है जैसे चौदहवी का चान्द सितारों की अन्जुमन में मुमताज़ और नुमाया होता है। अल्लाह तआला ने आप को हुस्ने जाहिर और जमाल बातिन दोनों दौलतों से नवाज़ा है। आप इल्मे शरीअत व तरीकत के जामेअ और मजमअ बहरैन हैं, इस पर मुस्तज़ादिया है कि अल्लाह तआला ने आप की मोहब्बत व अकीदत अपने बन्दों के दिलों में इस तरह डाल दी है कि आप जहाँ भी तशरीफ़ ले जाते हैं अ़वाम व ख़्वास सभी आप की ज़ियारत के मुश्ताक़ और आप से मुसाफ़ा और दस्त बोसी के लिए बेताब नज़र आते हैं। मजलिस उलमा-ए-में आप तशरीफ़ रखते हैं तो बिला इख़िलाफ़ आप ही "मीरे मजलिस" होत हैं। आप जहाँ कदीम उलूम व फ़ून से आरास्ता हैं वही जदीद अरबी और अंग्रेज़ी ज़बान व अबद पर ऐसी कामिल दस्तर्स रखते हैं कि बिला तकल्लुफ़ दोनों ज़बानों में अहले ज़बान की तरह लिखते और बोलते हैं।

आप मुफ़स्सिरे आजम अल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ाँ बरेली के फ़रज़न्दे अरज़मन्द, हुज़्जतुल इस्लाम अल्लामा

मुहम्मद हामिद रज़ा अलैहिर्रहमा के पोत, मुफ्ती आजम हिन्द अल्लामा मुहम्मद मुस्तफा रज़ा नूरी, बरेलवी के नवासे और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा वरिज़वान के इल्मी वारिस और जानशीन हैं।

इंसान समाज में तीन तरह के अफ़राद पाये जाते हैं 1. एक तो वह जो अपने अन्दरूनी खुबियाँ और कमालात रखते हैं और अपनी शख़्सी और ज़ाती खुबियों की बुनियाद पर अपनी शौहरत व मकबूलियत की फलक बोस एमारत काइम करते हैं और अवाग व ख़्वास सब के दिलों में महबूबियत का मक़ाम बनाते हैं 2. दूसरे लोग जो सिर्फ़ अपने आवा व अजदाद की मकबूलियत के बल बोते पर अपनी शौहरत व मकबूलियत का सिक्का जमाने की कोशिश करते हैं, जब कि खुद उन की ज़ात इल्मी व रुहानी कमालात से आरी होती है। 3. तीसरे वह अफ़राद जो ज़ाती और इज़ाफ़ी दोनों खुबियों के मालिक होते हैं कि एक तरफ़ जहाँ खुद उनकी शख़्सियत इल्म व फज़ल से आरास्ता होती है वहीं दूसरी जानिब उनके आवा व अजदाद की शौहरत व मकबूलियत भी उनकी पुष्ट पना ही करती है। मेरे ममदूह मौसूफ़ हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहुलआली की शख़्सियत आख़री किस्म से तअल्लुक रखती है, जहाँ आप के रौशन ख़ान्दानी पसे मन्ज़र ने आप को बाम उरुज तक पहुँचाया है वही इस से कहीं ज़्यादा आप के इल्मी व रुहानी कमालात और दीनी व इल्मी ख़िदमात ने आप की शख़्सियत को रौशन और तांबनाक बनाया है।

तर्जुमा के मैदान में :

तर्जुमा निगारी के मैदान में भी हज़रत ताजुशरीआ की गिराँ कद्र ख़िदमत हैं। दर हकीकत तर्जुमा निगारी एक फ़न है, एक आर्ट है। उसको एक आम और आसान काम समझ लेना अक्ल मन्दी नहीं। महज़ दो ज़बानें जानता तर्जुमा निगारी के लिए काफी नहीं, हमारे मुलक में तक़रीबन हर पढ़ा लिखा शख़्स कम से कम दो तीन ज़बानें जानता है। लेकिन उन में से हर शख़्स एक ज़बान की तहरीर को दूसरी ज़बान में मुन्तक़िल करने की सलाहियत नहीं रखता। तर्जुमा निगारी एक फ़न है और कोई भी फ़न बा आसानी नहीं आता, उसके लिए मशक और रियाज़त की ज़रूरत होती है।

तर्जुमा का मतलब किसी भी ज़बान के मज़मून को इस अन्दाज़ से दूसरी ज़बान में मुन्तक़िल करना कि कारी को यह एहसान तक न हो कि एबारत बे तरतीब है। या एबारत में पैवन्द कारी की गई है। कमा हक्काहु तर्जुमा करना बहुत मुश्किल काम है। यह नगीना जड़ ने का फ़न है। तर्जुमा में एक ज़बान के मुआनी और मतालिब को दूसरी ज़बान में इस तरह मुन्तक़िल किया जाता है कि असल एबारत की खोबी और मतलब जू का तू बाकी रहे। दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कह लीजिए कि तर्जुमा महज़ एक बे रूह निकाली का नाम नहीं है बल्कि इस में असल का पूरा ख़्याल और मफ़हूम। उसी लोच और नरमी या उसी दुरिश्ती

और सख्ती, इसी जाजबियत और दिल कशी या उसी बे कैफी और बे रंगी के साथ, उसी एहतियात के साथ आये और ज़बान व बयान का भी वैसा ही मीआर हो।

सही मअनों में और कमा इक्कोहु तर्जमा निगारी के लिए कम अज कम तीन शर्तें हैं जो दर्ज जैल हैं।

(1) जिस ज़बान से तर्जमा किया जा रहा है उस ज़बान की लोगत से, इस्तिलाहात और मुहारों से, किसी कद अदबियात से और थोड़ी बहुत तारीख से वाक्फियत और निखरा हुआ जौक जरूरी है। यह जरूरी नहीं कि जिस ज़बान की तस्नीफ का तर्जमा करना है इस ज़बान पर भी तर्जमा करने वाले को माहिराना उबूर हासिल हो। या वह असल एबारत या असल तस्नीफ वाली ज़बान में खुद भी उसी तरह बे तकल्लुफ और बे तकान लिख सकता या बोल सकता हो, बल्कि इस ज़बान का सिर्फ किताबी इल्म काफी है। असल एबारत या असल तस्नीफ की ज़बान का इल्म सिर्फ किताबी नहीं बल्कि इस से कुछ ज्यादा हो तो और अच्छा है। जितना ज्यादा हुआ इतना ही अच्छा है। और अगर किताबी इल्म भी न हो तो ज़बान की वारिकियों और असल कलम कार के खियाल की निज़ाकतें हाथ से निकल जायेंगी, असल एबारत की नौक पलक पर तर्जमा करने वाले का ध्यान नहीं जायेगा।

(2) दूसरी शर्त यह है कि जिस ज़बान में तर्जमा करना है उस पर माहिराना उबूर हासिल हो, असल तस्नीफ ज़बान से कहीं ज्यादा कुदरत इस ज़बान में होनी चाहिए

जिस में तर्जमा करना मकसूद है। यहाँ तक कि उस ज़बान में खुद लिख लेने की अच्छी खासी मशक और उस ज़बान का पहलू दार इल्म होना चाहिए। पहलूदार इल्म से मुराद यह है कि उसके माखज़ का, जहाँ जहाँ से वह सैराब हुई है उन सर चशमों का, उस के नशीब व फ़राज़ का इल्म हो, अल्फ़ाज़ कहाँ से आये, किस तरह आये, उन के लगदी मअना किया था, इस्तिलाही मअना किया हो गये और उन के हकीकी मअना किया थे, मजाज़ी मअना किया हो गये और किया हो सकते हैं। उनके रोज़ मरी और मुहाविरे क्यों कर बने उन में मुख्तलिफ औकात में किया तब्दिलियाँ हुयें। एक लफ़ज़ अपने दामन में कितने मुआनी रखता है और एक माददा से कौन कौन से अल्फ़ाज़ किस किस तरह बन सकते हैं ?

(3) तीसरी शर्त यह है कि जिस एबारत या तस्नीफ का तर्जमा करना मकसूद है उस के मौजू और फन्न से मुनासिब हद तक वाक्फियत हो क्योंकि मौजू और फन्न के बदलने से बसा औकात बहुत से अल्फ़ाज़ के मअना बदल जाते हैं कभी ऐसा होती है कि एक ही लफ़ज़ या एक ही तरकीब के अदब में कुछ और मअना होते हैं नहवों में कुछ और होते हैं और सर्फ में कुछ और और मन्तिक में कुछ और मअना हो जाते हैं। मसलन लफ़ज़ कलिमा को ले लिजीए लोगत में बात, खुत्वा और कसीदा के मअना में आता है। नहवों सर्फ में उसका मतलब होता है वह लफ़ज़ जो मअना मुफ़रिद रखता हो, और अहले मन्तिक की इस्तिलाह में

कलिमा का वही मअना है जो नहवियों के नजदीक "फेअल" का है। अब अगर तर्जमा करने वाले को यह मालूम नहीं कि इस लफ्ज का किस फन में किया मअना और वह लोगत की मदद से तर्जमा कर देगा तो कभी ऐसा भी हो सकता है कि एबारत का सारा मफहूम गारत हो जाये और तर्जमा, तर्जमा के बजाये "रजम" (एबारत) की संगसारी और कत्ल व खून का बाइस हो जाये।

मौजूअ और फन की वाकफियत से मुयाद सिर्फ यही नहीं है कि अगर एबारत इल्म मुआशियात की है तो मुआशियात की चन्द इस्तिलाहें जान ली जायें, या अगर अदबी मौजूअ है तो पहले से थोड़ी बहुत अदबी सोझ पैदा की जाये, बल्कि असल मौजूअ से वाकफियत के मअा कुछ और भी हैं। उस के यह भी मअना हैं कि अगर किसी साहिब तर्ज अदीब या मखासूस रुजहान और खास जहनियत के मुसन्निफ की तस्नीफ का तर्जमा करना हो तो इस अदीब या मुसन्निफ के तर्ज फिक्र से रुजहान खास जहनियत से आगाही हो। जरूरी नहीं कि पहले से इस की तमाम तसानीफ का मुताला हो बल्कि यह काफी है कि उस की सवानेह उमरी या जिन्दगी के खास हालात और उस के तर्ज बयान के मुतअल्लिक दूसरों की रायें मालूम कर ली जाये। यह भी न हो सके तो कम अज कम शर्त यह है कि जिस तस्नीफ का तर्जमा करना है उसे खूब गौर से एक बार अव्वल ताखिर पढ लिया जाये और अगर ज़ेरे तर्जमा तस्नीफ पर दूसरों की रायें, तबसरे या तन्कीदें या

तआरुफ मिल सकें तो उन पर एक नजर डाल ली जाये, उस के बाद तर्जमा का काम शुरू किया जाये। यह अच्छी तर्जमा निगारी के लिए जरूरी और बुनियादी बातें हैं। मुतर्जम तर्जमा निगारी के दौरान उनका जिस हद तक लिहाज करेगा और खुद उसकी जात उन औसाफ व शराइत पर जिस हद तक पूरी उतरेगी। उस का तर्जमा इतनी उमदा शानदार और असल एबारत या तस्नीफ के मफहूम को अदा करने वाला होगा।

अब उसकी रौशनी में जब हम ताजुशरीआ मह जुल्लाहुआली की शख्सियत को देखते हैं तो न सिर्फ जरूरी हद तक उन औसाफ व शराइत का जामे पाते हैं। बल्कि दोनों ज़बानों में ज़बर दस्त महारत और कमाल का हमिल पाते हैं। उर्दू तो उन की मादरी ज़बान ही है और अरबी या अंग्रेज़ी में वह अहले ज़बान जैसी महारत रखते हैं। इन दोनों ज़बानों में वह बिला झिझक और बरजस्ता लिखने और बोलने की सलाहियत रखते हैं। इसलिए तर्जमा निगारी के बाब में आप के नोक कमल से कई अहम और शानदार कालम आलमे वजूद में आये हैं।

जब हम इस हैसियत से आप की खिदमात का जाइज़ा लेते हैं तो दर्ज जैल कारनामे हमारे सामने आते हैं और कलब व निगाह के लिए सामान तस्कीन फराहम करते हैं।

1. तर्जमा : "अलमोअतकदुलमुत्तकद" वलमुस्तनदुलमोअतमद" (अरबी से उर्दू)

2. तर्जमा : अज्जुलालुल अन्का मिन बहरे सबकतुलइतका (अरबी से उर्दू)

3. तर्जमा : "फिक्ह शम्सराह विअन्नलकुतूब बेदारिमहबूब येअताअल्लाह" (उर्दू से अरबी)

4. तर्जमा : "अतायलकदीर फी हुक्मिअतसदीर" (उर्दू से अरबी)

5. तर्जमा : "अहलाकुलवहाविईन" (उर्दू से अरबी)

6. "तयस्सुलमाऊन" (उर्दू से अरबी)

7. "अलहादिलयाफ फी अहकामिलजुआफ"

8. "शमुतुइस्लाम अलउसूलुरुसूल किराम" (उर्दू से अरबी)

इन में से जो किताबें हमें दस्तियाब हो सकीं उनका तआरुफ पेश खिदमत है:

1. "अलमोअतकदुलमुत्तकद" वलमुस्तनदुलमोअतमद" (बिना नुजातुलअबद)

"अलमोअतकदुलमुत्तकद" अरबी जबान में खातिमुलमुहविककीन

अल्लामा फजले रसूल कादरी, बदायूँ अलैहिर्रहमा वरिजवान

(1289 हिजरी) की अरबी जबान में गिराँ कदर और

अजीमुश्शान तस्नीफ है। यह किताब अकाइद व कलाम के

मौजूअ पर बे नजीर और यगाना है। इस किताब में एक

मुकदमा, चार अबवाब और एक खातमा है। मुकदमा में हुक्म

की तीनों किस्म, अक्ली, मादी और शरई को बयान करने के

बाद हुक्मे अक्ली की अकसाम वगैरा को भी बयान किया

गया है। जब कि बाब अब्वल इलाहियात, बाब दोम अकाइद

नबुव्वत, बाब सोम मसाइल समइया और बाब चहारुम

मसाइल इमामत कुबरा के बयान में है। और खातमा किताब

में ईमान व कुफ्र और बिदअत व बिदअती से मुतअल्लिक

कुछ अहकाम की तफसील है।

किताब की अहमियत व इफादियत के पेशे नजर

हजरत मौलाना काज़ी अब्दुलवहीद फिरदौसी, अजीम आबादी

ने उसको छपवाने का इरादा फरमाया और मुम्बई का छपा

हुआ एक नुस्खा उन्हें दस्तयाब हुआ तो उन्होंने ने आला

हजरत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा

वरिजवान (1921 ई 1340 हिजरी) की बारगाह में तस्हीह के लिए

भेजा। तस्ही के दौरान आला हजरत अलैहिर्रहमा वरिजवान

ने महसूस किया कि उस पर जा बजा हवाशी और

तअलीकात की ज़रूरत है, कसरत मसरूफियात की वजह से

आप ने उस पर बहुत ज्यादा तफसीली हवाशी के बजाये

जगह-जगह मुखासर और जामेअ तअलीकात रकम फरमाये

और फिर बाज़ अहम मकामात पर अल्लामा शाह वसी

अहमद मुहदिदस सूरती अलैहिर्रहमा की गुज़ारिश पर

तफसीली हवाशी भी लिखे। और उनका नाम "वलमुस्तन

दुलमोअतमद बिना नुजातुलअबद" रखा जिस से "1320

हिजरी के आदाद निकलते हैं। इमाम अहमद रज़ा कुददुस

सिरुहु ने इतनी इजलत और सुरअत से यह तअलीकात

लिखें कि खुद फरमाते हैं : अन्नत्तबअ जार, वलकलम सार,

व फुरसती मादूमा, व अशगाली मालूमा (यानी उधर तबाअत

का काम जारी है और (उधर) मेरा कलम रबौ है। फुरसत

मादूम है और (मेरी) मसरूफियात (सब को मालूम है) मगर

उसके बावजूद यह तालीकात किताब की एक जामेअ, गिराँ

कदर और शान्दार शरह इब्न गयेँ, और उस में उस दौर के

बहुत से गुमराह और बददीन गिरोह हों का वाजेह हुक्म

और जामेअ बयान भी आ गया। अलहम्दुलिल्लाह। यह

किताब मअ शरह जामिआ अशरफिया, मुबारकमुर की सर

बराही में तन्जीमुलमदारिस अहले सुन्नत के लिए तशकील होने वाले जदीद निसाब तालीम में शामिल की जा चुकी है और उसके दर्स का सिलसिला भी जारी हो चुका है। 1420 हिजरी 1999ई में "अलमजमुलइस्लामी" मुबारकपुर की जेरे निगरानी रजा एकेडमी मुम्बई ने जब नये अन्दाज़ में उस की तबाअत करानी चाही तो उस्ताज़ गिरामी हज़रत अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही दाम जिल्लाहु सदुरुल मुदरिरीसीन जामिआ अशरफिया, मुबारक पुर की तस्हीह व तजदीद और गिराँ कद्र अलिमाना अरबी मुकद्दमा के साथ उसकी शान्दार तबाअत कराई।

इस किताब की अहमियत व इफादीयत के पेशे नज़र हज़रत ताजुशरीआ अल्लामा अजहरी साहब दाम जिल्लाहुलआली ने उर्दू ज़बान में उन दोनों किताबों का शान्दार, गिराँ कद्र और वकी तर्जमा फरमाया। यह तर्जमा इतना उमदा, सलीस और शश्ता है कि यह तर्जमा नहीं बल्कि उर्दू ज़बान में मुस्तकिल तस्नीफ़ की हैसियत रखता है। उस में असल के अलफाज़ की मुकम्मल रिआयत के साथ मज़मून को बहुत वाज़ेह अन्दाज़ में इस तरह अदा किया गया है कि सलासत व रवानी कही भी मुतास्सिर होती नज़र नहीं आती। हर साहिब इल्म जानता है कि इल्मे कलाम की किताबों में फलसफा व मन्तिक के मुवाहि़स और इस्तिलाहें कसरत से इस्तेमाल की जाती हैं, जिन को अरबी ज़बान से मुन्तकिल कर के उर्दू के कालिब में ढालना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहु

ने अपने लिसानी व अदबी कमाल व महारत से उसको बहुत आसानी के साथ उमदा पैराये में उर्दू ज़बान में कर दिया दिखाया है अब ज़ैल में असल किताब की एबारत के साथ तर्जमा का एक नमूना कारीइन किराम की खिदमत में पेश है जिस से तर्जमा की उमदगी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है अरबी एबारत अज़ इमाम अहमद रज़ा कुददुस सिर्रुहु :

तर्जुमा: अज़ हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहु:

"और उन्हें में से मिरजाई फ़िक्री है और हम उन लोगों को मिरजा गुलाम अहमद कादयानी की तरफ मन्सूब कर के "गुलामी" कहते हैं यह एक दज्जाल है जो उस ज़माना में निकला तो पहले उस ने हज़रत ईसा मसीह अला नबियना व अलैहिस्सलात वस्सलाम के जैसा होने का दअवा और खुदा की कसम उस ने सच कहा वह झूटे मसीह दज्जाल के मिस्ल है फिर उसकी हालत ने तरक्की की, तो उसने अपनी तरफ वही का दअवा किया और बेशक वह खुदा की कसम सच्चा है इसलिए कि अल्लाह तआला का फ़रमान है: *شَاطِطِينَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحَىٰ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ* (सूरतुलअन्आम आयत 112) *بَعْضُ زُخْرُفِ الْقَوْلِ غُرُورًا* (कन्जुलईमान) आदमियों और जिन्नों में के शैतान कि उनमें एक दूसरे पर खुफिया डालता है बनावट की बात धोके को। (कन्जुलईमान) रहा उसका उस दअवा (अज़म) वही को अल्लाह की तरफ करना और अपनी किताब "बराहीने गलानिया" को कलामुल्लाह अज़ व जल करार देना तो यह भी इन बातों

से है जो इब्लीस ने उस से चुपके से कह दी: कि तू मुझ से ले ले और आलाहुलआलामीन की तरफ मन्सूब करदे”

फिर खुल कर उसने नबुव्वत व रिसालत का दअवा किया और कहा : वही है अल्लाह जिस ने अपना रसूल कादियान में भेजा और उसने यह कहा कि अल्लाह ने जो उतारा उस में यह आयत है कि हम ने उसको कादयानी में उतारा और वह हक के साथ नाज़िल हुआ। और यह गुमान किया कि यह वही अहमद है जिस की बशारत मरयम के बेटे ने दी और वही अल्लाह तआला के उस फरमान से मुराद है जिस में अल्लाह ने फरमाया उस रसूल की खुश खबरी देने आया जो मेरे बाद होगा उस का नाम अहमद होगा और उस का गुमान यह है कि अल्लाह तआला ने उस से फरमाया, बेशक तुम इस आयत के मिसदाक हो।
هو الذى ارسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على
دين كله (सूरतुल फतह आयत 28) वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर गालिब करे। (कन्जुलईमान) फिर अपनी कमीन जात को बहुत सारे अम्बिया व मुरसलीन सलात अल्लाह अलैहिम व सलामहु से अफजल बताने लगा और नबियों रसूलों में कलमतुल्लाह व रुहुल्लाह को खास कर के कहा इब्ने मरयम के जिक्र को छोड़ो। इस से बेहतर गुलाम अहमद है और जब उस से मुवाखिजा किया गया कि तो ईसा रसूलुल्लाह अलैहिस्सलात वस्सलाम के जैसे होने का दावा करता है तो कहाँ है वह जाहिर निशानियाँ जो ईसा

अलैहिस्सलाम लाये, जैसे मुरदों को जिन्दा करना, मादर जाद आंघे और कोढ़ी को अच्छा कर देना और मिट्टी से परिन्दा की शक्ल बनाना, फिर उस में फूंक मारते तो वह अल्लाह के हुक्म से उड़ता परिन्दा हो जाता तो, उसने जवाब दिया ईसा यह काम मुसमर यजम से करते थे (मुसमर यजम अंग्रेज़ ज़बान में एक किसम का शोअबदा है तो उस ने कहा और अगर यह न होता कि मैं उन जैसी बातों को नापसन्द करता हूँ तो मैं भी ज़रूरी दिखाता और जब मुस्तकविल में होने वाली गैब की खबरें बहुत बताने का आदी हो और उन पेशान गोइयों में उसका झूट बहुत ज़्यादा जाहिर होता अपने मर्ज़ की उसने दवा यूँ की कि गैबी खबरों का झूट होना नबुव्वत के मुनाफी नहीं इसलिए कि बे शक यह चार सो नबियों की खबरों में जाहिर हुआ और सब से ज़्यादा जिन की खबरें झूटी हुये ईसा (अलैहिस्सलाम) हैं और बद बख्ती के जीनों में चढ़ते चढ़ते उस दर्जा को पहुँचा कि वाकिअतन हुदैबिया को उन्हें झूटी खबरों में शुमार किया, तो अल्लाह की ज़ात लोगत हो उस पर कि जिस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ईजा दी, और अल्लाह की लअनत उस पर हो कि जो अम्बिया में से किसी को ईजा दे व सल्लल्लाहु तआला आला अम्बिया व बारिक वसल्लम” (5)

अलहादुलकाफ़ फी अहकामिज्जुआफ़ :

यह किताब आला हज़रत इमाम अहमद रजा

कादरी, बरेलवी अलैहिरहमा वरिजवान के दर्ज जैल तीन रिसालों का अरबी में तर्जमा है। (1) मुनीरुलऐन फी हुक्मे तकवीलुअवहामीन (2) अलहादुलकाफ फी हुक्मिजुआफ (3) मदारिज तबकातुलहदीस। यह तिनों रिसाले फतावा रजविया जिल्द दोम, किताबुस्सलात, बाबुलआजान वलइकामतु में शामिल हो कर छप चुके हैं जो जहाजी साइज के एक सौ छः सफहात को घेरे हुये हैं। उन में पहला रिसाला मुस्तकिल और बाद वाले दोनों जिम्नी रिसाले हैं।

पहले रिसाले में इस्म रिसालत सुन कर उंगूठे चूमने और आँखों से लगाने का जवाज व इस्तिहसान आलिमाना, फकीहाना और मुहदिदसाना अन्दाज में आफताब निसफुन्नहार की तरह वाजह और ऐयौ किया गया है। और दूसरे रिसाला में तबकात हदीस के मदारिज को निहायत मुहदिदसाना अन्दाज में बयान किया गया है। इन रिसालों में तीस जलोलुल कद्र मुहदिदसाना इफादात और बारा अजीमुलमुरत्ताब आलिमाना फवाइद हैं जिन में हदीस जईफ के अहकाम बड़े शरह व बस्त से अइम्मा हदीस की वाजेह तसरीहात की रौशनी में बयान किए हैं। यह रिसाला सही मअनों में 'मुनीरुलऐन' आखें रौशन करने वाला है।

हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लुहुन्नूरानी ने उन रिसालों की अहमियत और इल्मी कद्र व कीमत को महसूस करते हुये उन का फसीह अरबी में तर्जमा फरमाया और मौजू का लिहाज करते हुये असल नाम के बजाये तिनों के मजमुए का नाम 'अलहादुलकाफ फि अहकानिज्जुआफ' रखा।

जैल में असल किताब की छः एबारत, फिर हज़रत ताजुशरीआ का अरबी तर्जमा कारईन किराम की खिदमत में बतौर नमूना पेश है ताकि वह खुद तर्जमा मुलाहिजा कर के उस की अहमियत महसूस कर सकें।

नमूना :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिरहमा रिसाला 'मुनीरुऐन' में खुतबा के बाद फरमाते हैं:

हुज़ूर पुरनूर शफीअ यौमुन्नुसुर, साहिबे लौलाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाम पाक अज़ान में सुन्नते वक्त अंगूठे या अंगुशतान शहादत चुम कर आँखों से लगाना कतअन जाइज है। जिस के जवाज पर मकाम तबअ में दलाइल कसीर काइम और खुद अगर कोई दलील ख़ास न होती तो मनआ पर शरअ से दली न होना ही जवाज के लिए दलील काफी था। जो नाजाइज बताये सुबूत देना उसके जिम्मे है कि काइल जवाज के लिए दलील काफी था। जो नाजाइज बताये सुबूत देना इस के जिम्मे है कि काइल जवाज मुतमरिसक ब असल है, और मुतमरिसक बा असल मोहताज दलील नहीं। फिर यहाँ तो हदीस व फिक्ह, इरशाद उलमा व अमल कदीम सलफे सुलहा सब कुछ मौजूद। उलमा-ए-मुहद्दीसिन ने उस बाब में हज़रत खलीफा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सय्यदिना सिदीक अकबर व हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सय्यदिना इमाम हसन व हुसैन व हज़रत नकीबे औलिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम सय्यदिना अबूलअब्बास खिज़्र अलल हबीबुलकरीम व अलैहिम जमीअन अरुसलातु वत्तस्लीम वगैराहुम अकाबिरे दीन से हदीसें रिवायत फरमायें जिस की कदरे तफसील इमाम अल्लामा शमसुद्दीन सखावी रहेमाहुल्लाहु तआला ने किताब मुस्तताब "मकासिद इसना" में जिक्र फरमाई और जामेउरूमूज़ शरह निकाया, मुख्तसुरुल वकाया व फतावा सौफिया व कन्जुलएबाद व रददुमुहतार हाशिया दुर्रे मुख्तार वगैराह कुतुब फिक्ह में इस फेअल के इस्तिहबाब व इस्तिहसान की साफ तसरीह आई"। (2)

अतायलकदीर फी हुक्मत्तस्वीर :

यह रिसाला आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी कुददिसा सिरुहु का एक शाहकार फतवा है, इस का मौजू है "तस्वीरों के अहकाम" 1331 हिजरी को आप की बारगाह में यह सुवाल पेश हुआ कि किसी दीनी मुअज्ज शख्स की तस्वीर बतौर तब्रुक मकानों में रखना जाइज या नहीं? उस के जवाब में आप ने जानदार चीजों की तस्वीर के हराम होने पर वह आलिमाना तहकीक पेश फरमाई जो आप की फकीहाना अबकरियत व कमाल का मुंह बोलता सुबूत है।

इस रिसाले में आप ने यह बयान फरमाया है कि जानदार की मन्मूअ तस्वीरों की कराहत और मन्मूआत की मशइख किराम ने एक तो यह इल्लत बताई है कि इस में एबादत सनम की मुशाबिहत पाई जाती है दूसरी इल्लत यह है कि जहाँ मन्मूअ तस्वीर रखी हो वहाँ मलाइका (फिरिश्ते)

नहीं जाते, और जिस मकान में फिरिश्ते न आयें वह हर जगह से बदतर है। तीसरी इल्लत तअजीम और तशबीह है।

आगे इमाम अहमद रज़ा कादरी अलैहिर्मा फरमाते :

"मुअज्जम तहकीक यह है कि तहरीमे तस्वीर की असल इल्लत ताजीम है ताजीम ही से तशबिह पैदा होता है और ताजीम ही से मलाइका रहमत नहीं आते। व लिहाज़ा इहानत की सूरतें जाइज रखी गई हैं कि फर्श में हो जिस पर बैठें, खड़े हों, पाऊ रखें वगैरा, अगर ऐसी तस्वीरों का भी बनाना बनवाना हराम है।

और तशबिह की दो किस्में हैं: एक आम कि मुतलकन तस्वीर मन्मूअ को बरोजा ताजीम रखने से हासिल होता है। दूसरा तशबिह खास कर उस के एलावा नफिल नमाज़ में मुसल्ला के किसी फेअल या हैयत से जाहिर हो, मसलन तस्वीर को सामने रख कर उस की तरफ अफआल नमाज़ बजालाना यह अशद व अखबस है।

तस्वीर की इल्लत कराहियत तशबिह एबारत है चाहे तशबिह खास हो या आम, मगर इतना ज़रूर है कि वह तस्वीरें ऐसी हों जिन्हें मुश्रिकीन पुजते हैं और जिन्हें नहीं पुजते तो वह बुत के हुक्म में नहीं।

फिर आला हज़रत ने ऐसी तस्वीरों की चन्द किस्में बयान फरमाई हैं जिन्हें ताजीम से रखने या उन की तरफ नमाज़ पढ़ने से तशबिह एबादत व सनम नहीं होता और लिखा है कि सब मुजिबे कराहत नहीं।

यह रिसाला अपने मौजूअ पर निहायत मुदल्लिल और मुहक्किना रिसाला है, यह फतावा रजविया, जिल्द नहुम, निस्फ आखिर में शामिल है जो स.47 से स.62 तक फैला हुआ है इस तरह यह जहाजी साइज के उठठारह सफहात को मुहीत है।

रिसाला की इल्मी अहमियत और जलालत शान के पेश नजर हजरत ताजुशरीआ दाम जिल्लुहुलआली ने रवा अरबी जवान में इस का तर्जमा फरमाया है। तर्जमा का नमूना मअ असल एबारत के जैल में नजर कारेईन है।

नमूना:

अल्लाह अज़्ज व जल्ल ! इब्नीस के मक़ से पनाह दे। दुनिया में बुत परस्ती की इब्तिदायूँ हुई कि सालेहीन की मोहब्बत में उनकी तस्वीरें बना कर घरवालों और मस्जिदों में तबरकन रखें और उन से लज्जत एबादत की ताईद समझी। शुदा शुदा वही मअबूद हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुतवातिर हदीसों में फरमाया "ولا صورة" (मलानके बिनाफे क्ल) रहमत के फिरिश्ते उस घर में नहीं आते जिस में कुत्ता या तस्वीर हो और उस में किसी मुअज़्जम दीनी की तस्वीर होना या न उज़्र हो सकता है, न इस बवाल अज़ीम से बचा सकता है, बल्कि मुअज़्जम दीनी की तस्वीर ज़्यादा मुजिब बवाल है कि उसकी ताज़ीम की जायेगी, और तस्वीर ज़ी रुह की ताज़ीम खासी बुत पुरस्त की सूरत और गोया मिल्लते

इस्लामी से सरीह मुखलिफत है। अभी हदीस सुन चुके कि वह औलिया ही की तस्वीरें रखते थे जिस पर उनको बदतरीन खल्कुल्लाह फरमाया। अम्बिया अलैहिमुस्सलात वस्सलाम से बढ़ कर कौन मुअज़्जम दीन होगा, और नबी भी कौन? हजरत शैखुलअम्बिया खलील किबरिया सय्यदिना इब्राहीम अला इब्निहिलकरीम अफज़लुस्सलात वत्तस्लीम कि हमारे हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाद तमाम जहान से अफज़ल व आला हैं, उनकी और हजरत सय्यदिना इस्माईल ज़बीहुल्लाह व हजरत बतूल मरयम अलैहिमुस्सलात वस्सलाम की तस्वीरें दीवार काबा पर कुप्रफार ने नक्श की थी, जब मक्का मुअज़्जमा फत्ह हुआ, हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अगीरुल मोमिनीन फारुक़े आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु को पहले भेज कर वह सब महय़े करा दें। जब काबा मुअज़्जमा में तशरीफ़ फरमा हुये बाज़ के निशान कुछ बाकी पाये, पानी मंगाकर बा नफ़िस नफीस उन्हें धो दिया और बनाने वालों को "कातलहुमुल्लाह फरमाया (अल्लाह उन्हें कत्ल करे)

शुमुलुलइस्लाम ले उसूलिरूसूलिलकिराम:

इस रिसाला का मौजूअ "सुरुर कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आबा किराम और मुहिम्मात मुकर्रमात का इस्लाम व ईमान" है। 21, शवाल 1315 हिजरी को आला हजरत इमाम अहमद रज़ा कादरी कुददुस सिरुहु

की बारगाह में हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद अब्दुलगफ़ार कादरी मुदर्रिस आला मदरसा जामेउलउलूम जामे मस्जिद बंगलौर की जानिब से यह सवाल आया कि सरवरकाइनात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मौ बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक मोमिन व मौहिद थे या नहीं ?

इस के जवाब में आप ने यह अज़ीमुशान मुहक्काना रिसाला तहरीर फरमाया और कुरआन व हदीस के दस मुस्तहक़म दलाइल और मुतअदिद वजूह से सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अबवैन करीमैन के ईमान को साबित फरमाया और यह भी लिखा है है पै तीस जलीलुलक़द उलमा-ए-किराम व आइम्मा-ए-किबार का यही मजहब मुख्तार है फिर उन सभी के नाम भी जिक्र फरमाये और आखीर में हज़रत आमना रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के कुछ अशआर भी नक्ल किए हैं जो उन्होंने वक़्त वफ़ात अपने फ़र्जन्द करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ नज़र कर के कहे थे, उन अशआर से भी उन का इस्लाम व ईमान साबित होता है।

यह रिसाला फ़तावा रजविया की ग्यारहवीं जिल्द में सफ़हा नम्बर 154 से सफ़हा नम्बर 171 तक फ़ला हुआ है। इस तरह यह बड़े साइज़ के उठठारह सफ़हात को मुहीत है। इस में मजमूई तौर पर इक्तालीस हदीसे मौजूअ के सुबूत में पेश की गई हैं। यह रिसाला निहायत रुह परवर

और ईमान अफ़रोज़ है और ईमान अबवैन के मौजू पर एक मुफ़रिद शान का हामिल है।

हज़रत ताजुशरीआ अल्लामा अज़हरी साहिब दामजिल्लाहुआली ने फ़सीह व बलीग़ अरबी में इस का तर्जमा फरमाया है, यह तर्जमा निहायत वकीअ, सलीस और शरता है जो दोनों जुबनों में हज़रत की महारत का रौशन सुबूत है।

असल रिसाला की कुछ एबारत बतौन नमूना हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहु के अरबी तर्जमा के साथ नज़रे कारेईन है।

नमूना:

“जब सहीह हदीसों से साबित हुआ कि हर कर्न व तबका रूये ज़मीन पर (कम अज़ कम) सात मुसलमान बन्दगाने मकबूल ज़रूर हैं, और खुद सहीह बुखारी शरीफ की हदीस से साबित हुआ कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिन से पैदा हुये वह लोग हर ज़माने, हर कर्न में ख़यार कर्न से थे और आयत कुरानिया नातिक कि कोई मुशिरक अगर्चे कैसा ही शरीफ़ुलकौम, बिनसब हो किसी गुलाम मुसलमान से भी ख़ैर व बेहतरीन नहीं हो सकता। तो वाजिब हुआ कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आया अमहात हर कर्न व तबका में उन्हें बन्दगाने सालेह व मकबूल से हों, वरना मआज़िल्लाह सही बुखारी में इरशादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम और कुरआन अजीम में इरशाद हक जल्ल व अला के मुखालिफ होगा"। (6)

फिरहे शाहिन्शाह व अन्नलकुलूब बेयदिलमहबूब बेअतायलल्लाह

महल्लाह फील खाना, कानपुर से 1326 हिजरी को सय्यद मुहम्मद आसिफ साहिब ने दर्ज जैल अल्फाज में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा वरिज़वान के पास इस्तिफ़ा भेजा:

"हामी-ए-सुन्नत, माही बिदअत, जनाब मौलाना साहिब दामत फीयूजहुम, बाद सलाम मस्नूनुलइस्लाम इल्तिमास बरई कि इन दिनों जनाब वाला का दीवान नअतिया कम तरीन के जेरे मुताला है। बसद आदाब मुलाज़िमान हुज़ूर की खिदमत बा बरकत में मुलतमिस हों कि दो मिसरा के अल्फाज शरअन काबिल तरमीम मालूम होते हैं और गालिबन इस हेच मदाँ की राये से मुलाज़िमान सामी भी मुत्तफिक हों और दर सूरत अदम इस्तिफाक जवाब वा सवाब से तशफ़ी फरमायें। "हाजियों! आओ शाहिन्शाह का रोज़ा देखो"

इस मिसरा में लफ़्ज़ "शाहिन्शा" खिलाफ हदीस मुमानिअत दर बार-ए-कौल "तिलकलमलूक" है बचाये शाहिन्शाहे अगर "मरे शाह" हो तो किसी कैस्म का नुकसान नहीं दूसरा यह मिस्अ हज़रत गौसे आजम कुददुस सिरहु की तारीफ़ में:

"बन्दा मजबूर है, खातिर यह है कब्ज़ा तेरा"

सहीह हदीस शरीफ़ से साबित है कि दिल खुदावन्द

करीम के कब्ज़ा कुदरत में हैं और वह जात मकल्लिबुकुलूब है। चूंकि इस हेच मदाँ, सराया इस्थॉ को मुलाज़िमान जनाब वाला से खास अकीदत व इरादत है। लिहाज़ा उमीदवार है कि यह तहरीर महज़ "अदिदनुन्नसह" पर महमूल फरमाई जाये। बखुदा फिदवी ने किसी और गर्ज़ से नहीं लिखा"

इन दोनों सवालों के जवाब में इमाम अहले सुन्नत सय्यदिना आला हज़रत अलैहिर्रहमा वरिज़वान ने ऐसी तफ़सीली और मुहक्काना बहस फरमाई कि उस ने एक रिसाला की शक्ल इस्तिथार कर ली।

पहले मिसरा पर तन्कीद के जवाब में आप ने जो तहकीक फरमाई उसका खुलासा यह है।

(1) "शाहिन्शाह" का अगर मअना मजाज़ी मकसूद हो और अज़ राह तकबुर इस का इस्तेमाल न हो तो उसका इतलाक अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा और मुकर्रब बन्दों पर बिला शुबह जाइज़ व दुरुस्त है।

(2) अगर कोई शख्स तकबुर के तौर पर से अपने लिए इस्तेमाल करे तो बिला शुबह यह नाजाइज़ व हराम होगा। बल्कि मअना हकीकी इस्तिगराकी की सूरत में कुफ़्र हो जायेगा।

और दूसरे मिसरा पर तन्कीद के जवाब में जो तन्कीद पेश की उसका खुलासा यह है कि:

"मकल्लिबुलकुलूब" मअना हकीकी के एअतिबार से अल्लाह अज़ज़ व जल्ल के लिए खास है, लेकिन अल्लाह ने अपने खास बन्दों को भी इस ताक़त व कुव्वत से नवाज़ा है,

इस लिए अताई मान कर उसका इतलाक गैरुल्लाह पर भी हो सकता है, उस में शरअन कोई खराबी नहीं।

यह रिसाला अपने मौजूअ पर निहायत गिराई कदर बेश और मुहक्काना है, इस से आला हजरत अलैहिर्रहमा वरिजवान के इल्मी तबहर कुव्वते इस्तिदलाल, हिफज व इस्तिहजार और आलिमाना जरफ निगाही और मुहक्काना फिक्र व बसीरत का बा खुबी इजहार होता है।

इस वक़्त रिसाले का जो नुस्खा मेरे सामने है वह "शहिन्शाह कौन" के नाम से इदारा अफकार हक, बाइसी बाजार पुरनिया (बिहार) का मतबूआ है। यह 36×23/16 साइज के पचपन सफ़हात पर मुश्तमिल है।

हजरत ताजुशरीआ दामत बरकातुहु मुलआलिया ने इस रिसाला के मौजूअ और मज़मून की अहमियत व इफादीयत के पेशे नजर अरबी ज़बान में उस का निहायत शानदार तर्जमा फरमाया है। बतौर नमूना जैल में असल एबारत मअ तर्जमा पेशे खिदमत है :

नमूना:

आला हजरत इमाम अहमद रजा कादरी कुददुस सिरीहु गैर खुदा पर लफ़्ज़ "शहिन्शा" का इत्तलाक व इस्तेमाल मुतअदिद उलमा-ए-किराम, मशाइखे एज़ाम और अइम्मा एलाम के हवाले से पेश करने के बाद लिखते हैं :

"गर्ज कलिमात अकाबिर में उसके सदहा नजाइर मिलेंगे। हमें किया लाइफ़ है कि उन तमाम आइम्मा व फ़ुक़हा व उलमा व उर्फ़ा रहिमाहुम अल्लाह तआला व

कुदरत इसरार हुम पर तअन करें। वह हुम से हर तरह से अरफ़ व आलम थे। लिहाजा वाजिब कि बतौफीक इलाही नजर फ़वही से काम ले और इस लफ़्ज़ के मना व जवाज़ में तहकीक़ मनात करें कि मसअला कतअन माकूलुल मअना है न कि महज़ तअबुदी।

फ़अकुल व बिल््लाहित्तौफीक़: जाहिर है कि असल मन्शा से मना इस लफ़्ज़ का इस्तिगराक हकीकी पर हमल है, यानी मौसूफ़ का इस्तिस्ना तो अक्ली है कि खुद अपने नफ़्स पर बादशाह होना माकूल नहीं, उस के सिवा जमीअ मलूक पर सुलतनत और यह माना कतअन मुख्तस ब हजरत इज़्ज़त अज़्ज़ जलालोहु और उस मअना के इरादे से अगर गैर पर इतलाक हो तो सराहतन कुफ़्र है कि उस के इस्तिगराक हकीकी में रब्व अज़्ज़ व जल्ल भी दाख़िल होगा। यानी मआज़ल्लाह मौसूफ़ को इस पर भी सुलतनत है। यह हर कुफ़्र से बदतर है। मगर हाशा ना हर गिज़ कोई मुसलमान उस का इरादा कर सकता है न ज़नहार कलाम मुस्लिम सुन कर किसी का इस तरफ़ जहिन जा सकता है, बल्कि कतअन कतअन ओहद या इस्तिगराक उर्फ़ी ही मुराद और वही मफ़हूम व मुस्तफ़ाद होता है कि काइल का इस्लाम ही उस का इरादा पर करीना हातिआ है, जैसा कि उलमा ने मुवहिद के अंबतुरबी उलवक्ल (मौसम रबीअ ने सबजा उगाया) कहने में तसरीह फरमाई" 8

अहलाकुलवहाबीईन अला तौहीन कुबूलमुस्लिमीन :

मौलाना मुहम्मद उमरुददीन कादरी हज़ारवी

अलैहिरहमा के पास यह सवाल आया कि अहले सुन्नत के किसी कदीम कब्रिस्तान की कबरों को खोद कर अपने रहने के लिए मकान बनाना मजहब हन्फी की रुह से जाइज है या नाजाइज ? और ऐसा करने से कबरों में मदफून मुरदों की तौहीन है या नहीं ?

इस के जवाब में मौलाना हज़ारवी अलैहिरहमा ने फरमाया कि अम्बिया, औलिया और शौहदा की कब्रें ढा कर उन की तौहीन करना फ़िर्का मुत्तदा वहाबिया का शअर हो चुका है। वहाबिया के पेशवाओं की किताबें ऐसे मज़ामीन से भरी हुई हैं जिन से उन खासान खुदा की अहानत होती है। तो जब उन महबूबाने बारगाहे इलाही की तौहीन उनके मजहब में रवा है तो आम मोमिनीन की कब्रों को ढाना और उनकी तौहीन करना उनके मकान बनाना, उन्हें ईजादेना और उनकी तौहीन करना हरगिज जाइज नहीं। फिर कसीर कुतुब हदीस व फ़िक्ह व फतावा से अपने मौकिफ की ताईद में एबारतें पेश की हैं। आप का यह वकीअ फतावा मुतवस्सित साइज के सात सफहात को मुहीत है उस पर मौलाना अब्दुलगफूर, मौलाना मुहम्मद बशीरुद्दीन, मौलाना अब्दुर्शीद देहलवी, मौलाना मुहम्मद फज़लुलमजीद बदायूनी, मौलाना अब्दुलमुकतदिर बदायूनी, मौलाना मुहम्मद फज़ले अहमद बदायूनी, मौलाना मुहम्मद हाफिज बख़्श मुदर्रिस मदरसा मुहम्मदिया बदायूनी और मौलाना मुहिब अहमद कादरी मुदर्रिस मदरसा शमसिया, जामेअ मस्जिद बदायू की तसदीकात हैं। आखरी तसदीक आला हज़रत इमाम अहमद

रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिरहमा की है जो मौलाना मुहम्मद अमरुद्दीन हज़ारवी अलैहिरहमा की दरख्वास्त पर आपने कलमबन्द फरमाई, इस तसदीक ने एक रिसाला की सूरत इख्तियार कर ली और उसका तारीखी नाम "اهلاك الوهابيين على توهين قبور المسلمين" उस से 1322 के आदाद निकलते हैं।

इस रिसाले में दो फसल हैं फसल अब्वल में यह साबित किया गया है कि मुसलमानों की कबरों की ताजीम जरूरी और तौहीन मन्मूअ और नाजाइज है और उस में उन उमूर का भी तफसीली बयान है जिन से असहाब कुबूर को अजीयत पहुंचती है।

और फसल दोम में वहाबियों के बे सरोपा दलीलों पर तन्कीद और उस बात का वाज्हे बयान है कि मुसलमानों के आम कब्रिस्तान में अपना रिहाइश के लिए मकान बनाना तो बहुत दौर कोई वक्ती मकान बनाना भी नाजाइज व हराम है। फिर उस तसदीकी रिसाला पर दर्ज जैल उलमा अहले सुन्नत की गिराँ कद तसदीकात व ताईदात हैं (1) मौलाना मुहम्मद सुलतान अहमद खाँ (2) मौलाना मुहम्मद अब्दुल्लाहि (3) मौलाना मुहम्मद नईम पशावरी (4) मौलाना सय्यद हैदर शाह कादरी (5) मौलाना मुहम्मद ज़फरुद्दीन रज़वी बिहारी अलैहिमुर्रहमा वरिजवान।

यह मुहक्काना रिसाला बड़े साइज के चालीस सफहात पर फैला हुआ है और अपने मौजूअ के तमाम जरूरी गोशों को मुहीत है।

इस रिसाला की अहमियत व इफादियत के पेशे नजर हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहु ने उस का अरबी में तर्जमा फरमाया है ताकि उर्दू से ना आशना अरबी दाँ तबका भी उस से मुस्तफीद हो सके नमूना के तौर तर्जमा मअ असल एबारत के कारीईन की खिदमत में पेश है।

नमूना:

“बात यह है कि वहाबिया की निगाह में कुबूर मुस्लेमीन बल्कि खास मजारात औलिया किराम अलैहिमुर्हमा वरिजवान ही की कुछ कद्र नहीं बल्कि हत्तलवसीअ उन की तौहीन चाहते हैं और जिस हीले काबू चले उन्हें नेस्त व नाबूद व पामाल करने की फिक्क में रहते हैं। उन के नजदीन इंसान मरा और पत्थर हुआ, जैसे वह खुद अपनी हयात में हैं कि **هالاولا يسمع ولا يبصروا يغنى عنك شيئا**। कि शरअ मुत्तहर हैं मजारात औलिया तो मजारात आलिया, आम कुबूर मुस्लिमीन मुस्तहक तकरीम व मुमतनअउलतौहीन यहाँ तक कि उलमा फरमाते हैं : कब्रों पर पाओं रखना गुनाह है कि सकफ कब्र भी हक मेयत है कनीया में इमाम अलाउ तर कमानी से है। **بأنهم يوطئون القبور لأن سفق القبر حق الميت**। हत्ता कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिन की नअलैन पाक की खाक अगर मुसलमान की कब्र पर पड़जाये तमाम कब्र जन्नत के मुश्क के मुश्क व अंबर से महक उठे। अगर मुसलमान के सीने और मुंह और सर और आँखों पर अपना कदम अकरम रखें उसकी लज्जत व नेअमत व राहत व बरकत में अबदुल आबाद तक सरशार व सरफराज रहे। वह फरमाते हैं : **“لا امشيتي على جمرة أو سيف أحب الي من أن امشيتي على قبر مسلم”** (बे शक चिंगारी या तलवार पर चलना मुझे इस से ज्यादा पसन्द है कि किसी मुसलमान की कब्र पर चलो) रवाहु इब्ने माजा बसनद जैद अन उकबत बिन आमिर रदियल्लाहु तआला अन्हु।

और वहाबिया को इस की फिक्क है किसी तरह मुसलमानों की कब्रों पर मकान बनें, लोग चलें फिरे, कजाये हाजत करें भंगी अपने दुकरे ले कर चलें।

“अगर ई अस्त पसन्द तो नसीहत बादा”(10)

तयसुलमाऊन लिस्सुकुन फित्ताऊन :

26/सफ़र 1325 ई को मौलवी मुहम्मद नफीस इब्ने मुहम्मद इदरीस कस्बा निगराम जिला लखनऊ की जानिब से नौ सवालात पर मुश्तमिल एक इस्तिफ़ता आला हज़रत इमाम अमदर रजा कादरी बरैलवी कुददुससिरुहु की बारगाह में आया जिस का हासिल यह था कि ताऊन के खौफ़ से किसी बस्ती से भागना शरअन कैसा है ?

आप ने उसके जवाब में कुरआनी आयात, अहादीस नबविया, शरह हदीस और फिक्ही जुज़ियात की रौशनी में जवाब दिया कि ताऊन से फ़रार गुनाह कबीरा है और फ़रार की तरगीब देने वाले पर फ़रार होने वाले से ज़्यादा सख्त ववाल है। और हदीसें इस मौकूफ़ की ताईद व तौसीक में पेश की गई हैं उन में ताऊन से भागने पर सख्त वईद और सन्न किए ठहरे रहने की तरगीब व ताकीद है।

इस रिसाला का तारीखी नाम “तयस्सिरुलमाऊन लिस्सुकुने फित्ताऊन” है जिस से 1325 के आदाद बर आमद होते हैं। यह रिसाला फ़तावा रज़विया, जिल्द नहुम, निस्फ़ अव्वल में शामिल है और सफ़हा नम्बर 157 से स266 तक बड़े साइज के आठ सफ़हात को मुहीत है।

हज़रत ताजुशशरीआ दाम जिल्लोहुआली ने उसका शान्दार फ़सीह अरबी में तर्जमा फ़रमाया है जो आप की फन्नी महारत व कमाल का मुंह बोलता

सुबूत है। बतौर नमूना कुछ एबारत मअ अरबी तर्जमा नजरे कारेईन है।

नमूना :

जिन हिक्मतों की बिना पर हकीम करीम रऊफुर्रहीम अलैहि व आला आलैहिस्सलात व त्तस्लीम ने ताऊन से फरार हराम फरमाया उन में एक हिक्मत यह है कि अगर तन दुरुस्त भाग जायेंगे बीमार जाइअ रह जायेंगे, उन का न कोई तीमार दार होगा न खबर गिराँ। फिर जो मरेंगे उन की तजहीज व तकफीन कौन करेगा? जिस तरह खुद आज कुल महारे शहर और गर्द व नवाह के हुनूद में मशहूर हो रहा है कि औलाद को माँ बाप, माँ बाप को औलाद ने छोड़ कर अपना रास्ता लिया। बड़ों बड़ों की लाशें मजदूरों ने ठेले पर डाल कर जहन्म पहुँचाये। अगर शरअ मुत्तहर मुसलमानों को भी भागने का हुक्म देती तो मआज़ल्लाह यही है बे बत्ती बे करी उन के मरीजों मय्यताँ को भी धीरती, जिसे शरअ कतअन हराम फरमाती है"। (12)

अरबी तर्जमा अज हजरत ताजुशरीआ मददजुल्लाहु "من جملة الحكم التي منع من أجلها الحكيم الكريم، الرؤف الرحيم عليه وعلى آله الصلوة والتسليم عن الفرار من الطاعون أنه لو فر الأصحاء لضاع المرضى ولا يبقى من يعمر ضهم ولا من يتعدهم، فمن يقوم يتجهير الموتى و تكفينهم كما

شاع في الوثنيين ببلدنا و نواحيه ان الأولاد و الآباء والأههات اتخذوا سبيلهم، والعمال حملوا جيف أكابرهم على العربيات و اصلوهم النار - ولو أن الشرع المهبط أذن المسلمين بالفرار لكان هذا العجز و فقد العون أحدق بالمرضى و الموتى منهم الأمر الذي حرمه الشرع قطعاً - (13)

मराजअ

1. अलमोअतकुदुलमुत्तकद, मअ अलमुस्तनदुल मोअतमद अरबी स.223,224 नाशिर:रजा एकेडमी, मुम्बई 1422 हिजरी 2001 ई.
2. मुनीरुलऐन, मशमूला फतावा रजविया, जि2 स425, रजा एकेडमी मुम्बई 1415 हिजरी 1994 ई.
3. इलहादुलकाफ फी अहकामिज्जुआफ, स18,19
4. अतायलकदीर फी हुक्मे अहकामित्तस्वीर, मशमूला फतावा रजविया, जिल्द नहुम निस्फ आखिर, स47,48 नाशिर रजा एकेडमी मुम्बई, 1415 हिजरी 1994 ई.
5. अतायलकदीर फी हुक्मित्तस्वीर (मुत्तर्जिम अरबी) स.11-9 अलमजउर्रजवी सोदागिरान मरकजे अहले सुन्नत बरेली शरीफ
6. शुमूलिलइस्लाम अलउसूलुरसूलिलकिराम, मशमूला फतावा रजविया, जि11/स.155 मतबूआ रजा एकेडमी मुम्बई।
7. शुमूलिलइस्लाम अलउसूलुरसूलिलकरीम, (मुत्तर्जिम अरबी) स.13, मशमूला तअलीकात जाहरा लिलशैख ला अजहरी आला सहीहुलबुखारी, मतबूआ, मजिलसु लबरकात, अलजामिआ अशरफिया, मुबारकपुर, 1428 हिजरी 2007 ई.
8. शाहिन्शाहेकौन? स.17, नाशिर:इदारा अफकार इक, बाइसी बाजार, पुरनिया, बिहार, 1411 हिजरी / 1990 ई.

9. फिक्र शहिन्शाह व अन्नलकुलूब बेदलमहबूबबिअताअल्लाह
स.10,11 नाशिर अलमजउरर्जवी मरकजे अहले सुन्नतबरेली।

10. इहलाकुलवहाबीईन स.36,37 नाशिरःरजवी कुतुब खाना,
महल्ला बिहारीपुर,बरेली शरीफ,बारपंजुम

11. अहलाकुलवहाबीईन(मुतर्जिम अरबी)मशमूला तअलीकाल जाहिरा आला सहीहिल
बुखारी,जि.1स98मतबूआ मजिलसुलबरकात अलजामिअ तुल अशरफिया,मुबारकपुर

12. तयस्सरुलमाऊन,मशमूला फतावा रजविया,जि.9स.262, 263

निरफे अव्वल किताबुलखत वालइबाह,नाशिरःरजाएकंडमी मुम्बई

13. तयस्सरुलमाऊन(मुतर्जिम अरबी)मशमूला तअलीकाल
जाहिरा आला सहीहिलबुखारी,जि.1स.148

मिरातुन्नजदिया के आईने में

प्रोफेसर डाक्टर गुलाम यहया अन्वुम,सुंदे सोऊबा ऊल्लो इस्लामिया,इम्मर्द यूनीवर्सिटी,नई देहली

इख्तिदा-ए-आफरीनश ही से हक व बातिल बा हम
दस्त व गरेबों हैं। यह दो ऐसी मुतजाद हकीकतें हैं जिन
का इत्तिहाद रोजे अजल से आज तक न कभी हुआ है
और न ही मुस्तकबिल में हो सकता है। ठीक इसी तरह
जिस तरह रौशनी और जुलमत,नशीब व फराज धूप और
छाओं,सियाही व सफेदी और झूट और सच कभी बा हम
मुत्ताहिद नहीं हो सकते। लेकिन इस वाजेह और रौशन
हकीकत के बा वजूद कुछ सुलह पसन्द और मौका परस्त
हजरात इस हकीकत पर पर्दा डालने की कोशिश में सर
गर्म अमल में और रौशनी को जुल्मत, धूप को छाओं,नशीब
को फराज,सियासी को सफेदी और झूट को सच में ज़म
करने की नापाक कोशिशें कर रहे हैं उनकी उस कोशिश
बा हम से इत्तिहाद का अमल में आना तो दर किनार
अलबत्ता एक नया तबका जिसे सुलह कुल्ली कहा जाता है
जरूर वजूद में आ गया है। यह सुलह कुल्लियत दर असल
मुनाफिकत का ही दूसरा नाम है जो समाज के लिए
इन्तिहाई खतरनाक है।

बरेलिवियत और नजदियत का इख्तिलाफ भी उसी
कबील से यह दोनों ऐसी वाजेह और रौशन हकीकतें हैं
जिन में एक की बुनियाद हक और दूसरे की बुनियाद
बातिल पर है। जब हक और बातिल में इत्तिहाद मुम्मिकन
नहीं तो इन दोनों जमाअतों के नजरियात बाहम क्यों कर

मुत्तहिद हो सकते हैं।

अगर उन के दरमियान इख्तिलाफ की बुनियादे हक व बातिल पर नहीं होते तो न जाने कब का यह मसअला हल हो गया होता क्यों कि जो लोग बाहम इत्तिहाद की कोशिश कर रहे हैं उन में कुछ लोग मुखल्लिस भी थे और हैं।

बरेलिवियत और नजदियत के बुनियादी इख्तिलाफ किया है इस सिलसिला में जानीबेन के वह उलमा जिन के अफकार व खियालात मुनाजिराना हैं बहुत कुछ लिख चुके हैं अभी माजी करीब में लफज़ बरेलिवियत और मसलक आला हजरत को ले कर बरेलवियों के दरमियान काफी मुअररका आराइयों हुये एक ओहद नो के परवरदा ने माजी के उन तमाम अकाबिर उलमा के खियालात को जिन्होंने मसलक आला हजरत को अपनी जिन्दगी का ओढ़ना दिछोना बनाया उन पर तअन व तशनीअ के खन्जर चलने और मौजूदा दौर में मसलक आला हजरत के नअरा को गैर जरूरी करार दे कर और इस से यह जहिन देने की कोशिश की कि उस से यह मालूम होता है कि मसलक आला हजरत दीन में कोई एक जुदागाना मसलक है जिस की तशहर अहले सुन्नत व जमाअत के लिए जहरे हिलाहल है उस पर बा जाबता वहस व मुबाहिस् भी हो जब इस सिलसिले में मेरी राय जानने की कोशिश की गई तो मुदीर पैगाम रजा मुम्बई की फरमाइश पर मसलक आला हजरत की ताईद में राकिमुस्सुतूर ने भी दर्ज जैल सुतूर कलम बन्द किए।

“हिन्दुस्तान में मुख्तलिफ़ मज़ाहिब के मानने वाले रहते हैं और हर मजहब के मानने वालों को अपने मजहब के उसूलों के मुताबिक़ जिन्दगी गुज़ारने की भरपुर आजादी है मजहब इस्लाम के पैरों कार मुत्तअदिद खीमों में बटे हुये

हैं सुन्नी और जमाअतें तो अहद सहाबा से ही मौजूद हैं खैरुलकुरुन का दर्द खत्म होते ही इस्लाम को लोगों ने मज़ीद मुख्तलिफ़ खानों में बांट कर रख दिया है। रवाफ़िज़, खवारिज़, चकड़ालोवी, कादयानी और ओहद हाज़िर के वहाबी, दैवन्दी और गैर मुकल्लिदीन की तरह बे शुमार फिरकों ने जनम लिया हिन्होंने किसी खारीजी दवाओ या लालच की बुनियाद पर इस्लामी शरीअत को अपनी तबीअत के मुताबिक़ ढालने की कोशिश की जिस के नतीजे में यह फ़िक के बसाओकात बाहम दर्स्ते व गिरेबों भी हुये लेकिन असल इस्लाम किया है उस का अमली नमूना सहाबा किराम ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से वालिहाना मोहब्बत कर के पेश किया जिस के बाइस जिन्दगी हदीस नबी صاحبی كالنجوم بايهم اقتديتم اهنديتهم के मुताबिक़ दुनिया के मुसलमानों के लिए मीनारा-ए-साह हिदायत नबी ताबेईन व तबअ ताबेईन ने जिस पर सख्ती से अमल किया उसी अकीदा व अमल और फ़िक्र व नजरिया की नुमाइन्दगी इस दौर में उलाम-ए-अहले सुन्नत व जमाअत कर रहे हैं। यह इस्लाम मुख्तलिफ़ नशीब व फ़राज से गुजरता हुआ हम तक पहुँचा कभी यज़ीदी फ़ितना ने उसकी शकल को मस्ख़ किया तो कभी सवाइयों ने उस का रंग ढुंदला किया, कभी कादियानियत ने उसके नक्श व निगार को फीका किया तो कभी वहाबियत और गैर मुकल्लदियत ने उसके मुस्लिमा उसूलों के साथ खिलवाड़ किया एक ज़माना तो वह आ गया कि नबी का मुदी मानना नहीं बल्कि मिट्टी में मिल जाना, नबी को मजबूर महज़ मानना नबी के इल्म को शैतान के इल्म से कमतर जानना जरूरतियात दीन से समझा गया और इस्लाम के पैरोंकारों को यह बताया गया कि अगर विलफ़र्ज बाद ज़माना नबी

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी खातमियत मुहम्मदी में कोई फर्क न आयेगा और यह भी इस्लामी अक़ीदा बताया गया है कि हुजूर अलैहिस्सलात वस्सलाम के लिए इल्म ग़ैब बिलवासिता कुल होगा या बाज़ कुल तो अक़लन मुहाल है और अगर बाज़ है ऐसा इल्म हर सबी(बच्चे)मजूनन(पागल)है वानात बहाइम (चोपायू) को भी हासिल है उसमें हुजूर अलैहिस्सलात वस्सलाम की किया तख़्दासीस है। नबी रहमत की लिलआलमीन पर भी कैंची चलाई गई और यह कहा गया कि वह आलमीन के लिए नहीं बल्कि मुसलमानों और मुसलमानों में वह लोग जो मुकल्लफ व इस्लाम हैं सिर्फ़ उन के लिए रहमत हैं अलगर्ज उन बातिल नज़रियात ने उन्नीसवीं सदी में इस्लाम का चेहरा बुरी तरह मसख़ कर के रख दिया उस सिरात मुस्तकीम पर बद अक़ीदगी की ऐसी दबीज़ चादर डाल दी गई कि इस्लाम का सही रास्ता किया है लोग तकरीबन भूल गये थे खुदा भला करे इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ कादरी का जिन्होंने जहद मुसलसल से इस राहे हक़ से बदअक़ीदगी की दबीज़ चादर को न सिर्फ़ हटाया बल्कि अकाइद व नज़रियात की तरदीद और बीख़ कुनी कर के इस सिराते मुस्तकीम को उम्म मुस्लिमा के इस्तेमाल के काबिल बनाया उनकी उसी मुजाहिदाना कारकुर्दगी की बुनियाद पर उन्हें इमाम अहले सुन्नत और उन के उस कारनामे को उन के लक़ब की मुनासिदत से "मसलके आला हज़रत" से ताबीर किया गया ठीक उसी तरह जिस तरह मौजूदा ज़माने में अगर किसी पुरानी ग़ैर इस्तेमाल सड़क को कई कौमी लीडर अपने सरकारी फ़न्ड से साफ़ सुथरा करा के इस्तेमाल के काबिल बना दे और फिर इस पर

अपने नाम का बोर्ड लगा दे ठीक यही हाल मसलके आला हज़रत का है जो दर असल सहाबा किराम,औलिया ऐज़ाम और उलमा-ए-जविलएहतिराम का मसलक है जिस की तजदीद इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा कादरी ने की और बाद के लोगों ने इस पर मसलके आला हज़रत का बोर्ड लगा दिया। मौजूदा दौर में मसलके आला हज़रत ही मसलक अरबाब हक़ की पहचान है हमें मसलक आला हज़रत को उसी तनाज़िर में देखने और समझने की ज़रूरीत है। (1)

इस तअल्लुक से मजीद तफ़सीलात का यह मक़ाला मुतहम्मल नहीं इसलिए उसी पर इक्तिफ़ा किया जा रहा है जो लोग मसलक आला हज़रत के तअल्लुक से किसी ग़लत फ़हमी या साज़िश के शिकारत हैं उन्हें ऐसी बयान बाज़ी सा ऐसी तहरीरों से एहतिराज़ करना चाहिए जो अरबाबे हक़ की दिल आज़ारी का बाइस बनें। बहर हाल इन तफ़सीलात से कतअे नज़र यह जानना ज़रूरी है कि जब लफ़्ज़ नज़दियत का इस्तेमाल इस दौर में किया जाता है तो इस सिलसिले में वहाबियत ग़ैर मुकल्लियत और दैवबन्दियत को शामिल मानते हैं और जब लफ़्ज़े बरेलियत का इस्तेमाल होता है तो इस से मुराद सिर्फ़ वही सुन्नी होते हैं जो आशिके रसूल,इमाम अहले सुन्नत हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ा कादरी अलैहिर्रहमा वरिज़वान के मसलक के पैर व कार हैं बाअल्फ़ाज़ दीगर बरेलवियों को ही "अहले सुन्नत व जमाअत" कहा जाता है दैबन्दी न तो अपने को सुन्नी कहलाना पसन्द करते हैं और न ही उन्हें इस लक़ब से पुकारा जाता है।

बरेलवियत और नज़दियत कहिए या बरेलवियत और दैबन्दियत इन दोनों जमाअतों में जो इख़िलाफ़ की शिददत

एक सदी कबल थी वह अब नहीं है सब कुछ हालात व जमाना के तकाजों के पेशे नजर हुआ है निस्फ सदी कबल उलमा-ए-हक व बातिल आये दिन मैदान मुनाजिरा में अकट्टे होते हैं और बगैर किसी नतीजे पर पहुँचे अपने अपने घरों को लूट जाते और फिर फतह मुबीन का एक कद आदम पोस्टर हर एक जमाअत की तरफ से दूसरे दिन दीवारों पर आदीजों हो जाया करता था यह सिलसिला सालहा साल चलता रहा अब हालात काफी बदल चुके हैं ऐसा लगता है कि फरीक मुखालिफ ने थक हार के सुपुर्द डाल दिये हैं।

इख्तिदा-ए-इस्लाम के मुसलमानों और उस दौर के मुसलमानों में इम्तिदाद जमाना के बाइस किरदार व अमल में कोई फर्क आ गया है। यह दोनों जमाअतें जो अपने को सवादे आजम कहती हैं उनके इख्तिलाफात में जो गलत फहमियों का कलीदी किरदार रहा है और ऐसा सिर्फ एक दूसरे से इज्तिनाब और दूरी इख्तियार करने के बाइस हुआ है इस गलत फहमी के सब से ज्यादा शिकार उलमा-ए-वहाबिया और सर बुराहान दियाबना और सिर्फ इसलिए कि उन्होंने ने मसलक अहले सुन्नत के तअल्लुक से इमाम अहले सुन्नत हजरत मौलाना शाह अहमद रजा खों कादरी अलेहिर्रहमा की तसानीफ का बुराहे रास्त मुतालअ नहीं किया या अगर किया है तो इल्मी होने के बाइस वह किताबें उन बे चारों की समझ में नहीं आई हैं। उलमा-ए-दैबन्द कहाँ कहाँ गलत फहमियों के शिकार हुये हैं ऐसी कई एक मिसालें हैं यहाँ सिर्फ दो एक मिसालों का जिक्र फाइदा से खाली न होगा।

यह बात अहले हक और साहिबाने फहम व फरासत पर मखफी नहीं कि उलमा-ए-दैबन्द ने उलमा-ए-अहले

सुन्नत व जमाअत को बरेलवी कह कर बदनाम करने की भर पुर कोशिश की और अवाम में यह तारसुर देने की कोशिश की कि यह इस्लाम में एक ऐसी नई जमाअत है जिस का इस्लाम से (मअजल्लाह) कोई तअल्लुक नहीं उन्होंने अपनी इस बात को भूले भाले अवाम के ज़हिन व दिमाग में बढाने के लिए न जाने कैसी कैसी मजमूम हरकतों की मगर यह हकीकत है कि आफताब हक व सदाकत पर पदी डाल कर उसकी किरनों को पाबन्द सलासुल नहीं किया जा सकता कुछ ऐसा ही मुआमला यहाँ भी पेश आया। उलमा-ए-अहले सुन्नत इस जुमले से बदनाम किया होते यह जुमला उनके हक में नेक शुगून साबित हुआ और अब बेहम्दिही तअाला यह जुमला (बरेलवी) उलमा हक यानी उलमा-ए-अहले सुन्नत के लिए अलामती निशान के तौर पर इस्तेमाल किया जाने लगा।

लफ्जे बरेलवियत के तअल्लुक से जब उलमा-ए-दैबन्द की यह मजमूम हरकत नाकाम हुई तो उन्होंने फिर खिसयानी बिल्ली खबा नोचे के बमिस्दाक उलमा-ए-अहले सुन्नत को बिदअती और कब्र परस्त कहना शुरू किया और बाज अपनी निदामत की बात न ला कर जमाअत अहले सुन्नत (बरेलवियों) को कादयानियों की तरह एक गुमराह फीका लिख बैठे बहर हाल आज उलमा-ए-दैबन्द उलमा-ए-अहले सुन्नत को बिदअती कहने में किया हिक्मत है यह बात आज तक मेरी समझ में न आ सकी और वह इस लिए कि उलमा-ए-अहले सुन्नत से कहीं ज्यादा उलमा-ए-दैबन्द गिरफतार हैं। इस वक्त मेरा मौजू यह नहीं वरना मेरे पास इन बिदआत की एक तवील फिहरिस्त है जिन की ईजाद का सेहरा खुद उलमा-ए-दैबन्द के सर बन्धता है मौका अगर इस का नहीं है लेकिन मौजू की

मुनासिबत से उलमा-ए-दैबन्द की ईजाम कदा कुछ बिदआत की तरफ एक हलका सा इशारा अपनी किताब तजकरा शैर बेशा-ए-अहले सुन्नत इजरत मौलाना मुहम्मद हशमत अली अलैहिर्रहमा वरिजवान के एक मुकद्दमा से— कर के गुजर जाना चाहता हूँ जिसे अल्लामा अरशदुल कादरी ने कल्म बन्द किया है ताकि इलजाम बगैर सन्द न रहे।

1- दफअे बला और कजा-ए-हाजत के नाम पर मदरसा की माली मनफअत के लिए खत्मे बुखारी का मुजिद कोई और नहीं बल्कि खुद दैबन्द का दारुलउलूम है।

2- नमाजे जनाजा के लिए इन्तजामी मसलिहत की बुनियाद पर नहीं बल्कि गलत ऐतिकाद की बुनियाद पर इहाता दारुलउलूम में एक जगह मखसूस करने की बिदअत का मौजिद कोई और नहीं बल्कि खुद दैबन्द का दारुलउलूम है।

3- मुस्लिम मैयत के कफन के लिए खुदर की शत लगाना और खुदर के बगैर नमाज जनाजा पढ़ने और पढ़ाने से इन्कार कर देने की बिदअत का मौजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद शैख दैबन्द मौलवी हुसैन अहमद हैं।

4- वरासत अम्बिया की सनद तकसीम करने के लिए एहतिमाम व तदाई के साथ सद साला इजलास मुन्अकिद करने और एक ना महरम व मुशिरक औरत को (मजहबी)स्टेज पर बुलाकर उसे कुर्सी पर बठाने और अपने मजहबी अकाबिर को उसके कदमों में जगह देने की बिदअत सख्ख्या का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद दैबन्द का दारुलउलूम है।

5- दीनी दर्स गाह के इहाते में मुशिरकाना अल्फाज पर मुश्तमिल कौमी तराने के लिए "कियाम तअजीमी" की बिदअत सख्ख्या का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद दैबन्द का

दारुलउलूम है।

6- कांग्रेसी उमीदवार का कामयाब बनाने के लिए इन्तिहाई जिद व जहद को मजहबी फरीजा समझने की बिदअत का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद शैख दारुलउलूम दैबन्द हैं।

7- अपने अकाबिर की मौत पर एहतिमाम व तदाई के साथ जलसा तअजियत मुन्अकिद करने और जलालत व अबातील पर मुश्तमिल मन्जूम मरसिया पढ़ने और पढ़ाने की बिदअत का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद दारुलउलूम दैबन्द हैं।

8- बिलइस्तिजाम किसी मुतअय्यन नमाज के बाद नमाजियों को रोक कर उनके सामने तब्लीगी निसाब की तिलावत करने की बिदअत का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद उलमा-ए-दैबन्द हैं।

9- कलिमा व तब्लीग के नाम पर चिल्ला और गश्त करने और कराने की बिदअत का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद उलमा-ए-दैबन्द हैं।

10- दारुलउलूम दैबन्द में सद्र जमहूरिया की आमद के मौके पर कौमी तराने के एहतियाम में खड़े होने का हुक्म सादिर करने वाले भी अकाबिरे दैबन्द हैं जो इस वक्त स्टैज पर मौजूद थे।

यह और उसी तरह के बे शुमार बिदआत व मुन्किरात हैं जिन की ईजाद का सेहरा उलमा-ए-दैबन्द के सर है लेकिन उसके बाजूद लोग इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रजा और उन के मुतबईन को बिदअती कहते हुये नहीं थकते, उन्हें चाहिए कि वह अपने गिरेबान में मुंह डाल कर सोचे फिर अपने बारे में फैसला करें कि उन पर किया शरई हुक्म लगना चाहिए।

उलमा-ए-दैबन्द और बहाबी उलमा दोनों बड़े शुद्ध व मद के साथ एक दूसरा अलफाज जो सुन्नी उलमा व अवाम दोनों के लिए इस्तेमाल करते हैं वह कब्र परस्त है उलटे चौर कोतवाल को डांटने का मुहाविरा पूरी तरह उलमा-ए-दैबन्द पर सादिक आता है और इसलिए कि कब्र परस्ती के मुजिद और मुरक्कब दोनों ही उलमा-ए-दैबन्द हैं। ख्वाजा हसन निजामी की शख्सियत से तकरीबन हर वह शख्स वाकिफ है जिसे उर्दू अदब से अदना भी तअल्लुक दुनिया-ए-अदब में मसबूर फितरत से शोहरत हासिल हुई बड़ी खुबियों के मालिक थे अगर्वे उनकी विलादत देहली में हुई लेकिन मजहबी तालीम के हुसूल के लिए उलमा-ए-दैबन्द की सर परस्ती हासिल की और कांघला जा कर मौलवी मुहम्मद इस्माईल कांघलवी, मौलवी मियाँ यहया कांघलवी के सामने जानवे तिलमिज तह किया गंगोह का भी आप ने तालीमी सफर किया और वहाँ ढेढ़ साल मसरूफियत तालीम रहे।

जाहिर है कि जिस की तालीम व तरबियत उलमा-ए-दैबन्द के जेरे साया हुई हो जब वहाँ से फारिगुत्तहसील हो कर मैदान अमल में आयेगा तो बिला शुबह नहीं खतूत पर वह काम करेगा जिन खुतूत पर उन की तरबियत हुई होगी। यही सब कुछ ख्वाजा हसन निजामी के साथ हुआ लेकिन चूंकि वह एक मुअज्जज खानकाह जहाँ हिन्दु व मुस्लिम सब जबीन अकीदत खम करते हैं सज्जादा नशी थे और खानकाहे आम तौर पर उलमा-ए-अहले सुन्नत की मीरास समझी जाती है इसलिए ख्वाजा हसन निजामी को भी अहले सुन्नत का एक फर्द समझा गया और वह सिर्फ इसलिए कि उन का तअल्लुक एक ऐसी खानकाह से था जो तकरीबन ऐसे

लोगों के कब्जा में है जो किसी मसलक के पीर नहीं उनका अपना एक जुदागाना मसलकी नुकता-ए-नजर है लेकिन ख्वाजा हसन निजामी की तालीम व तरबियत जुंकि उलमा-ए-दैबन्द में हुई इसलिए अफकार व नजरियात की गहरी छाप लाजमी थी। मसन्द सज्जागी को रौनक बरखाने ही उन्होंने मुख्तलिफ मैदानों में जिस तरह अपनी सलाहियतों और अफकार व नजरियात का मुजाहिरा किया उसे बयान करते हुये बदन के रंगुटे कांप उठते हैं उसकी तफसील किसी और मौका के लिए उठाकर रखता हूँ उनकी उसी फिक्री जौलीदगी का एक शाहकार कब्र परस्ती के तअल्लुक से मुरशिद को सज्जादा तअजीमी के जवाज और उसके लिए ठोस दलाइल की फराहमी भी है जब उन्होंने मुरशिद को सजदा-ए-ताजीमी के नाम से किताब लिख कर कब्रिस्तान को जाइज करार दे दिया उलमा-ए-हक के दरमियान इन्तिशार हुआ किसी तरह ख्वाजा हसन निजामी की वह तस्नीफ "मुरशिद को सजदा-ए-ताजीमी" इमाम अहले सुन्नत हजरत मौलाना अहमद रजा खॉ कादरी अलैहिर्रहमा वरिजवान तक पहुँची तो इस किताब के मुतालअ के बाद आप ने सिर्फ इजहार नाराजगी ही नहीं फरमाया बलिक सजदा-ए-ताजीमी की हुरमत "الزبدۃ الزكية لتحريم سجود التحية" के नाम से डाई सो सफहात पर मुश्तमिल एक मबसूत किताब लिख डाली और उसकी तरदीद में कुरआन व अहादीस और अकवाल-ए-आइम्मा की रौशनी में कब्र परस्ती की हुरमत पर सैंकड़ों दलाइल व बराहीन के अंबार लगा दिए।

यह इन्तिहाई तअज्जुब और हैरत का मकाम है कि जिस मसलक के पेशवा ने कब्र परस्ती की हुरमत में सैंकड़ों सफहात तहरीर कर डाले हों आज उसे और उस के

मुत्तबईन को उलमा-ए-दैबन्द जो खुद कब्रपरस्ती के मुजिद हैं कब्रपरस्ती कहते हुये नहीं थकते। यह वे चारे इतने ना समझ होते हैं कि जो चाहते हैं बक देते हैं हकीकत हाल का उन्हें इल्म नहीं होता और न यह बेचारे उसे जानने की कोशिश करते हैं अगर यह नाम निहाद उलमा इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रजा खॉ कादरी की किताबों का मुतालअ हक्कानियत व सदाकत की ऐनक लगा कर किए होते तो शायद उन गलत फहनियों के शिकार न होते।

कब्रपरस्ती के तअल्लुक से तवील मकाला बउनवान इमाम अहमद रजा और ख्वाजा हसन निजामी नजरिया सजदा ताजीमी का तकाबुली मुतालअ माहनामा जहान रजा लाहौर जिल्द 3 शुमारा 34 माह जिहिज्जा 1414 हिजरी जून 1994 ई में शाइअ हुआ तफसीली मालूमात के लिए इस का मुतालअ मुफीद होगा। यह मकाला और उसी तरह के दूसरे मकालात का मजमूआ इमाम अहमद रजा के अफकार व नजरियात एक तकाबुली मुतालअ के उनवान से जल्दी ही किताबी शक्ल में मन्जर आम पर आने वाला है।

उलमा-ए-दैबन्द की फिक्री जौलीदगी की एक बदतरिन मिसाल बरेलवियों को कादयानियों के मुशाबा करार देना है आज से तकरीबन 12 साल कब्ल मुजल्ला राबता आलम इस्लामी के शुमारा फरवरी मार्च 1985 ई में एक सीया नजर से गुजरा जिस में मुदीर राबता आलम इस्लामी ने बरेलियों को कादयानियों की तरह एक फिकी करार दिया था। राकिम ने जब उसकी इत्तिलाअ मरकज से शाय होने वाला माहनामा सुन्नी दुनिया के मुदीर को दी तो उस वकत अब्दुन्नईम अजीजी ने दिसम्बर 1985 के शुमारा में एक जबर दस्त इदारीया उसकी तरदीद में

लिखा।

“राबता आलम इस्लामी” बहाबिया दियाबना का मुश्तरिका मजहबी तर्जुमान है जो हर माह पा बन्दी से मक्का मुकर्रमा से शाय होता है। इस मजहबी तर्जुमान में उस किस्म की ला यानी बातों के छुपने की मुहरिक गालिबन एहसान इलाही जहीर की किताब “अलबरेलिया” है जो उस किस्म के हफ्वात व अबातील का पुलिन्दा है। बहर हाल इस नुमाइन्दा तर्जुमान में यह बात शाय हुई इस इशाअत के पीछे किसी हिन्दुस्तानी आलम ऐजेन्ट की साजिश कार फरमा है उस से हमें सरोकार नहीं लेकिन अगर हम इस की तह में जायें और इस मसअला पर सन्जीदगी से गौर करें तो आप यह बावर किए बगैर न रह सकेंगे कि कादयानियत का दरवाजा दर असल उलमा-ए-दैबन्द के सरखील दारुलउलूम दैबन्द के खुद साख्ता बानी मौलवी मुहम्मद कासिम नानौतवी का खुला हुआ है उन्होंने अपनी माया नाज तस्नीफ तहजिरुन्नास में खातिमुन्नबीईन की ऐसी तशरीह फरमाई जिस से कादयानियों को एलान नबुव्वत का मौका मिल गया और मौसूफ की जिस एबारत को उन्होंने बतौर ढाल इस्तेमाल किया वह उनकी किताब तहजिरुन्नास नाशिर कुतुब खाना इम्दादिया दैबन्द बा एहतिमाम मुहम्मद अली मालिक कुतुब मतबअ बरकी प्रेस दहली के स 24 पर इस तरह दर्ज है।

“अगर बिलफर्ज बाद जमाना नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम भी कोई नबी पैदा हुआ तो फिर भी खातमियत मुहम्मदी में कुछ फर्क न आयेगा चे जायेकि आप के मुआसिर किसी और जमीन में या फर्ज किजीए उसी जमीन में कोई और नबी तजवीज किया जाये। (4) कुरआन हकीम के किसी लफ्ज़ से न इशारत न

किनायतन और न सराहतन यह मालूम होता है कि अभी और कोई नबी आने वाला है कई जगह वाजेह लफ्जों में यह बयान मिलता है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सारे आलम के लिए कियामत तक के नबी हैं अब किसी नबी की जरूरत नहीं इस वाजेह एलान में कही किसी किस्म की तहरीफ की गुन्जाइश के सिवा यही ले दे कर माना खातिमुन्नबीईन बच रहा फिर यह बात समझ में आ गई कि उस के माना की ऐसी ताबीर व तशरीह की जाये कि दूसरे नबी की गुन्जाइश निकल जाये। चुनावि यह कारे खेर अंगरेजों या खुदा जाने किस की साजिश की बुनियाद पर मौलवी मुहम्मद कासिम नानोतवी ने अन्जाम दिया उन की उस तशरीह से कादियानियों में मसररत की लहर दौड़ गई एक कादयानी मुस्निफ अबूलअताया जालंधरी अपनी किताब इफादात कास्मिया में लिखता है।

“य महसूस होता चौदवी के सर पर आने वाला मुजदिद नबी और नबीह मौजूद भी था और उसके उम्मीती को नबुव्वत के मकाम से सर फराज किया जाने वाला था इसलिए अल्लाह तआला ने अपनी मस्लिहत खास से हजरत मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी को खातिमियत मुहम्मदिया के असल मफहूम की वजाहत के लिए रहनुमाई फरमाई और आप ने अपनी किताबों और अपने बयानात में आँ हजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के खातिमुन्नबीईन होने की निहायत दिलकश तशरीह फरमाई।

बहर हाल यह तशरीह चूंकि कादयानियों की हस्बे जरूरत थी इसलिए उन्होंने इस मौके को गनीमत समझा और 1891ई में मसीह मौजूद होने का दअवा पेश कर दिया

मौलाना अबूलहसन अली नदवी ने सीरतुलमहदी हिस्सा दौप के हवाले से लिखा है।

“मिरजा गुलाम अहमद साहब ने 1891 ई में मसीह मौजूद होने का दअवा किया फिर 1901ई में नबुव्वत का दअवा किया”

आज जो हिन्दुस्तान में उलमा-ए-दैबन्द तहरीक खत्मे नबुव्वत या कादयानियत के खिलाफ जलसे कर रहे हैं यह उसी दाग को धोने और अपने उसी संगीन जुर्म को छुपाने की नाकाम कोशिश है जो उन के अकाबिरीन कर गये हैं।

तेरहवी सदी के अवाइल में जब शाह इस्माईल देहलवी (1246 हिजरी) ने अंग्रेजों की साजिश से जनाब रिसालत मा अब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तअल्लुक से इम्कान नजीर की बहस छेड़ कर उम्मत मुहम्मदिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह तासिर देने की कोशिश की।

“इस शहिन्शा (खुलइज्जत) की यह शान है कि एक आन में एक हुक्म कुन से चाहे तो कड़ों नबी वली और जिन फिरस्ता जिब्राईल और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बराबर पैदा कर डालें”

शाह साहिब की इस फिक्र से जिस तरह इहानत मुतरशह थी उस का वन्दान शिकन जवाब बतले हरीत मुजाहिद आजादी अल्लामा फज़ले हक खौराबादी ने किताब “इम्तेनाए नजीर” लिख कर दिया और अक्ली व नक्ली दलाइल से अपने मुवक्कफ को मरबूत कर के फरमाया कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मिस्ल व नजीर मुस्तनअ बिज्जात हो और जो मुस्तनअ बिज्जात है वह तेहत कुदरत दाखिल नहीं। इम्तिनाअ नजीर

के नाम से अल्लामा फजले हक खैराबादी की किताब 1908 ई में खलीफा आला हजरत अहमद रजा खॉ कादरी हजरत मौलाना सुलैमान अशरफ अली गढ़ के तहशिया और तस्हीह के बाद जौनपुर से शाय हुई कुछ दिनों बाद इम्कान नजीर और इम्तनाअ नजीर से मुतअल्लिक बहसें वहीं रुक गये मरग बरसों बाद फिर मौलवी मुहम्मद कासिम नानोतवी को बैठे बठाये न जाने किया सोझी फिर वह इस बहस को खातिमुन्नीबीईन के पस मन्जर में छेड़ बैठे इस बहस से मौसूफ को किया और कितना फाइदा हुआ यह तो सेगा-ए- राज में है अलबत्ता इतना जरूर मालूम है कि उनकी उस फिक्र से एक गुमराह जमाअत जरूर वजूद में आ गई जिसे हम कादयानियत कहते हैं। लिहाजा अगर कादयानियत के मुहरिक अद्वल की हैसियत से "तहजीरुन्नास" किताब के मुसन्नफ मौलवी मुहम्मद कासिम नानौनी का नाम लिया जाये तो बेजा ना होगा। कादयानियत चुंकि इस वक़्त मौजूअ बहस नहीं इसलिये उस की तफसील में जाने से गुरेज कर रहा हूँ। अब आइये उन उलमा की खिदमत में हाजरी दीजिए जिन्हें उलमा-ए-दैबन्द कादयानियों की तरह एक गुमराह फिक्रा करार देते हैं इस जमाअत के सरखैल इमाम अहले सुन्नत हजरत मौलाना अहमद रजा खॉ कादरी कुददुस सिरूहु हैं उन के नोके कल्म से एक मोहतात रिवायत के मुताबिक पचासों उलूम व फनून पर मुश्तमिल छोटी, बड़ी हज़ारों किताबें मन्सा-ए-शहूद पर आयें अगर इन्साफ और हक पसन्दी की ऐनक लगा कर उन किताबों का मुताला किया जाये तो शायद ही किसी किताब में कोई ऐसी एबारत दस्तयाब हो सकेगी जिस से कादयानियों के गुमराह अकाइद की ताईद होती हो इस गुमराह और बातिल फिक्रा

की ताईद और हयायत में कोई एबारत मिलनी तो दरकिनार कोई लफ़्ज और जुमला भी नहीं मिल सकता है हॉ अलबत्ता उन्होंने इस बातिल फिक्रा की तरदीद में दर्ज किताबें जरूर लिखी हैं जो बिहम्दिही तआला मौजूद हैं। और मुतअदिद बार छप चुकी हैं। अब अगर यह कम इल्म दैबन्दी बेघारे उन किताबों का मुताला न करें और फिर इस मजहब हक के बारे में जो चाहें बातिल ख्याल गढ़ लें तो उसका किया एलाज है? कादयानियत की तरदीद में इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रजा कादरी की तस्नीफ़ात दर्ज जैल हैं जो किसी भी सुन्नी "मकतबा" से हासिल की जा सकती हैं।

१- السوء والعقاب على مسيح الكذاب

२- قهر الديان على مرتد بقاديان

३- الصارم الرباني على اسراف القادياني

४- جزاء الله عدوه بآياته ختم النبوة

५- الحراز الدياني

इस खुली हकीकत के बावजूद अगर कोई कहे बरेलवियत कादयानियत की तरह एक फिक्रा है तो इस की अंवल पर सिवाये मातम करने के और किया कहा जा सकता है। उसी को कहा जाता है कि "उलटे चौर कोतवाल को डालने"।

नज्दियों और दैबन्तियों के अकाइद उसी किस्म की हफ़वात व अबातील पर मुश्तमिल हैं "मुश्ते नमूना अज खरवारे" के तौर पर सतूर बाला में सिर्फ तीन मिसालों का जिक्र हुआ है। उलमा-ए-दैबन्द की इलज़ाम तराशियों और बुहतान तराजियों की तरदीद में उलमा-ए-अहले सुन्नत के नोक कल्म से सैकड़ों किताबें मुतअदिद जबानों में

मनसा-ए-शहूद पर आयें, जेरे नजर किताब "मिरातुन्नज्दिया" उसी किस्म की एक तस्नीफ है इस किताब की अहमियत इस लिए है कि यह किताब अरबी ज़बान में है और आज के मरजअ-ए-उलमा-ए-अहले सुन्नत, हजरत ताजुशरीआ काजीयुलकूज़ात, फकीहे-ए-इस्लाम अल्लामा अखतर रजा ख़ाँ अजहरी के सालेह अफकार, पाकीजा खियालात और मौमनाना नजरियात की रौशन शाहकार है।

इस किताब पर चुंकि मुसन्निफ का असल नाम "अल्लामा इस्माईल अलअजहरी" शाय हुआ है इसलिए जहिन इस तरफ जल्दो मुतबादिर नहीं होता कि यह आप की तस्नीफ है क्योंकि आप के उर्फ़ी नाम को इस कद शोहरत और मकबूलियत हासिल हुई कि लोग आप का असल नाम भूल गये। आप के वालिद माजिद का नाम इस्मे गिरामी चुंकि "इब्राहीम" था इसलिए आप का नाम इस्माईल से ज्यादा और कोई मौजों हो भी नहीं सकता था।

किताब मिरातुन्नज्दिया 25 / रबीउस्सानी 1410 हिजरी 25 / नोम्बर 1989ई. में तबअ हुई है अरबी ज़बान में मतबअ का जिक्र नहीं अलबत्ता इसकी पहली तबाअत दारुलइफता अलमरकज़िया महल्ला सौदागिरों बरेली शरीफ यूपी के जेरे एहतिमाम अमल में आई है।

आगाज़े किताब में मुसन्निफ ने कादयानियत से मुतअल्लिक अपने ऊपर लगाये गये इलज़ामात की तरदीद की है फिर उस तअल्लुक से अपने मौकिफ का इजहार किया है और दलाइल व बराहीन से यह साबित किया है कि बरेलवियत, कादयानियत की तरह एक गुमराह फिर्का नहीं बल्कि खुद दैवबन्दियत कादयानियत की तरह गुमराह जमाअत है और इसलिए कि, "मौलवी मुहम्मद कासिम नानोतवी ने "तहज़ीरुन्नास" में खातिमुन्नबईन की ऐसी

तशरीह फरमाई है जिस ने कादयानियों के रसूल की खातमियत को महफूज़ रखते हुये उन के बानी मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी को एलाने नबुव्वत का मौका फ़राहम किया और सुवूत के तौर पर यह लिखा है कि मिर्जा गुलाम कादिरबैग जो मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ के उस्ताद थे वह मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी के हकीकी भाई थे" हालांकि इन दोनों के दरमियान दूर का भी तअल्लुक नहीं था मिर्जा गुलाम कादिरबैग बरेली के रहने वाले थे आज भी उनका खानदान बरेली में मौजूद है। इसी खान्वादा के एक चशम व चिराग मिर्जा अब्दुलवहीद बैग (एडूकेट) थे। जिनका चन्द साल पेशतर इत्तिकाल हो गया उन से राकिमुस्सुतूर के इल्मी मरासिम थे कई बार उन के घर भी जाने का इत्तिफाक हुआ है मुसन्निफ ने इस इलज़ाम की तरदीद में लिखा है।

"قد كذب هذا الواشي فيما ادعى من ان غلام قادر بيك وبين غلام

احمد قادياني قرابة فضلا ان يكون هذا شقيق ذلك"

और जहाँ तक रही बात कादयानियों को अपने अकाइद व अफकार को इजहार करने का मौका फ़राहम करने की तो इस सिलसिले में मुसन्निफ किताब ने दलाइल व बराहीन की एक तवील फिहरिस्त पेश की है इस के बाद लिखा है।

"انه (امام الديوبندية المولوى محمد قاسم النانوتوى) هو

الذى مهد للقادياني المتنبي سبيله"

मसअला कादयानियत के एलावा नजर व नियाज़, करामत -ए-औलिया इस्तिआनत, तसख़ुर, हैयात बाद मुम्मात, और तसरूफात औलिया से मुतअल्लिक उलमा-ए-दैवबन्द के मुफ़सिद नजरियात और बातिल अफकार त खियालात को वयान कर के कुरआन व अहादीस और

अकवाल अइम्मा की रोशनी में उनकी तरदीद की है। और फिर अपने मौकफ की ताईद में किताब व सुन्नत से मुस्तहकम दलाइल पेश किए हैं।

चुंकि इस किस्म के मुबाहिस् से मुतअल्लिक उलमा-ए-अहले सुन्नत के पलैट फार्म से मुनाजिरा के मौजू से दिलचस्पी रखने वालों के रुशहात कल्म से कई एक किताबें मनस-ए-शुहूद पर आ चुकी हैं उन मुबाहिस् की तफसीली बहसे से यहा गुरेज किया जा रहा है, अलबत्ता एक मौजू पर मरातुन्नज्दिया में तफसीली बहस है और वह है सुन्नी और दैवबन्दी इख्तिलाफ के अस्बाब वजूह का मुसन्नफाना जाइजा, इस मौजू पर मुसन्निफ किताब ने कई सफहात में मुदल्लिल तफसीली गुप्तगु की है और उस की इब्तिदा-ए-तमाम इन्साफ पसन्द मुसन्निफीन की तरह शैख मुहम्मद इब्ने अब्दुलवहाब नजदी के गैर इस्लामी रविया से की है और लिखा है कि हिन्दुस्तान में यह मजहबी इख्तिलाफ अंग्रेजों की मुनज्जम साजिश के नतीजे में रून्मा हुआ है अंग्रेज चुंकि हिन्दुस्तान की सियासी, मुआशी, समाजी और मजहबी बुनियादों को मुतजलजल करना चाहते थे इसलिए अगर एक तरफ उन्होंने इस मुल्क में सियासी चालें चल कर मुल्क के अन्दरूनी निजाम को दिरहम बरहम किया तो दूसरी तरफ वह उलमा जो किसी ज़माना में उनकी हुक्मत में वजीफा खोर थे उन को एअतिमाद में ले कर मजहब के तअल्लुक से ऐसी नफरत की लहर फैलाई जिस वी पैलट में हिन्दुस्तानी उलमा के एलावा अवांम भी आ गये एक दूसरे के तैस यह मजहबी मुनाफिरत रोज अफजु बढ़ती रही जिस के नतीजे में अकीदा और एलाका की बुनियाद पर कई एक मजहबी, तन्जीम और जमाअतें वजूद में आ गये। वहाबियत

दैवबन्दियत, कादयानियत, नेचरियत और सुलह कुलियत वगैरा उसी दौर की पैदावार हैं।

वहाबियत की बुनियाद कि उसूलों पर रखी गई इस की वजाहत के लिए कई सफहात दरकार हैं मगर इस का एक वाजेह उसूल यह था कि मुसलमानों में से जो भी बसर व चशम उन के अकीदा को कबूल नहीं कर लेता था उनका माल व मताअ शैख मुहम्मद इब्ने अब्दुलवहाब के लिए हलाल होता उस्ताज़ जाफर सुहानी अपनी किताब "आईन वहाबियत" के स23 पर रकम तराजु हैं।

"शैख मुहम्मद अपने अकाइद को तस्लीम न करने वाले मुसलमानों पर न सिर्फ हमला कर के उन के माल व मताअ माल को लूटना जाइज ख्याल करता था बल्कि वह उन मुसलमानों से हासिल कर्दा माल व मताअ माल गनीमत से ताबीर करता था और उस माल गनीमत को इस्तेमाल करने का मुकम्मल इख्तियार सिर्फ शैख ही को हासिल था। (10)

जाहिर है कि शैख नज्द ने मुसलमानों के सामने तौहीद की जो तौजिह पेश की थी चुंकि वह मर गदत थी इस में उन के हवा व होस का अमल दखल ज़्यादा था। इस लिए आम मुसलमानों के नजदीक उसका काबिले कबूल होना मुम्किन न था इसी वजह से उन्हें जंगी काफिर करार दे कर उन की जान लेना और उन का माल लौटना हलाल व मुबाह समझा गया और शर व फसाद के नतीजे में कौम का जमाअतों में बट जाना और ढडा बन्दी इख्तियार कर लेना लाजमी अम्र था अगरचें इस किस्म की शुरुआत शैख नज्द ने कर दी थी लेकिन हिन्दुस्तान में शैख नज्दी की इस फिक्र को परवान चढ़ाने के लिए अंग्रेजों खान्दान वलियुल्लाह के एक चशम व चिराग मौलवी मुहम्मद इस्माईल दैहलवी का सहारा लिया इस फिक्र के फरोग के

सिलसिले में शाह इस्माईल के इन्तिखाब में हिकमत यह थी कि मौसूफ़ का तअल्लुक एक इल्मी खानवादे से था अंग्रेज यह समझते थे कि जो बात उनकी ज़बान से कहलवाई जायेगी कौम इस पर आमन्ना सदकना जरूर कहेंगी लेकिन तारीख़ ही रही है कि अहले हक़ कभी बातिल के सामने सरनिगों नहीं हुये हैं जैसे ही उन्होंने ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अज़मत को कम करने के लिए इमकान नज़ीर का तसव्वुर पेश किया तो उनके ही हमदर्स साथी अल्लामा फ़जले हक़ खैराबादी ने "इम्तेनाअ नज़ीर" किताब लिख कर उनका सहारा खान्दानी इल्मी तनतुना खाक में मिला दिया और बेबाग़ दहल इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रजा खान कादरी की ज़बान में यह फ़रमा दिया।

तेरे खुल्क को हक़ ने अजीम कहा
तेरी खुल्क को हक़ ने जमील कहा
कोई तुझ सा हुआ है न होगा शहा तरे
खालिके हुसुन अदा की कस्म

इस सिलसिले में थोड़ी सी गुप्तगु सुतूर बाला में गुजर चुकी है तफ़सीली मालूमात के लिए राकिमुस्सुतूर का मुकाला अल्लामा फ़जले हक़ खैराबादी और शाह इस्माईल देहलवी के बा हमी इख़िलाफ़ात का जाइज़ा का मुताला मुफ़ीद होगा। जो माहनामा हिजाज़ जदीद देहली के शुमार। जनवरी फरवरी 1991 ई में शाय हो चुका है।

मौलवी इस्माईल दैहवी ने अंग्रेजों के तआऊन से किसी तरह गिरोह साज़ी का फरीज़ा अन्जाम दिया इस सिलसिले में मौलाना अख़रत शाहजहाँपुरी का यह ख़ियाल काबिले तवज्जोह है फ़रमाते हैं।

"हकीकत यह है कि हिन्दुस्तान में फिकी साज़ी और

गिरोह बन्दी का संग बुनियाद अंग्रेजों ने अपनी ज़रूरत के तिहत मौलवी मुहम्मद इस्माईल दैहलवी से रखवाया क्योंकि मुकद्दस सर जमीन अरब में वहाबियत का फितना कामयाब साबित हो चुका था। मौसूफ़ शाह अब्दुलअजीज़ मुहदिदस दैहलवी (1239 हिजरी 1824 ई.) के भतीजे और शाह बलियुल्लाह मुहदिदस दैहलवी (1176 हिजरी 1762 ई.) के पोते थे। इस खान्दान आली शान की मुल्क के गोशे गोशे और बैरुने ममालिक में भी शोहरत थी।

अंग्रेजों ने इस आली शान खान्दान के चशम व चिराग़ शाह इस्माईल दैहलवी पर किस तरह डोर डाले और किस तरह उन्हें अपना हमनवा बनाया यह मसअला बहर हाल गौरतलब है चुकि यह सेगा राज की चीज़ थी इसलिए इस सिलसिले में हत्मी तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन करीन-ए-कियास यही है कि हज़रत शाह अब्दुलअजीज़ मुहदिदस दैहलवी के दामाद मौलवी अब्दुलहैय दैहलवी (1243 हिजरी) जो मेरेठ में ऐस्टइन्डिया कम्पनी के मुलाज़िम थे उन्हीं की मअरफ़त यह मुआमला पाया तकमील को पहुँचा होगा इस सिलसिले में सालसी का फरीज़ा किस ने अन्जाम दिया इस से बहस नहीं बहस यह है कि हवा वही जो अंग्रेज़ चाहते थे यानी शाह इस्माईल दैहलवी ने नया दीन राइज़ करने और बरतानवी मफ़ाद की खातिर जो जीने मरने का अहोद किया था इस पर साबित कदम रहे उनकी बाकी ज़िन्दगी इस पर शाहिद है।

मुसलमानों में इफ़ितराक़ व इन्तिशार पैदा करने के तअल्लुक से जब अंग्रेजों की गुप्तगु शाह इस्माईल दैहलवी से पक्की हो गई तो फिर शाह साहिब ने मुहम्मद इब्ने अब्दुलवहाब नज्दी की इस फ़िक्क़ की तरवीज़ की जिस में कलमा गो इंसानों का खून बहाना जाइज़ और हलाल था।

और तौहीद का वही मफहूम पेश किया जो उसने सर जमीन नज्द आले सऊद की हिमायत में किया था इस तरीके तब्लीग का हिन्दुस्तानी मुसलमानों पर किया असर हुआ खुश अफीदा मुसलमानों पर अया है उसे बयान करने की जरूरत नहीं, बुकि तरीका तब्लीग में शाह साहिब ने वही सारे उसूल अपनाये थे जिसे मुहम्मद अब्दुलवहाब नज्दी ने अपना कर आलम इस्लाम में अफरातफरी का माहूल पैदा किया था इसलिए हिन्दुस्तानी मुसलमानों के दरमियान इन्तिशार व इफतिराक का माहोल बन्ना लाजमी अम्र था। खान्दान के लोग मुखालिफ हो गये असातिजा ने वरहमी का इजहार किया, बुजुर्गों ने उस नज्दी अफीदे की नशर व इशाअत से बाज रहने की तलकीन फरमाई, मगर शाह साहिब धन के इतने पक्के थे उन्होंने अपने बड़ों में किसी की एक न मानी और जो कुछ अंग्रेजों से तै हुआ था वह सब कुछ कर दिखाया। इस से जब खान्दान के लोग नाराज हो गये असातिजा ने मुंह मौड़ लिया तो फिर शाह साहिब ने अपना मिशन किस तरह आगे बढ़ाया उस राज का इन्किशाफ कबीले के एक साहिब कलम मिर्जा हैरत दैहलवी ने उन लफ्जों में बयान किया है।

“आप ने सब से पहले चन्द बड़े बड़े बद मआशों के सरगनों को अपनी जादू भरी तकरीर सुना के मुरीद किया और उन्हें ऐसा मोअतकिद बनाया कि वह अपनी जान कुरबान करने पर आमामा हो गये मसलिहत उसी की मुतकाजी थी कि यह कारवाई की जाये क्योंकि दिन बदिन मुखालिफत की आग भड़कती जा रही थी।

यह भी वह कहानी जिस के सबब मुसलमानों में इन्तिशार हुआ और रपता रपता यह मिल्लत इस्लामिया धड़ाबन्दी की शिकार हो गई और जिस मुहम्मद इब्ने

अब्दुलवहाब नज्दी ने सऊद की मदद और उस की मुशारिकत से सर जमीन हिजाज में जहनी व फिक्री इन्तिशार बर्पा किया और जंग व जदाल के जरीआ लोगों के खून बहाये ठीक उसी तरह शाहइस्माईल दैहलवी ने सय्यद अहमद राय बरेलवी की मुशारिकत से जहनी व फिक्री इन्तिशार बर्पा कर के गिरोह बन्दी कराई और उन के मोअतकिद पर अमल न करने और सय्यद अहमद राय बरेलवी को अमीरुलमोमिनीन न मानने की सूरत में जिहाद का रुख सिखों की बजाये मुसलमानों की तरफ मौड़ दिया फिर किया हो इस की तफसीली शाह हुसैन गरदेजी की जुबानी सुनिये वह फरमाते हैं।

“अब सिखों को नजरे अन्दाज कर के मुसलमानों को मुसलमान बनाने की तहरीक शुरू हुई यहाँ से तफरीक बैनलमुस्लिमीन की इब्तिदा हुई मुसलमान सुन्नी वहाबी दो गिरोहों में तकसीम हो गये और मिल्लत इस्लामिया को ना कबले तलाफी नुकसान पहुँचाया

चुंकि तमाम जहनी व फिक्री इन्तिशार के मुजिद हिन्दुस्तान में शाह इस्माईल दैहलवी थे इसलिए मिरातुन्नज्दिया के मुसन्निफ हजरत ताजुशरीआ शैख इस्माईल अखतर रजा खौं अजहरी ने उस मौजू पर सीरे हासिल बहस फरमाई है और कुतुब का एक तिहाई हिस्सा उन्ही नाम निहाद शुयूखा की फिक्री बे राह रवी से मुतअल्लिक है इस फिक्री बे राह रवी के इन्सेदाद के लिए उलमा-ए-हक ने जो किताबें लिखी हैं उन की तादाद मिरातुन्नज्दिया के मुसन्निफ ने 42 बताई है। मुसन्निफ ने सिर्फ तादाद की वजाहत पर ही इक्तिफा नहीं किया बल्कि मुसन्निफीन के नामों के साथ किताबों की फिहिरस्त भी पेश की है और आखिर में यह लिखा है कि यह फिहिरस्त अभी

नाकिस है क्योंकि उस में हिन्द व पाक के एलावा और दूसरे ममालिक के उलमा की तसानीफ शामिल नहीं लिखते हैं।

”بهذا الفهرس يعلم القادری ما بلغت محمد بن عبد الوهاب من البشدة وكم قاومها الكرام (جزاهم الله تعالى خيرا) من كل ناحية على ان الفهرس لم يستوعب كل من رد عليه من العلماء العرب فضلا من الاعاجم فانه لم يشتمل من رد عليه من علماء الهند وباكستان وغيرهما من البلاد“

फिर मुसन्निफ ने हैरत व इस्तिअजाब का इजहार करते हुये लिखा है कि यह किस कद्र तअज्जुब की बात है कि उलमा-ए-अहले दैवबन्द मुहम्मद इब्न अब्दुलवहाब के मजहबी अफकार व खियालात की तरदीद भी करते हैं और उसके उस्ूलों को अपने लिए मजहबी रहनुमा खुतूत भी समझते हैं यहाँ चुंकि बहस का मौका नहीं इसलिए उसकी तफसील से गुरेज किया जा रहा है।

किताब के आखिर में वह तमाम मजहबी मसाइल जिस में उलमा-ए-अहले सुन्नत और दूसरी मुस्लिम जमाअतों के दरमियान इखिलाफ है उनकी वजाहत कर के उस के सुबूत में सलफ के अकवाल पेश किए हैं सुबूत में जिन उलमा की तहरीरे पेश की हैं उन की इल्मी अजमत और फिक्री जलालत पर तमाम मुसलमानों का इत्तिफाक है। उन उलमा-ए-एलाम के अकवाल को मुख्तलिफ फीह मसाइल के तअल्लुक से पेश कर के मुसन्निफ किताब ने यह बावर कराने की कोशिश की है कि उलमा-ए-अहले सुन्नत व जमाअत(बरेलवियत)अल्लाह तआला जल्ल जलालोहु पैगम्बर-ए-इस्लाम रसूले मकबूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और बुज्रगाने दीन रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के सिलसिले में जो अकीदा

रखते हैं वह कोई नया अकीदा नहीं बल्कि यही अकीदा तमाम अकाबिर उलमा-ए-अइम्मा किराम और असहाब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का था। और शेख नज्द मुहम्मद अब्दुल नज्दी के वजूद में आने से कबल शीओंके एलावा तमाम मुसलमानों के नज़रियात व खियालात मजहबी एअतिबार से तकरीबन एकसौं थे अगर कोई इखिलाफ था तो वह फिक्ही था जेरे बहस किताब में इस इखिलाफ की तारीख और उसके अस्बाब व वुजूह पर मुदल्लिल आलिमाना बहस है।

शैखुलइस्लाम ताजुशरीआ अल्लामा अखतर रजा अजहरी साहब किबला का यह अकदाम लाइक तहसीन ही नहीं बल्कि काबिले तकलीद है फाजिल बरेलवी हुज्जतुलइस्लाम वलमुस्मीन इमाम अहमद रजा कादरी की शख्सियत और उन के फिक्री खियालत को निशाना बना कर मुख्तलिफ़ीन व मुआनिदीन हम पर एअतिराज करते हैं अगर अकाइद के मौजूअ पर लिखी गई उन की ओर तसानीफ़ को दलाइल व बराहीन और मराजअ के साथ बाजाबता ऐडट कर के अरबी ज़बान में शाय की जाये और फिर उन्हें अरब दुनिया और खास तौर से वह ममालिक जहाँ उनके मुख्तलिफ़ीन की कसरत है इरसाल की जायें तो हमारे खियाल से वह नाम निहाद उलमा जो उन के हिन्दुस्तानी ऐजेन्ट हैं और हकाइक पर पर्दा डाल कर उलमा-ए-इफ़ के अकाइद की गलत तौजीह व ताबीर पेश करते हैं उनकी पर्दा दरी हो सकती है। मिरअतुन्नज्दिया की तबाअत में कदीम तरीका कार को अपनाया गया है इसलिए इस्तिफादा निस्बतन मुश्किल है अगर अवाइल किताब में मुदर्जात की फिहरिस्त और प्रेस रेलीज दी जाती और आवाखिर किताब में इशारा दे दिया जाता तो किताब की

इफादीयत दो बाला हो जाती। किताब के सुरूफ पर किताब का नाम "मिरअतुन्नज्दिया" छपा हुआ है लेकिन दरमियान किताब के सफहात के बालाई हिस्सा पर एक तरफ इमाम अहमद रजा अलबरेलवी और दूसरे सफहा पर वसाइसुलवहाबिया फिल हिन्द बलअर्व "मरकूम है जिस से किताब का असल नाम मशकूक हो जाता है। यह किताब गालिबन बदनाम जमाना मुसन्निफ एहसान इलाही जहीर (पाकिस्तान) की किताब अलबरेलविया के जवाब में लिखी गई है इसलिए इस किताब का असल नाम मिरअतुन्नज्दिया ही ज्यादा मुनासिब मालूम होता है।

मिरअतुन्नज्दिया किताब अपने मौजूअ के एअतिबार से भरपूर है इसकिबात में उन के तमाम अकाइद व खियालात की वजाहत है जिन पर उन का अमल है और किताब व सुन्नत से मुतसादिम हैं उन में दर्ज जैल मबाहिस अहम हैं।

१- الإمام احمد رضا يشهد التكبر على كل من انكر حتم النبوة و اهان منصب الرسالة

२- تاريخ نشأة الوهابية و افكارها الرائغة

३- محمد بن عبد الوهاب ينكر الاجماع و القياس

४- الوهابية يخالفون سلفيهم في كرامات الاولياء

इन मर्कजी मौजूआत के तहत कई एक जैली बहसे हैं जिन के जिमन में हुजूर ताजुशरीआ ने तमाम मबाहिस का इहाता कर लिया है इसलिए किताब मतुवस्सित साइज के 173 सफहात पर फैल गई है।

सफीना-ए-बख्शिश की फनी और अदबी झलक

मौलाना मुफ्ती शमशाद हुसैन रजवी, सदर मुदरिस शमसुल उलूम बदायूँ

सफीना-ए-बख्शिश अल्लामा मुहम्मद अखतर रजा अजहरी साहिब का मजमूआ नअत व मन्कबत है। इस मजमूआ पर गुप्तगू करने से पहले इस बात की वजाहत ज़रूरी है कि अल्लामा मौसूफ किन हैं और उनकी शख्सियत किन खुबियों की मालिक है। कुन अवामिल व जज़बात से मुतास्सिर हो कर उन्होंने ने नगमा सराई की है? तो आइये पहले उन की शख्सियत के बारे में थोड़ी सी मालूमात कर लें।

हज़ारत ताजुशरीआ साहिब किब्ला एक ऐसे खानवदा के फर्दे कामिल हैं जिन का खान्दान कई सदियों से इल्म व फन, तहकीक व तन्कीद, तहज़ीब व तमददुन के एअतिबार से आला मकाम रखता है। सय्यदी मौलाना नकी अली ख़ाँ, सय्यद इमाम अहमद रजा ख़ाँ, सय्यदी हुजूर मुफ्ती आजम, सय्यदी मौलाना हामिद रजा ख़ाँ, सय्यदी मौलाना इब्राहीम रजा ख़ाँ वगैरा इस खान्दान के वह ताबन्दा व दरख्शान्दा माह नजूम हैं जिन की पुरनुर किरनों ने मन्ज़िल हयात की निशान्दही और कौम व मिल्लत की सही कियादत की। उन बुजुर्गों की ज़िन्दगियाँ चाँदी की चाँदनी, फितरात शन्नम की तरह साफ़ और शफाफ थीं। इशक़ व महबूबत, खुलूस व वफा, प्यार और उलफत उन की ज़िन्दगी का अजीम सरमाया था। इल्मी मैदान में उन्होंने वह जो हर दिखलाये कि आज तक अरबाबे इल्म व दानिश तबका से मुतस्सिर हैं। नीज़ अपनी शविशतानों में उन्हीं के इल्म व फन का चिराग़ जलता हुआ देख रहे हैं। वह ऐसे गुलाब थे कि सालों गुज़र जाने के बावजूद उनकी खुशबू आज भी

महसूस की जा रही है। माहिरीन नफसियात इस बात पर इतिफाक कर चुके हैं कि जो बच्चा इस खानदान में पैदा होगा वह बहुत कुछ होगा। नई शान और नई आन दाला होगा। वरासत में इस बच्चा को बहुत कुछ मिलेगा जिन्हें वह, गैर शऊरी तौर पर महसूस करेगा। यह नो मुशाहिदा की बात है कि मछली के बच्चे को कोई तैरना नहीं सिखाता है। बल्कि पैदा होते ही वह फितरी तौर पर तीरने लगता है और समन्दर की सतह पर खेल कुद शरह कर देता है। मैं इस बात को यकीन के साथ कह सकता हूँ कि अल्लामा अजहरी मियाँ साहब किबला ने इस खानदान से वरासत में बहुत कुछ लिया है। बल्कि हिस्सा व अफराद लिया है। इल्म व फन, तहकीक व तन्कीद, तजजिया व तीजीह, खुलूस व प्यार, इशक व मोहब्बत, शौर व सुखन के फितरी रुजहानात और जबली मैलानात आप को वरासत में मिले हैं। इन फितरी रुजहानात को तरक्की देने और उन में इन्जलाती कैफियत बेदार करने में आप के जाती तजर्बात ने एक अहम रोल अदा किया है। घर से ले कर मदर्सा तक और मदर्सा से ले कर जामिअे अजहर मिन्न तक आप के तजर्बात फैले हुये हैं, तजर्बात की उस वुस्खत ने आप की शख्सियत में बे पनाह वुस्खत अता कर दी है, यह सिर्फ हुस्न अकीदत नहीं बल्कि एक ऐसा नजरिया है जो सिर्फ मेरा ही नहीं बल्कि तमाम अरबाबे इल्म व दानिश का है मैंने हज़रत अजहरी मियाँ के बारे में जो कुछ राये काइम की है। जो नजरिया पेश किया है। उनके किरदार व अमल से इस नजरिया की तौसीक हो चुकी है। अगर तबअ नाजुक पर बारगिरों महसूस न हो तो उस को पढ़िये।

जो तहरीर में कल्म बन्द करने जा रहा हूँ। वह मेरी आप बीती है। कोई सुन्नी सुनाई बात नहीं है बल्कि मेरा

तजर्बा है और बहुत ही करीब से मैंने उसका मुशाहिदा किया है जामिआ हमीदिया रजविया बनारस हिन्दुस्तान में एक मशहूर व मअरुफ इदारा है जो किसी तआरुफ का मोहताज नहीं। बल्कि वह आप रौशन है और कितनों को रौशन कर चुका है खास बात सिर्फ इस कदर है कि हुज़ूर शमसुलउलमा काजी शमसुद्दीन साहिब किबला जौनपुरी मुसन्निफ "कानून शरीअत" अपनी उम्र का ज़यादा तर हिस्सा इसी इदारा में गुज़ार चुके हैं। और असी दराज़ तक आप ही शैखुल हदीस रहे हैं। 1972 ई से ले कर 1981 ई तक उसी इदारा का तालिब इल्म रहा हूँ हज़रत शमसुलउलमा के दर्स व तदरीस में किया लुतफ व मजा था, किस तरह जौक व शौक मचलता था, दिल में किया किया कैफियात उम्रतरी और डूबती थीं। जिन को हम सिर्फ महसूस कर सकते हैं। अलफाज़ की रूरत में उनका कैफियात को पेश करना जुये शेर लाने के मुतरादिफ है। हज़रत काजी साहिब हज़रत मुफ्ती मुहम्मद यामीन साहिब, हज़रत मौलाना नज्मुद्दीन साहिब व दीगर असातिजा किराम के जरीआ में बरेली से मुतआरिफ हुआ। मगर तालिब इल्म का जहिन ही किया वे परवाह ला, अबाली में कोई नक्श अमरा और आन वाहिद में मिट गया।

हाये गियूरी दिल की अपने दाग किया है खुद सार ने

जो ही जिस के लिए जाता है उस से बे परवाह है दिल

हुस्ने इतिफाक कहिये एक दिन हम तमाम तालिबे इल्म हज़रत काजी साहिब के दर्स में मौजूद थे और हज़रत पढा रहे थे कि एक बुज़ुर्ग सिफत इंसान तशरीफ लाये काजी साहिब ने खड़े हो कर उनका इस्तिकबाल किया आप आने वाले को अपनी मस्नद पर बठाया और खुद मुअददब हो कर बैठ गये और तालिब इल्मों के जहिन व

दिमाग में किया तास्सुर उभरा? उसको मैं नहीं बता सकता। अलबत्ता मैं ने यह महसूस किया। काजी साहिब जैसी शख्सियत। अल्लाह अल्लाह उनकी इल्मी शान व शौकत का यह आलम था कि बड़े बड़े उन के सामने तिफल मकतब मालूम होते थे उनका इल्मी वकार मुस्लिम था। लेकिन आज किया हो गया कि इल्मी जाह व जलाल और फन्नी तमताराक नियाज मन्दी के सांचे में ढल गया है। अपने असातिजा में से किसी से मैंने दरयापत किया।

हजरत यह कौन है? उन्होंने जवाब दिया।

यह हजरत अजहरी मियाँ हैं उस वक़्त तक नाम तो सुना था मगर देखा नहीं था फिर हजरत अजहरी मियाँ साहब ने अर्बी जवान में एक मन्कबत पढ़ी। गालिबन यह मन्कबत हजरत मुजाहिदे मिल्लत की शान में लिखी गई थी पढ़ने का लव व लेहजा इस कदर दिल कश था। अल्फाज के ज़ेर व बम में ऐसी मौजूनियत थी कि नगमा व तरन्नुम का समौं छा गया हमारे तमाम असातिजा किराम इस मन्कबत से मुतास्सिर हुये और बुहत ज्यादा मुतास्सिर हुये यही से हजरत अजहरी मियाँ के इल्मी लियाकत का और बा कमाल सलाहियत का नक्श मेरे दिल में उभरता है।

1979 ई की बात है, मैं जमाअत राबिआ का तालिब इल्म था मदरसा हमीदिया रजविया बनारस के सालाना इम्तिहान के लिए हजरत अजहरी मियाँ साहिब तशरीफ लाये हुये थे। मिशकात शरीफ का अपने इम्तिहान लिया। मैं इम्तिहान देने वालों में शरीफ था लोगों का मेरे बारे में ख्याल था कि नाचीज़ तमाम तालिब इल्मों में बा सलाहियत है। खैर यह उनका हुस्न ज़न था।

हजरत अजहरी मियाँ साहिब किब्ला ने फरमाया कहीं से कोई हदीस पढ़ो, तमाम साथियों का इशारा पाते ही मैंने

वह हदीस पढ़ी जिस का मुताला मैं खास तौर पर कर के आया था। हदीस तो मैंने सही ऐराब के साथ पढ़ी और तर्जमा भी कर दिया। उस के बाद हजरत ने जो सवालात इस हदीस के मुतअल्लिक किए। यह यकीन जानिये मैंने यह महसूस किया। मैं अभी तक इल्म व फन से बे बहरा हूँ। इन दो वाकिआत ने मेरे ज़ेहन व दिमाग को इस तरह मुतास्सिर किया लेकिन तासिर की बुनियाद पर उनकी इल्मी सलाहियत के बारे में कोई राय काइम नहीं की जा सकती है। इस लिए कि तालिब इल्म और उसकी हैसियत ही किया ?

अभी चन्द साल कब्ल कि बात है हजरत मौलाना मदनी मियाँ अशरफ़ी साहब किब्ला ने टी वी पर दिखाई जाने वाले मुनाज़िर को मशरूत तौर पर जाइज करार दे दिया और स्क्रीन पर दिखाये जाने वाली तस्वीरों को मुतहरिक और गैर कार कह कर हुरमत वाली नस से मारा कर दिया। इस पर अल्लामा अजहरी मियाँ ने जो इरादात काइम किये हैं जिस अन्दाज से बहस की हैं इस से मालूम होता है कि आप इल्म व फन में इन्तिहा दर्जा की दस्तर्स रखते हैं आप की इल्मी काबिलियत और सलाहियत का लोहा तमाम अरबाब इल्म व फन से तस्लीम कर लिया है और मैंने टीवी के मुतअल्लिक लिखे गये तमाम तहरीरात को मुताला करने के बाद अपनी यह राय काइम की है कि हुज़ूर मुफ़ती-ए-आजम और इमाम अहमद रज़ा की तहरीरात की झलक आप के फतवा में मिलती है। वही शान व शौकत, वही आन बान और वही तमताराक जवान बुजुर्गों का था। वही आप की तहरीरों में नज़र आता है। शैर व सुख्न और अदबी जौक व शौक से भी अल्लामा अजहरी का वकार बलन्द है। बल्कि अगर यह कहा जाये तो कोई

वे जाना होगा कि शेर व शाइरी से आप को फितरी लगाओ है। शाइरी की तरफ यह फितरी रुजहान भी आप को बरासत में मिला है उस मैदान में आप ने किसी से भी बाजाबता इस्लाह नहीं ली है बल्कि दिल में उभरने वाले जज्बात व एहसासों अल्फाज के पैराये में ढलते गये हैं। आप की शाइरी दिल की शाइरी है। जज्बात की शाइरी है ऐसी शाइरी है जिस में खून जिगर शामिल है उनका दीवान जो सफीना-ए-बख्शिश से मोसूम है। मेरे सामने मौजूद है। इस का मैंने बिलइस्तिआब मुताला किया है। इस के एक एक शेर में कही तो जज्बात व कशश और दिलकश है जो दिल को मोह ले रही है। और कही जज्बात की हलकी सी आंच है जो रह रह के उठती है और जिन से मीठा मीठा दर्द पैदा होता है और कही जज्बात का ऐसा शौला उठता है कि दिल कबाब हो जाता है। और इस से उठने वाला धुँवा इश्क व मस्ती की खबर देता है ताजुशरीआ की शाइरी में फिक्र व तरखील की बुलन्द परवाजी अल्फाज की सहर कारी, कैफ आवर लब व लेहजा और सादगी भी बला की है। उन के कलाम में यह तिनो अनासिर इस बात की निशान्दही कर रहे हैं। अल्लामा मौसूफ ने इमाम अहमद रजा से रफअते खियाल मौलाना हसन बरेलवी से जोश व सादगी का इस्तिफादा किया है। आइये उनकी शाइरी से चन्द ऐसे इक़्तिबासात पेश करते हैं जिन से हमारे मजकूर दअवों की ताईद होती है।

1- रफअते खियाल: से मुराद वह कुव्वत है जो पहले से मौजूद तजर्बात, मुशहिदात और एहसासों के मा बैन ऐसी तरतीब करती है जो आम रविश से अलग हो और कारेईन को मुतास्सिर के जिस शाइरी में ख्याल जिस कद बुलन्द होगा। उसी कद उसकी शाइरी भी बुलन्द व बाला होगी।

जब हम इस मुक्ता-ए-नजर से हजरत ताजुशरीआ की शाइरी का तन्कीदी जाइजा लेते हैं तो महसूस होता है कि उन की शाइरी में ख्याल की बुलन्दी पाई जाती है। अशहब फिक्र की ऐसी परवाज नजर आती है कि दिल खुश हो जाता है। रफअत ख्याल इंसान का फितरी वसफ है और वह शिकम मादर से ले कर आता है। इस का इक्तिसाब नहीं किया जा सकता है। हाँ यह मुम्किन है कि इक्तिसाब से इस फितरी वसफ में अन्जुलाई कैफियत तो आ जाये लेकिन अज सरे नो इस का इक्तिसाब मुम्किन नहीं है। आइये और ताजुशरीआ की शाइरी में रफअत ख्याल की तलाश व जिस्तजु करें आप लिखते हैं।

वही जो रहमतुल्लिल आलमीन है जाने आलम है

बड़ा भाई कहे उनको कोई अंधा बसीरत का

हमारे शाइर को यह मालूम था कि सरकार अबदे करार सारी दुनिया की रहमत है और आलम की जान है गोया वह आलम और सारी काइनात को मर्कज है क्योंकि सारा आलम उन्हें के तुर्फेल में पैदा वार है। इस मालूमात में जदीद तरतीब दे कर यह ख्याल पेश किया है कि इस हैसियत को तरलीम कर लेने के बाद उन्हें भाई कहना किसी तरह जाइज नहीं क्यों कि यह एक मुत्तल्लमा उसूल है कि उन दो के मा बैन अखवत का रिशता होता है जब वह दोनों एक ही हैसियत रखते हों और यहाँ ऐसा नहीं है एक को तो मर्कजी हैसियत हासिल है और दूसरे को नहीं। जो भाई है वह मर्कज नहीं बन सकता और जो मर्कज है वह भाई नहीं उन दोनों के मा बैन तज़ाद की निस्वत से इस के बावजूद उन्हें भाई कहना अंधी बसीरत का नतीजा तो हो सकता है लेकिन बसीरत नहीं यह ख्याल किसी कद बुलन्द है और बुलन्द होने के साथ साथ इस में जो

लताफत, पाकीज़गी है वह बयान से बाहर है।

झुके न बार सदा हसों से क्यों बनाये फलक

तुम्हारे ज़र्रे के पर तो सितार हाये फलक

यह खाक कोचा-ए-जाना है जिस के बुसा को

न जाने कब से तरस्ते हैं दीदा हाये फलक

इन अशआर को पढ़िये और बार बार पढ़िये, इन में खियाल की जो रिफ़ात है, जो बलन्दी है वह काबिल सदरशक है। आम तौर पर यह खियाल किया जाता है कि आस्माँ सिर्फ़ इस लिए झुका हुआ मालूम होता है कि वह करवी शबल का है लेकिन हमारा महबूब शाइर उसकी तौजीह आम खियाल से हट कर कर रहे हैं फलक इसलिए झुका हुआ है कि उस पर मेरे सरकार के एक दो नहीं बल्कि सद एहसानात हैं। वह एहसान यह हैं कि सितार हाये फलक किया हैं। उनके ज़र्रे के पर तू हैं। गोया ज़र्रे असल हैं और सितारे साया हैं। और एक तस्लीम शुदा हकीकत है कि साया उधर ही झुकता है जिधर को उसकी असल शाय होती है। फलक के सितारे इसलिए जमीन की तरफ़ झुके हुये हैं कि वह खाक कोचा जानों का बोसा लेना चाहते हैं और न मालूम वह कब से उस बुसा के लिए तर्स रहे हैं। उसकी कोई इब्तिदा नहीं वे ऐनेही उस खियाल को इमाम अहमद रज़ा ने इस तरह पेश किया है।

वही तो अब तक छलक रहा है वही तो जोबन टपक रहा है

नहाने में जो मिरा था पानी कटोरे तारों ने भर लिए थे

ज़र्रे झड़कर तेरी पैजारों के

ताज सर बनते हैं सय्यारों के

बतौर नमूना मैंने चन्द अशआर पेश कर दिये हैं। ताजुशरीआ साहिब के दीवान में ऐसे बहुत से अशआर हैं जिन में बुलन्द से बुलन्द खियालात पेश की गये हैं, इन

अशआर को इस दीवान में तलाश कीजिए उसका बख़ूबी अन्दाज़ा हो जायेगा।

2- मुताला काइनात:

बकौल जामी शाइरी की तीन शर्तें हैं। तखील, मुताला काइनात और सादगी उन में से पहली शर्त का तज़करी कदरे तफ़सील के साथ हो चुका है। अब रही बात मुताला काइनात की। इस मैदान में भी वह किसी से कम नहीं। उन का जहिन निहायत ही वसीअ और खिला हुआ है। मौसूफ़ ने काइनात के एक एक ज़र्रे, गुल व बुलबुल, सर्द, क़मरी तबस्सुम, लताफ़त और पाकीज़गी का मुताला किया है। फिर खियाल की आमीज़िश से उस में मन्तकी तरतीब दी है जो निहायत ही फ़रहत अंगेज़ है और दिल में उतर जाने वाली है। नीज़ इस मुताला काइनात से जाना का जो तसव्वुर, जो खियाल पेश किया गया है वह बिल्कुल लतीफ़ तर है। आइये उसका भी जलवा देखते जायें।

वही तबस्सुम वही तरन्नुम वही निजाकत वही लताफ़त

वही हैं दजदीदा सी निगाहें कि जिन से शौखी टपक रही है

गुलों की खुशबू महर रही है दिलों की कलियाँ चटक रही हैं

निगाहे उठ उठ के झुक रही हैं एक बिजली चमक रही है

इन अशआर में मुताला काइनात की जो जलवा नुमाई है। उसे फ़रामूश नहीं किया जा सकता। इन मख़्तलिफ़ औसाफ़ से जो रुख ज़ेबा तैयार हो रहा है हुसन शौख़ या सूरत का रम्ज़ बयान किया गया है वह निहायत ही खूब सूरत का रम्ज़ बयान किया गया है। वह निहायत ही ख़ुब सूरत और अच्छूता है जो दिल को भा जाने वाला है।

3- सादगी

कलाम में शाइरी में सादगी का होना कोई ऐब नहीं है बल्कि यह भी एक किस्म की परकारी है और हजार तस्नअ व बनावट से बेहतर है। अल्फाज़ की तराश खराश में मजामीन को पैचीदा दर पैचीदा बना देना कोई दानिशमन्दी नहीं है। कभी कभी सादगी भी ज़ेवर का काम देती है।

तकल्लुफ़ से बुरी है हुस्न जाती

कबाये गुल में गुल बोटा कहाँ है

ताजुशरीआ ने कभी भी जज़बात के बयान में खियालात के पेश करने में किसी किस्म की बनावट और तस्नअ से काम नहीं लिया है बल्कि हलके फुलके अल्फाज़ में उन जज़बात व खियालात को पेश कर दिया है। जिस से उनकी शाइरी में जज़ब व कशिश लफ़्ज़ व रअनाई, शौखी बांकीन पैदा हो गया है। वह सादगी की जिस राह से गुजरते हैं तो फितरी तौर पर लोग एहसास करने लगते हैं कि इस ज़मीन में और हलके फुलके अल्फाज़ में शाइरी कोई मुश्किल नहीं मगर जब मैदान में उतरते हैं तो महसूस होता है वह सहल मुम्तनअ के मुमताज़ शाइर हैं कि उन की तकलीद उन के लब व लहजा की पैरवी और जौक व शौक का हुसूल इतना आसान नहीं है जितना कि वह समझते हैं।

तख़्त ज़री है न ताज़ शाह है

किया फकीराना बादशाही है

फकीर पर शान यह कि ज़ेरे नगी
माह से ले कर करता बमाही है

इक निगाह करम से भिट जाये
दिल पर अख़तर के जो सियाही है

शहिन्शाह दो आलम का करम है
मेरे दिल को मयस्सर उन का गम है

यहाँ काबू में दिल को अख़तर
यह दरबार शाह उम्म है

अहले दिल ही यहाँ नहीं कोई
किया करें हाल ज़ार की बातें

पी के जाम मोहब्बत जा नौ
अल्लाह अल्लाह खुमार की बातें

हर घड़ी वजद में रहे अख़तर
कीजिए इस दिया र की बातें

वाह किया सादगी है, किया खुलूस व पैयारा है।

अल्फाज़ हैं कि जो निहायत ही सहल और आसान हैं जिस से दिल बाग़ बाग़ हो रहा है। ज़हिन व दिमाग़ में कैफ़ व सरवर का आलम है। मैंने जिन उसूल तन्कीद के तहत इस मजमूआ नअत का जाइज़ा लिया है इस से यह अन्दाज़ा हो गया होगा कि ताजुशरीआ एक फन कार शाइर हैं। एक कामयाब और फिलबदीह गो शाइर हैं। लेकिन इस हकीकत का इन्किशाफ़ भी ज़रूरी है ताजुशरीआ ऐसे शाइरों और अदीबों में नहीं हैं जो शाइरी तो करते हैं अदबी तखलीक में हिस्सा लेते हैं मगर समाज मुआशिरा और इर्द गिर्द के हालात से नावाकिफ़ हैं लेकिन हमारे महबूब शाइर की समाजी हालात और इर्द गिर्द के माहोल से ला तअल्लुक़ नहीं। बल्कि अपनी तखलीक में वह ऐसा नुस्खा कीमया पेश करते हैं जिस से समाज की इस्लाह हो सकती है। वह समाज के उयूब पर तन्ज़ भी करते हैं लेकिन ऐसा तन्ज़ जो नशरत का भी काम करे और चुभने से दर्द का भी एहसास न हो। वह दुनिया के तौर तरीक़े पर जिस खुबसूरती से तन्ज़ करते हैं जिस अछूते पैराये में बयान करते हैं इस से

दिलकशी और रानाई का पहलू नुमाया होता है। वह फरमाते हैं।

कौन होता है मुसीबत में शरीक व हमदम

होश में आया नशा सा तुझे हर दम किया है

कैफ व मस्ती में यह मदहोश जमाना वाले

खाक जानें गम व आलाम का आलाम किया है

इन से उम्मीद वफा हाये तेरी नादानी

किया खबर उन को यह किरदार मुअज्जम किया है

वह जो हैं हम से गुरेजा तो बला से अपनी

जब यही तौर जहाँ है तो भला गम किया है

मीठी बातों पे न जा अहले जहाँ के अखतर

अक्ल को काम में ला गुफलत पैहम किया है।

शाइरी सिर्फ काफिया पैमाई का नाम नहीं है।

खुबसूरत अल्फाज और शौअला बदामों जुमलों के इस्तेमाल

का नाम नहीं है। बल्कि इस में हुस्न सूरत के साथ साथ

हुस्न मअना भी हो। ज़ियाए लफ्ज़ी के साथ साथ ज़ियाए

मअनवी भी हो। बड़े बड़े दानिशमन्दों, फलसफियों, मुदब्वरों

और मुफक्किरों ने शाइरी की अजमत का ऐतिराफ किया है

और उन अस्बाब की तलाश की है जिस से शाइरी में

अजमत बलन्दी और तरफअ पैदा होता है। मैं सिर्फ एक

फलसफी का कौल नक्ल कर रहा हूँ। लान जाती नस जो

एक बड़े फलसफी थे और उन्होंने अदब का खुले दिल से

ऐतिराफ किया है। उनके नजदीक पाँच ऐसे अस्बाब हैं जिन

से शाइरी में अजमत और तर्फा आता है। वह यह हैं।

1- ख्याल बुलन्द हो

2- सनअतों का इस्तेमाल हो

3- मेहनत और तवज्जोह से अल्फाज का इन्तिखाब

किया गया हो

4- जज़बात में ऐसी शिद्दत हो कि पढ़ने वाले के दिल में उतर जायें

5- लफ्ज़ों की तरतीब से हम आहिंगी जाहिर हो और नगमगी पैदा हो जो न सिर्फ कानों को भाती हो बल्कि जज़बात को भी बेदार करती हो।

किया यह तमाम अस्बाब अल्लामा अज़हरी की शाइरी में पाये जाते हैं इस सवाल का जवाब अमली तौर पर ही दिया जा सकता है। मैं इस सवाल के जवाब में कहूँ। हाँ। इस से बेहतर है कि उसका एक सरसरी जाइज़ा लेते चलें। ताकि उनकी शाइरी में अजमत के जो राज़ हाये सर बस्ता हैं वह तशत अज़बाम हो जायें इन पाँचों में से अव्वल यानी "ख्याला बलन्द हो" उसकी वज़ाहत हो चुकी है। मज़ीद इस पर गुप्तगु करना सई ला हासिल होगी।

अरबाबे इल्म व दानिश की नज़र में

मौलाना अहमद अली कादरी रज़वी, बांसा शरीफ़ ज़िला बाराबंकी

(1) हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द: अख़तर मियाँ अब घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिन की भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम इस काम को आन्जाम दो। मैं तुमहारे सुपुर्द करता हूँ।

लोगों से मुख़ातिब हो कर मुफ़्ती आज़म ने फ़रमाया:

“आप लोग अब अख़तर मियाँ सल्लमहु से रज़ूअ करें। उन्हीं को मेरा काइम मक़ाम और जानशीन जाने” (मुफ़्ती आज़म और उन के खुलफ़ा जि.1स:152)

(2) हुज़ूर कुतबे मदीना: हुज़ूर कुतबे मदीना अल्लामा मुफ़्ती ज़ियाउद्दीन रज़वी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं: मुझे मेरे मुरशिद हुज़ूर आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु से जो कुछ मिला उन के ख़ान्वादे के शहज़ादों मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ, मौलाना रैहान रज़ा ख़ाँ और मौलाना अख़तर रज़ा ख़ाँ को अता कर दिया। (सवानेह कुतब मदीना)

(3) हुज़ूर सय्यदुलउलमा: हुज़ूर सय्यदुल उलमा मुफ़्ती सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा बरकाती मारहरवी अलैहिर्रहमा ने (हुज़ूर ताजुशरीआ को) जमीअे सलासुल की इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमाई और दुआओं से नवाज़ा (मुफ़्ती आज़म और उन के खुलफ़ा स:162)

(4) हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत: एक साहिब की वालिदा हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत से मुरीद होना चाही तो आप ने फ़रमाया

मियाँ! सरकार आला हज़रत के शहज़ादे हज़रत अज़हरी मियाँ की मौजूदगी में ऐसा कैसा हो सकता है कि मैं मुरीद करूँ, उन्हें से मुरीद करवाइये”

दूसरी रिवायत है कि “हज़रत ने फ़रमाया कि मैं हज़रत अज़हरी मियाँ साहब के सामने से हो कर कैसे गुज़र सकता हूँ आख़ीर कार उकुबा दरवाजे से हज़रत अन्दर तशरीफ़ ले गये और फ़रमाते कि कोई तेज़ आवाज़ में न बोले कि हज़रत अज़हरी मियाँ तशरीफ़ फ़रमा है। आहिस्ता बोलो शहज़ादे कियाम फ़रमा हैं” (रावी मौलाना अब्दुलमुस्तफ़ा हशमती, रदोली शरीफ़)

(5) काज़ी शमसुलउलमा: एक दिन हम तमाम तालिब हज़रत काज़ी (काज़ी शमसुलउलमा अल्लामा शमसुद्दीन रज़वी, जौनपुरी, तिलमीज़ हुज़ूर सदरुशरीअ अलैहिर्मुर्हमा) साहब के दर्स में मौजूद थे और हज़रत पढ़ा रहे थे। एक बुजुर्ग सिफ़त इंसान तशरीफ़ लाये। काज़ी साहब ने खड़े हो कर उन का इस्तिकबाल किया आने वाले को अपनी मसनद पर बठाया और खुद मुअद्दब हो कर बैठ गये और तालिब इल्मों के ज़हिन व दिमाग़ में किया तारसुर उभरा? उसको मैं नहीं बता सकता। अलबत्ता मैंने महसूस किया। काज़ी साहिब जैसी शख़्सियत। अल्लाह अल्लाह उनकी इल्मी शान व शौकत का यह आलम था कि बड़े बड़े उन के सामने तफ़ल मक़तब मालूम होते थे अपने असातिज़ा में से किसी से मैंने दरयाफ़्त किया, हज़रत कौन हैं फ़रमाया यह हज़रत अज़हरी मियाँ किबला हैं। (रावी मौलाना शमशाद हुसैन रज़वी बदायूँ)

(6) हुजूर अहसनुल उलमा :14/15/नोम्बर 1984 ई. को मारहरा मुत्तहरा में उर्स कास्मी की तकरीब में हजरत अहसनुल उलमा मौलाना मुफ्ती सय्यद हसन हैदर मियों बरकाती सज्जादा नशीन, खान्काह बरकातिया मारहरा (अलैहिरहमा) ने जानशीन-ए-मुफ्ती आजम का इस्तिफ़ाल काइम मकाम मुफ्ती आजम अल्लामा अजहरी जिन्दाबाद के नअरा से किया और मजमा कसीर में उलमा व मशाइख और फूज़लाव दानिशवरों की मौजूदगी में जानशीन मुफ्ती-ए-आजम को यह कह कर।

“फकीर आस्ताना आलिया कादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से काइम मकाम मुफ्ती आजम अल्लामा अखतर रजा खों साहिब को सिलसिला-ए-कादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम खिलाफत व इजाजत से माज़ून व मजाज़ करता हूँ। पूरा मजमा सुन ले तमाम बरकाती भाई सुन लें और यह उलमा-ए-किराम (जो उर्स में मौजूद हैं) इस बात के गवाह रहें।” (मुफ्ती आजम और उन के खुलफा अज़ मौलाना शहाबुद्दीन रजवी)

(7) हुजूर मुफस्सिर-ए-आजम हिन्द: डाक्टर अब्दुलनईम अज़ीजी लिखते हैं: “वालिद माजिद मुफस्सिर-ए-आजम हिन्द ने अपने फरज़न्द अरज़मन्द को कबले फरागत इल्म आला हजरत इमाम अहमद रजा का जानशीन बनाया एक तहरीर भी ऐनायत फरमाई।”

हजरत रहमानी मिया अलैहिरहमा माहनामा आला हजरत में बेउनवान कवाइफ दारुलउलूम में तहरीर फरमाते

हैं “बवजहे अलालत (वालिद माजिद) यह तबक़अ नहीं कि अब ज़्यादा जिन्दगी हो बिना बरी ज़रूरत थी कि दूसरा काइम मकाम हो। लिहाज़ा अखतर रजा सल्लमहु को काइम मकाम, व जानशीन आला हजरत बना दिया गया, जानशीन का अमामा बांधा गया और अवा पहनाई गई।

(8) अल्लामा तहसीन रजा खान: अलहम्दु लिल्लाह कि हजरत अल्लामा अजहरी मियों सल्लामा ने बावजूद गोना गों मसरूफ़ियात और अलालत तबअ इस का तर्जमा (मोअतकिद) फरमाया ताकि उसका फाइदा आम हो जाये। उस का बिलइस्तिआब मुताला तो मैं न कर सका मगर जस्ता जस्ता जिन मकामात को मैंने देखा उन से बड़ी खुशी हुई कि बहुत सलीस और बिलमुहावरा तर्जमा किया है। (अल मोअतकिद स-38)

(9) शारेह बुखारी: हजरत मुफ्ती मुहम्मद शरीफूल हक अमजदी साबिक सदर शौअबा अलजामिआतुल अशरफिया मुबारक पुर जिला आजम गढ़ जो तकरीबन ग्यारह साल तक बरेली शरीफ में हुजूर मुफ्ती-ए-आजम हिन्द की सर परस्ती में फतावा लिखते रहे और जिन्हें मुफ्ती आजम की उम्र ही में नाइब मुफ्ती आजम कहा और लिखा जाता रहा उन की जबानी राकिमुस्सुतूर ने कई बार उन का यह तासिर सुना कि “हजरत मुफ्ती आजम हिन्द को अपनी जिन्दगी के आखिरी पच्चीस सालों में जो मकबूलियत व हर दिल अज़ीजी हासिल हुई वह आप के विसाल के बाद अजहरी मियों को बड़ी तेजी के साथ इब्तिदाई सालों ही में हासिल हो गई और बहुत जल्द लोगों के दिलों में अजहरी

- मियों ने अपनी जगह बना ली (अल्लामा यासीन अखतर मिसवाही)
- (10) अल्लामा अरशदुलकादरी: अल्लाह तआला ने हुजूर अजहरी मियों को जबर दस्त मकबूलियत दी है। ऐसी मकबूलियत तो देखने में न आई। देखो तो सही कि अजहरी मियों को मुखलिफ जगह प्रोग्राम में जाना था रॉची ऐयरपोर्ट पर उतरे फिर बजरीआ कार फलों जगह पहुँचना था मगर रॉची में उन से मिलने के लिए हजारों मुश्ताकों की भीड़ जमा हो गई थी। जब कि रान्ची में रुकना न था। सिर्फ वहाँ गुजरना था। मगर आनन फानन इतने लोगों का इकठ्ठा हो जाना बड़ी बात है। मालूम होता है कि कोई दूसरी मखलूक लोगों के कानों तक बात पहुँचा देती है और आनन फानन सब जमा हो जाते हैं। (रावी मुफ्ती आबिद हुसैन नूरी-टाटा)
- (11) अल्लामा मुहम्मद मुशाहिद रजा खाँ हशमती: फकीर हकीर ने किताब बनाम "टाई का मसअला" (मुसन्निफा अल्लामा अखतर रजा खाँ कादरी मद जुल्लाहुलआली) बगौर व खौज मुताला किया अपने दलाइल के लिहाज से वह फतावा (अल्लामा अजहरी मियों साहब किबला का फतवा "टाई का मसअला") किसी की तस्दीक का मोहताज नहीं है। फिर भी इम्तिसाल अम्र के लिए फकीर तस्दीक करता है। (टाई का मसअला)
- (12) अल्लामा ख्वाजा मुजफ्फर हुसैन रजवी: हजरत ताजुशरीआ ने उन अहम मुवाहिस् का सलीस उर्दू जवान में ऐसा बर जस्ता तर्जमा (अलमोअतकिदुल मुन्ताकिद) फरमाया

- है कि तर्जमा ही से मफहूम वाजेह हो जाता है उसके बावजूद जा बजा पेचीदा मसाइल की ऐसी अकदा कुशाई की है कि वे इख्तियार जुबान से निकल पड़ता है कि यह आला हजरत और मुफ्ती-ए-आजम के फैज से ताजुशरीआ ही का खास्सा है। (अलमोअतकिद स:46)
- (13) अल्लामा अब्दुलहकीम शर्फ कादरी: हुजूर ताजुशरीआ से हजरत के रवाबित बहुत गहरे थे सफर पाकिस्तान के मौका पर वालिद गिरामी अलैहिर्रहमा से मसाइल शरइया पर सन्जीदा माहोल में गुप्तगु हुआ करती थी हजरत वालिद माजिद कुददुस सिरुहु हुजूर ताजुशरीआ के इल्म व फजल, फिक्ही बसीरत और हदीस दानी के मोअतरिफ थे। (बरिवायत डाक्टर मुन्ताज सदोदी)
- (14) मुफ्ती-ए-आजम राजिस्थान: अल्लाह रब्बुल इज्जत ने हजरत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा कादरी अजहरी मद जुल्लाहुल आली को वे शुमार फजाइल और मुनाकिब जलीला से नवाजा है मैं आप के इल्म व फजल हज्म व इत्का, तस्नीफी, फिक्ही तब्लीगी खिदमात से बहुत मुतास्सिर हूँ इस वक्त आप मरज-ए-उलमा व फुक्हा व मुफितयाने ऐजाम हैं अरबी अदब में आप हुजूर हुज्जतुलइस्लाम हजरत अल्लामा अश्शाह मुफ्ती हामिद रजा कादरी अलैहिर्रहमा के परतू हैं नीज हुजूर सय्यदिना आला हजरत इमाम अहमद रजा कादरी बरेलवी का आप पर खुसूसी फैजान है जिस की वाजेह नजीर यह है कि एशया यूरोप की बलन्द आहिंग चोटियों पर आप की अजमतों के

परचम लहरा रहे हैं। और आप की इल्मी जलालत व शख्सी वजाहत के आगे बड़े बड़ों के सरे खम नज़र आते हैं। (मुआरिफ़ मुपती आजम राजिस्थान स:383)

(15) अल्लामा फ़ैज़ अहमद ववैसी:हज़रत ताजुशरीआ ने अलमोअतकद और अलमुस्तनद का तर्जमा फरमाया फकीर ने सआदत समझ कर किताब मज़कूर का मुताला किया। उस से फकीर इल्मी तौर पर खुब मुस्तफीद हुआ। फकीर यकीन और निहायत वसूक से अर्ज करता है कि अवाम के लिए तो अकाइद के मुआमलात में बिला शुबह यह तर्जमा शरीफ़ रहबर व हादी है लेकिन उलमा-ए-किराम के लिए भी बेहतरीन दस्तावीज़ है। (अलमोअतकिद स:52)

(16) मुपती अब्दुल्लतीफ़ गौजरानोला:फकीर ने किताब मुस्तताब का उर्दू तर्जमा कही कही से मुलाहिजा किया अलहम्दु लिल्लाह जानशीन मुपती आजम हिन्द ताजुशरीआ हज़रतुल अल्लाम मुपती मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ कादरी मद जुल्लाहुल आली ने बड़ी अर्क रेज़ी से यह तर्जमा फरमाया है।

यकीनन हुज़ूर ताजुशरीआ मदजुल्लाहुलआली हर हवाले से अपने आबा व अजदाद के सच्चे जानशीन हैं। अल्लाह तआला उन का साया अहले सुन्नत पर दराज़ फरमाये। (अलमोअतकिद स:66)

(17) अल्लामा अब्दुल्लाह ख़ाँ अज़ीज़ी: हज़रत अल्लामा व मौलाना मुपती मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ साहिब कबला मदजिल्लाहुलआली,जानशीन हुज़ूर मुपती-ए-आजम हिन्द

अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान के रिसाले मुबारका मुस्तमात(टाई का मसअला)पाके मुताला का शर्फ़ हासिल हुआ। हुज़ूर मुपती आजम हिन्द के फतवा और हज़रत मुसन्निफ़ अल्लामा के दलाइल व बराहीन से अहक़र को इन्शिराह सद्र हासिल हुआ कि टाई का इस्तेमाल करना नाजाइज़ व हराम है। मुसलमानों को उस से एहतियाज़ करना चाहिए। (टाई का मसअला 41)

(18) मौलाना सय्यद वेवैस मुस्तफ़ा वास्ती: फकीर कादरी को जानशीन मुपती आजम हिन्द हज़रत ताजुशरीआ अल्लामा अजहरी मियाँ साहब से बारहा मुलाकात का शर्फ़ हासिल होता रहता है यह मुलाकात और राबते देरीना तअल्लकुस के बाइस हैं जो ख़ान्काह बलगिराम और ख़ान्काह बरेली में हमेशा से रहा है।

मौसूफ़ को ख़ानवादा-ए-रज़वियत में वह मक़ाम हासिल है कि ताजुशरीआ और कीज़ियुलकुज़्ज़ात जैसे आला खिताब से याद किए जाते हैं। (अलमोअतकिद स:43)

(19) अल्लामा अबुन्नसर ख़लीफ़ा कुतब मदीना:हज़रत अल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ साहिब ख़ान्दान आला हज़रत के फ़ाज़िल मुहविकक हैं जिन के फ़ैज़ान से एक ज़माना मुस्तफीद व मुस्तफीज़ हो रहा है अब अहले सुन्नत का यह फरीज़ा है कि वह इस किताब(अलमोअतकद)का मुताला कर के उसे दूसरों तक पहुँचाने की कोशिश करें। (अलमोअतकद स:55)

(20) मुपती नईम अख़तर नक्शबन्दी लाहूरी: हुज़ूर मुपती अख़तर रज़ा साहब को इल्मी मक़ाम का किया कहना इस

किताब(अलमोअतकद)के बारे में सिर्फ इतना ही कहूँगा कि यह किताब हजरत के अर्बी अदब पर महारत की दलील है। और यह किताब साबित करती है कि आप वाकई जानशीन -ए-मुफ्ती-ए-आजम हिन्द हैं(अलमोअतकद स.58)

(21) अल्लामा सय्यद अलवी मालिकी: जानशीन-ए-मुफ्ती -ए-आजम अल्लामा मुहम्मद अखतर रजा खा अजहरी कादरी बरेलवी दामत बरकातुहुमुलकदरिया 1407 हिजरी 1988ई. में जब हज व जियारत के लिए तशरीफ ले गये तो अल्लामा सय्यद मुहम्मद अलवी मालिकी ने अपनी तस्नीफ कर्दा किताबें एनायत फरमाये और बहुत ही कद्र व मन्जिलत की नज़र से देखा इमाम अहमद रजा कादरी बरेलवी के पोते होने की हैसियत से और हुज़ूर मुफ्ती-ए-आजम कुददुस सिरुहु के जानशीन की वजह से बहुत इज्जत अफजाई फरमाई और दुआइया कलिमात से नवाजा (मुफ्ती आजम और उनके खुलफा स517)

(22) प्रोफ़ीसर मसऊद अहमद मजहरी : (इमाम अहमद रजा)के जानशीन उन के पर पोते अल्लामा अखतर रजा ख़ाँ अजहरी हैं, बड़े मुत्तकी और आलिमे बा अमल 1983 ई में पाकिस्तान तशरीफ लाये। अज़ राह करम गरीब खाने पर ठठ भी तशरीफ लाये, एक अरबी नअत की फरमाईश की। कलम बरदाशता उसी वक़्त लिख दी, उस से अन्दाज़ा होता है अरबी ज़बान ने इमाम अहमद रजा के घराने में घर कर रखा है, यह उसी घराने का इम्तियाज़ ख़ास है। (उजाला स:26)

(23) शेख अबूबक्र कादरी (केरला): समाहतुलमुफ्ती हजरत

अल्लामा शेख मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा ख़ाँ कादरी अलअजहरी साहिब मुतअनल्लाह बतौल हयातिलमुबारका की शख्सियत आलमे इस्लाम में मरकज़ी हैसियत रखती है आप इमाम अहले सुन्नत मुजदिददे आजम की मसनद के सच्चे जानशीन और काबिले एअतिमाद मुफ्ती हैं। आप ने जामिअतुर्रजा बरेली शरीफ काइम कर के अहले सुन्नत पर एहसाने आजीम फरमाया है। (इवितबास तकरीर इमाम अहमद रजा काफ़्रेस बमौका उर्स रजवी)

(24) अल्लामा मुहम्मद गुफ़रान सिद्दीकी (अमरीका): फकीर हकीर गफ़रलहु आज आस्ताना-ए-आलिया रजविया हाज़िर हुआ तो हुज़ूर जानशीन सरकार मुफ्ती आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर ताजुशरीआ काज़ियुकुज़्जात हजरत अल्लामा अजहरी मियौ साहब दानत बरकातुहुमुलआलिया की कदम बोसी नसीब हुई। सरकार मददजुल्लाहुलआली ने फतावा टाई के मुतअल्लिक अता फरमाया हकीकत यह है कि हजरत ने (GROLIER ENCYLPEDIA) की असल फोटो स्टेट कापी दे कर अहले इस्लाम पर हुज्जत काइम कर दी है और फिर शरई हैसियत से जो हुक्म फरमाया है वह आप का ही हिस्सा है। मौला करीम अहले इस्लाम को अपना जाहिर और बातिन अपनी सरोकारों की तरह बनाने की तौफ़ीक़ व हिम्मत अता फरमाये। (टाई का मसअला 36)

(25) मुफ्ती मुजीब अशरफ़ रज़वी: हजरत वाला मरतबत जानशीन हुज़ूर मुफ्ती आजम हिन्द ताजुशरीआ काज़ियुकुज़्जात अल्लामा, मौलाना अखतर रजा साहिब किल्ला का तहकीकी जवाब टाई के अदम जवाज़ के बारे में नज़र से गुजरा जो बिला शुबह हक़ व सवाब और दलाइल शरइया से नुबरहन है। (टाई का मसअला स42)

(26) अल्लामा बदरुल्लाह कादरी: हालैन्ड: हालैन्ड और बलीजीम के अन्दर सिलसिला रजविया की इशाअत हो रही है। कई खानवादों को बरेली शरीफ भेज कर दाखिल सिलसिला कराया गया है। बाज लोगों ने हरमैन तथ्यबैन की सर जमीन पर जानशीन मुफ्ती आजम हजरत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अखरत रजा खाँ कादरी दामत बरकातुहुमुल आलिया के दामन से वाबस्तगी हासिल की है और एक बार के सफर हालैन्ड के दौरान हजरत जानशीन मुफ्ती-ए-आजम ने 'कादरियत रजवियत' के अन्वार से उस खित्ता तारीक को खुद रौनक भी बखशी है।

रहे यह जारी कियामत तक उन का फ़ैज़ आम

जहाँ में फूले फले बाग रजवी नूरी (बदर)

(ताजदारे अहले सुन्नत स225)

अख़तरे कामिल है दोस्तो

फल्के रजा अख़तर कामिल है दोस्तो

किस दर्जा पुर ज़िया है अख़तर रजा की जात

जिस तरह बे मिसाल है अख़तर रजा की जात

इस तरह बा कमाल है अख़तर रजा की बात

चुप रह रकीब रु सियाह बद ख्वाह बद नसीब

सोने के मोल तल्ली है आखिर कहीं यह धात

नगमा रजा का गोंजे क्योंकर न घर में

फ़िक्र रजा की बीन है अख़तर रजा की बात

अदआ-ए-शेर न इरफ़ान शाइरी

कहदी वफूरे इश्क में अख़तर रजा की बात

अज़ : मौलाना इरफ़ान मशहदी(इंग्लैन्ड)

हैं वह शेर रजा शाह अखतर रजा

नाइवे मुस्तफा शाह अखतर रजा
 जिल्ले गोसुलवरा शाह अखतर रजा
 जिस से मिलती हमको बराबर जिया
 है वह रौशन दिया शाह अखतर रजा
 वारिस व आशना-ए-उलूमे रजा
 रब ने तुमको किया शाह अखतर रजा
 गुस्ले काबा में शिरकत हुई आप की
 वाह वा मरहबा शाह अखतर रजा
 देखते ही जिसे भागते हैं अदू
 हैं वह शेर रजा शाह अखतर रजा
 शर्क में गर्व में जिस तरफ देखिये
 नाम है आपका शाह अखतर रजा
 सब के दिल की कली खिल उठी
 पहुँचे हैं जिस जगह शाह अखतर रजा
 दरमियाने मशाइख हैं मिस्ले कमर
 मेरे अखतर रजा शाह अखतर रजा
 खाली कासा लिये कादरी हैं खड़ा
 भीख कर दो अता शाह अखतर रजा

अज:अनीरे शरीअत मुफ्ती अशफाक हुसैन कादरी देहली

वह है ताजुशरीआ हमारा

अलहे सुन्नत का दुलारा आला हजरत का है प्यारा
 मुफ्ती-ए-आजम ने जिसको संवारा वह है ताजुशरीआ हमारा
 मिस्र में इनकी अजमत का डका बजा फखरे अजहर का एवार्ड इनको मिला
 अहले दानिश ने माना इन्हे पेरवा गोसे आजम के सदके वह मनसब मिला
 इनके दामन में आ जाआ गोसे आजम के हो जाओ
 गोस व ख्वाजा रजा का प्यारा वह है ताजुशरीआ हमारा
 नाम जिनका है अखतर रजा अजहरी देखकर इन को खिलती है दिल की कली
 वह शरीअत की करते हैं बस पैरवी हिन्द में चौक जस्टिस की कुर्सी मिली
 इनकी सूरत भी हंसी है इनकी सिरत भी हंसी हैं
 जिनका फतवा शरीअत की धारा वह है ताजुशरीआ हमारा
 जिसने काबे के अन्दर नमाज है पढ़ी गुस्ले काबा की खिदमत भी अन्जाम दी
 मेरे मुशिद की काबे से इज्जत बढ़ी हासिदों के दिलों में मयी खलबली
 इनकी अजमत को पहचानो इन के मनसब को भी जानो
 अलहे सुन्नत का है जो सहारा वह है ताजुशरीआ हमारा
 गुलशाने रजवियत का जो रैहान है इन पे कुरबान सुन्नी मुसलमान हैं
 मदह खाह अपने मुशिद का नोअमान है मेरे मुशिद का हासिद परैरान है
 इनका कहना दिल से मानो इनको अपना आका जानो
 आला हजरत की आखों का तारा वह है ताजुशरीआ हमारा
 अज:मौलाना अबूनोअमान इसाईल रजवी मिस्बाही बहैली

चशम-ए-फैजे रजा

खुदा आगाह मर्दे बा खुदा अखतर रजा खौ हैं

हकीकत में आशना अखतर रजा खौ हैं

बदल देता है तकदीरें इशारा जिन निगाहों का

यह वह साहिबे नज़र, वह बा सफा अखतर रजा खौ हैं

रब की रमज़े ज़िन्दगी से आशना-ए-अखतर रजा

सर ता पा इश्के मुहम्मद मुस्तफा अखतर रजा

मुफती-ए-आज़म के हैं काइम मकाम वह जानशीन

चशम-ए-फैजे रजा बिलवस्ता अखतर रजा

दिल शिकस्ता दर्द से बीमारे गुम के वास्ते

आप का दर है दर दारुशिशफा अखतर रजा

मेरी जानिब जब हवादिस का बढा सेले गिरौ

आ गया लब पर मेरे बे साख्ता अखतर रजा

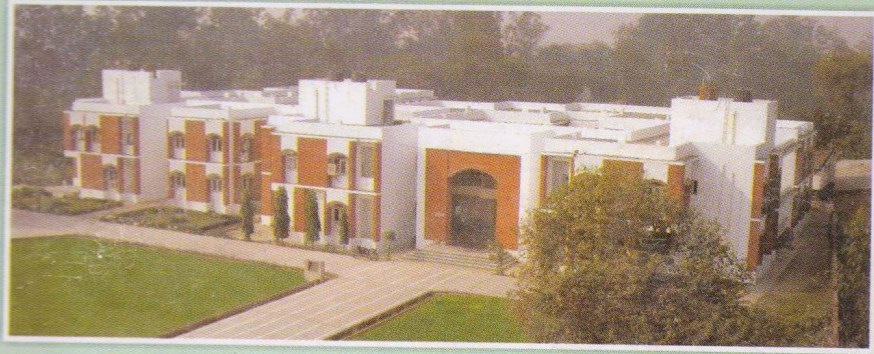
अज़: ज़की परवाज़ रिछा ज़िला बरेली

بانی و سرپرست: قاضی القضاۃ فی الہند تاج الشریعہ جانشین مفتی اعظم ہند حضرت علامہ مفتی الحاج محمد اختر رضا قادری زہری مظاہر العالی

مرکز الدراسات الاسلامیہ جامعۃ الرضا

CENTRE OF ISLAMIC STUDIES JAMIATUR-RAZA

Markaz Nagar, CB Ganj, Bareilly Sharif- 243502 U.P. (India)



تسانیفے ہجور تاجو شریا

ہجرات کی اردو اور ارہی زبان میں لیخی ہرے جوملا
تسانیف کی ترتیب کا کام بہت تہی سے ہو رہا ہے۔ انشا
اللہ کوء ہی ماہ میں دیذاجہب ڈاٹل، امدا کاگج اور
خوبسورت تاباات کے ساٹھ پ کر منجورےام پر آ رہی ہیں۔
خواہش مند ہجرات دیے गए پتے پر رابا کاام करें۔

Published by

ISLAMIC RESEARCH CENTRE

58, Kasgran, Sodagan, Bareilly Sharif U.P.

Mob.: 09837549282, 09897385339, 08923721109

Website: www.alahazratbooks.com • E-mail: mravvi.ravvi@gmail.com









الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ





HAYAT-E-TAJUSHSHARIA PDF BOOK

Created By: Sunni Shehzada Muhammad Ameen Al-Hussaini

& Special Thanks 2
GHULAM-E-TAJUSHSHARIA Sheikh Irshad Ahmed Azhari Qadri

For Compliments
Contact Here:

 +917415560601

 <https://twitter.com/AmeenAlHussaini>

 <https://www.facebook.com/muhammad.alhussaini.7>

Talib-e-Dua
Sunni Shehzada
محمد أمين الحسيني

* ALLAH TA'ALA Ka Bada Karam Hai ke ALLAH TA'ALA Ne Mujhe
APNE PYARE HABEEB TAJDAR E MADINA ﷺ ki Ummat Me Paida Farmaya
Aur Mujhe Uss Jama'at Me Rakha Jo AASHIQ-E-RASOOL ﷺ Hai,
AASHIQ-E-SAHABA O AHLE BAIT Hai, AASHIQ-E-AWLIA Hai,
Aur Yeh AALA HAZRAT Ka Faiz Hai Ke Maine

JANASHEEN-E-HUZUR MUFTI-E-AAZAM AALAM-E-ISLAM WA
NAWASA-E- HUZUR MUFTI-E-AAZAM AALAM-E-ISLAM
HUZUR TAJUSHSHARIA MUFTI MUHAMMAD AKHTAR RAZA KHAN QADRI AZHARI
(AZHARI MIYAN) QAZI-UL-QAZZAT FIL HIND Ki Zindagi Par Likhi Kitab
HAYAT-E-TAJUSHSHARIA Ko PDF BOOK Me Tabdeel Kiya Taake
Wo Hazraat Internet Par Padh Saken Jin tak Yeh Kitab Nahi Pahunch Saki Hai,

Aur Main Sheikh Irshad Ahmed Qadri Bhai Ka Shukr Guzaar Hun
Jinhone Mujhe Yeh Kitab Tohfe Me Di Aur Phir Mujhe Yeh
Khayal Aaya Ke Main Iss Kitab Ko Internet Ke Zariye Tamam
AASHIQ-E-TAJUSHSHARIA Tak Pahuncha Sakoon...!

For Compliments:
My Whatsapp : +91 7415560601
<https://www.facebook.com/muhammad.alhussaini.7>
<https://twitter.com/AmeenAlHussaini>

Dua Ka Talabgaar : Shaykh Muhammad Ameen Al-Hussaini

